वर्ष – 03 अंक – 09 ISSN-2993-4648

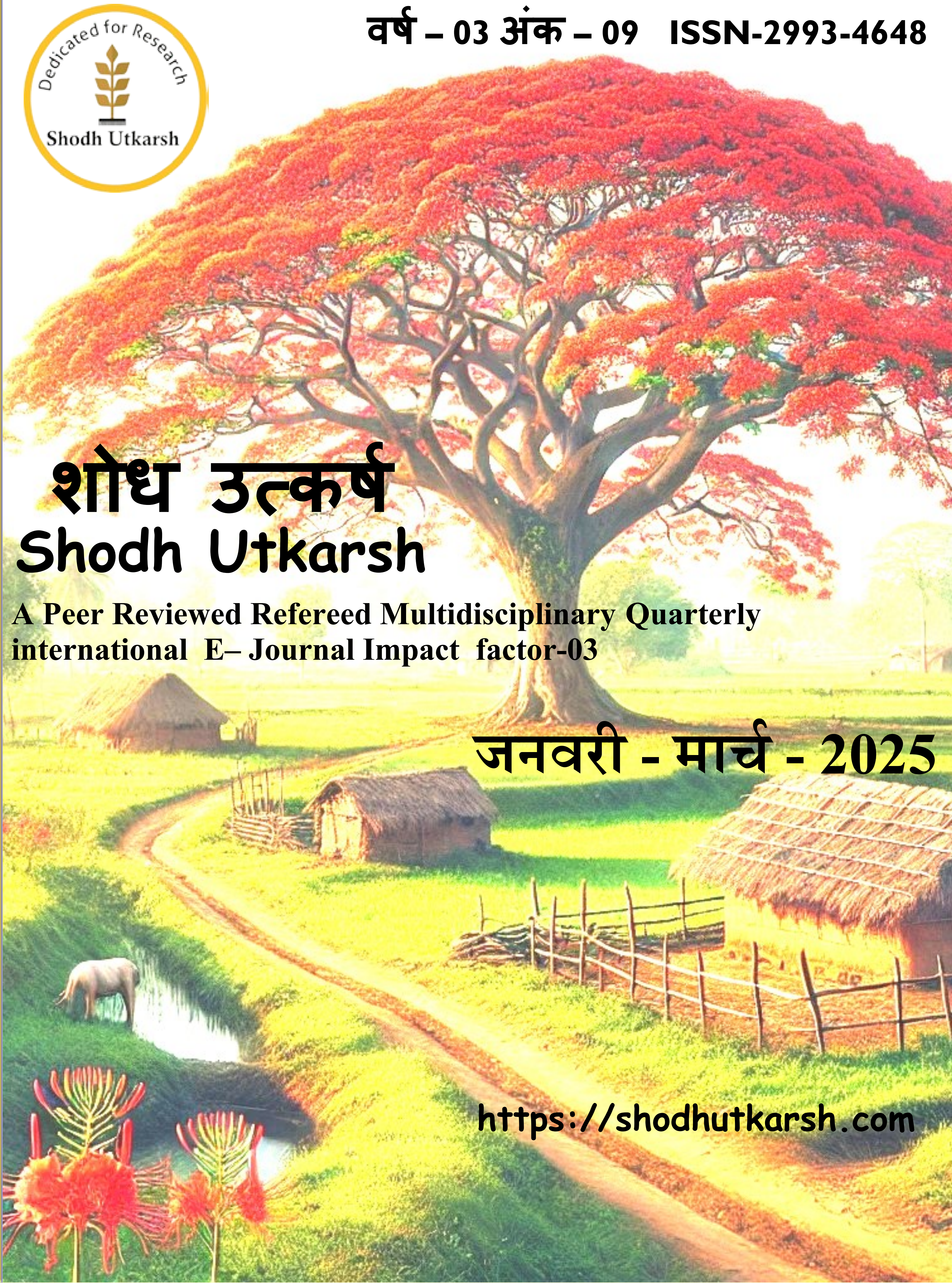

Dedicated for Research

Shodh Utkarsh

# शोध उत्कर्ष
# Shodh Utkarsh

**A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly international E– Journal Impact factor-03**

जनवरी - मार्च - 2025

https://shodhutkarsh.com

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh (RESEARCH ARETE JOURNAL)

# शोध उत्कर्ष
# Shodh Utkarsh

A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly international E- Research Journal

वर्ष-03 अंक - 09 जनवरी - मार्च -2025



## सलाहकार मण्डल (Advisory Board)

**Shri Jai Prakash Pandey**

Director-Department of Education And Literacy, Ministery Of Education, Govt.Of India.

**Prof. Prabha Shankar Shukla**

Vice Chancellor North Eastern Hill University (NEHU) Shillong

**डॉ. कन्हैया त्रिपाठी पूर्व (OSD),महामहिम राष्ट्रपति 'भारत'**

**प्रो. दिनेश कुशवाह,रीवा (म.प्र.)**

**प्रो. राजेश कुमार गर्ग प्रयागराज (उ.प्र.)**

**प्रो. अनुराग मिश्रा द्वारका, नई दिल्ली**

**प्रो. के. एस. नेताम सीधी (म.प्र.)**

**डॉ.एम.जी. एच. जैदी पन्त नगर (उत्तराखण्ड)**

**डॉ.राजकुमार उपाध्याय 'मणि' बठिंडा (पंजाब)**

**डॉ. संगीता मसीह शहडोल (म.प्र.)**

**डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव मोतिहारी विहार**

**डॉ. अनिल कुमार दीक्षित,भोपाल (म.प्र.)**

**श्री संकर्षण मिश्रा ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड**

**प्रो.एम.यू.सिद्दीक़ी सिंगरौली (म.प्र.)**

डॉ. बी.पी. बडोला (हिमांचल प्रदेश)

**डॉ.अजय चौधरी,नागपुर (महारष्ट्र)**

**श्री प्रदीप कुमार- मूल्यांकक केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली**

**डॉ. रेणु सिन्हा,रांची- (झारखंड)**

**डॉ. निशा मुरलीधरन,वड़पलनी- चेन्नई**

**डॉ. अंजलि एस. एर्नाकुलम, (केरल)**

**श्री पांडुरंग एस. जाधव बेंगलुरु, (कर्नाटक)**

### संपादक मंडल

**प्रधान संपादक** -डॉ. एन. पी. प्रजापति **सह संपादक** - प्रो.यूरी बोत्वींकिन तारास शेव्चेंको कीव (युक्रेन), प्रो.सिराजुद्दीन नूर्मतोव (उज़्बेकिस्तान गणराज्य) प्रो. रीनू रानी मिश्रा (उत्तराखंड), डॉ. संतोष कुमार सोनकर अमरकंटक (म.प्र.)प्रो. मोहन लाल 'आर्य' निदेशक एवं डीन IFTM (U.P.) डॉ. बालेन्द्र सिंह यादव, उँचाहार–रायबरेली(उ.प्र.) डॉ.उमाकांत सिंह सिंगरौली (म.प्र.) कैप्टन डॉ.बाबासाहेब माने पुणे (महाराष्ट्र)



**लेख भेजने के लिए :–** Mail-ID-shodh utkasrsh@gmail.com नोट:- पत्रिका में प्रकाशित लेख / शोध आदि में विवाद की स्थिति में लेखक /शोधार्थी स्वयं जिम्मेदार होंगे. पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें:-

**Website:–http:// www.shodhutkarsh.com**

**प्रकाशक :-**

**Radha publications**

**Mail id-**radhapub@gmail.com **फोन** -087505 51515, 9350551515 **Website:-**https://radhapublications.com

**पता :-**4231, 1, Ansari Rd, Delhi Gate, Daryaganj, New Delhi, Delhi, 110002

दलित उत्कर्ष समिति द्वारा प्रकाशित

शोध उत्कर्ष
Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly international Research E-Journal
वर्ष-03 अंक - 09 जनवरी - मार्च -2025

## Table of Content


| S.N. | Title and Name of Author(s) | Page No. |
|---|---|---|
| | **संपादकीय -** | 01 |
| 1. | हिंदी कविताओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव - **डॉ. राजेंद्र घोडे** | 2-3 |
| **2.** | एनसीएफ 2023: स्कूल शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यचर्या क्षेत्र - **विक्की सिंह** | 4-7 |
| **3.** | हिन्दी कहानी लेखन और संजीव - **डॉ. पी.एम.आर. जयंती** | 8-9 |
| **4.** | भारतीय ज्ञान परंपरा में अष्टांग योग के विविध आयाम - **डॉ निकेश कुमार** | 10-11 |
| **5.** | विभूति नारायण राय के उपन्यासों में यथार्थपरकता - **डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय** | 12-14 |
| **6.** | फादर कामिल बुल्के का हिंदी साहित्य में योगदान - **सौरभ शुभम** | 14-15 |
| **7.** | हिंदी साहित्य में समरसता - **शशि प्रकाश पाठक** | 16-18 |
| **8.** | 'श्रृंखला की कड़ियां'निबंध में नारी चेतना - **अंजली कुमारी** | 18-20 |
| **9.** | Comparative Study of Antibacterial Effect of Trigonella Foenum-Graecum, Boswellia Serrata, and Nigella Sativa on Aggregatibacter Actinomycetemcomitans - **Dr. Payal Jaiswal & Dr. Lalita Goyal** | 21-22 |
| **10.** | EXPLORING THE COMPLEX RELATIONSHIP BETWEEN MIGRATION AND WELL-BEING: BENEFITS AND CHALLENGES - **Manish Kumar** | 23-27 |
| **11.** | EXAMINESTRATEGIES FOR PRESERVATION INCLUDING NATURAL PRESERVATIVES TO INCREASE THE LIFESPAN OF FOOD - ***Ashutosh Pathak*** | 27-33 |


***********************************

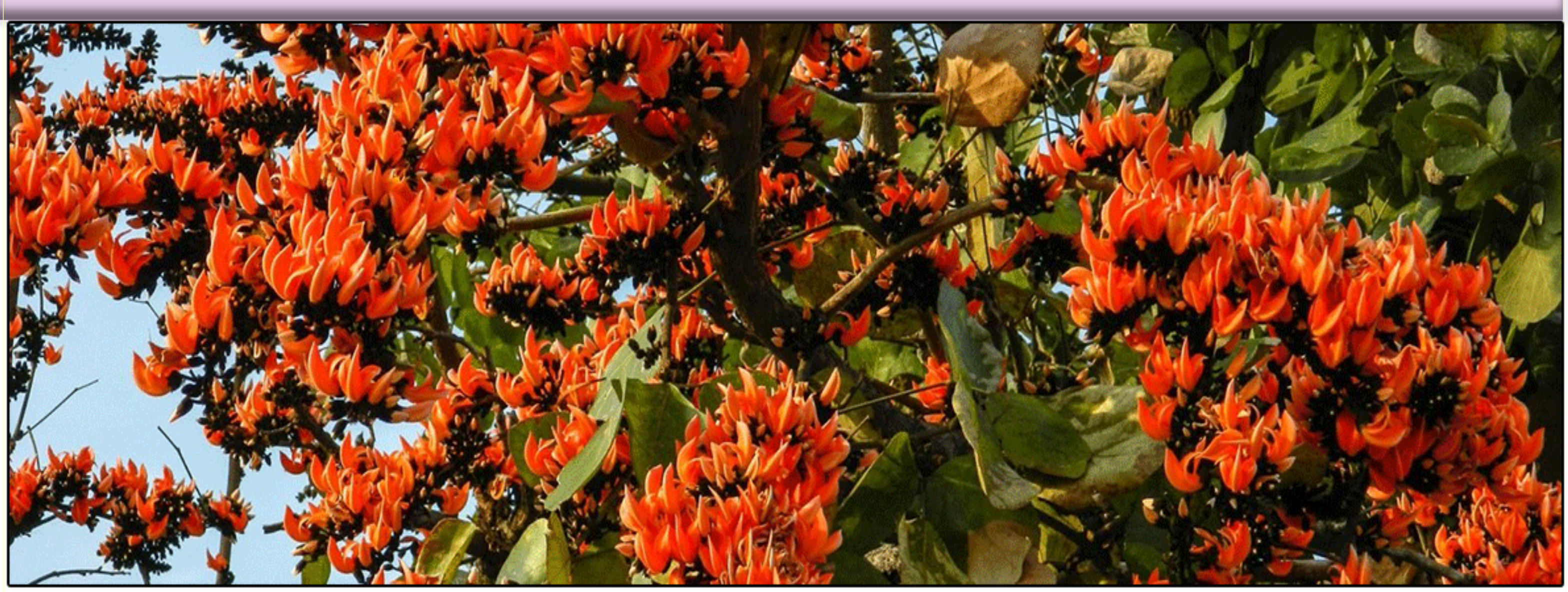

तेहि दुख भए परास निपाते, लोहू बूड़ि उठी परभाते।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

## संपादकीय

वर्तमान समय में ज्ञान और शोध का निरंतर विस्तार हो रहा है। वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति ने न केवल हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को प्रभावित किया है, बल्कि साहित्य, शिक्षा, विज्ञान और चिकित्सा जैसे विविध क्षेत्रों में भी नवीन दृष्टिकोण और शोध की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। 'शोध उत्कर्ष का यह नया अंक इन्हीं विषयों को समाहित करता हुआ एक समृद्ध बौद्धिक विमर्श प्रस्तुत करता है।

हिंदी साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है। वैश्वीकरण के कारण साहित्य की सीमाएँ विस्तृत हुई हैं और विभिन्न भाषाओं के साहित्य में परस्पर संवाद की संभावना बढ़ी है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। डॉ. राजेंद्र घोडे का शोध आलेख इस पर विशेष प्रकाश डालता है कि किस प्रकार वैश्वीकरण ने हिंदी कविता की संवेदना, विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति के तरीकों को प्रभावित किया है। आधुनिक हिंदी कविताओं में वैश्वीकरण के प्रभाव के चलते सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बदलावों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

संजीव समकालीन हिंदी कहानी लेखन के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनके लेखन में समाज के उपेक्षित और संघर्षशील वर्गों की पीड़ा का सजीव चित्रण मिलता है। डॉ. पी.एम.आर. जयंती का शोध पत्र इस बात की गहन पड़ताल करता है कि किस प्रकार संजीव ने अपने साहित्य में सामाजिक यथार्थ, अन्याय, शोषण और संघर्ष को अभिव्यक्ति दी है। उनकी कहानियाँ पाठकों को न केवल झकझोरती हैं, बल्कि उन्हें समाज की गहराइयों में झांकने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

विभूति नारायण राय का उपन्यास साहित्य अपनी यथार्थपरकता के लिए जाना जाता है। डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय का आलेख इस बात पर केंद्रित है कि किस प्रकार राय के उपन्यास भारतीय समाज की जमीनी सच्चाइयों को उभारते हैं। उनका लेखन पुलिस व्यवस्था, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और आम आदमी की त्रासदी को सटीक रूप में चित्रित करता है। उनके उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न आयामों का चित्रण मिलता है, जो पाठकों को सोचने के लिए विवश करता है।

फादर कामिल बुल्के हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण विद्वान रहे हैं। सौरभ शुभम का शोध पत्र उनके योगदान को विस्तार से रेखांकित करता है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन किया, बल्कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अहम भूमिका निभाई। उनकी पुस्तक 'रामकथा: उत्पत्ति और विकास' आज भी हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए संदर्भ ग्रंथ मानी जाती है।

समरसता का तात्पर्य सामाजिक समानता और सौहार्द से है। शशि प्रकाश पाठक का शोध पत्र इस बात को विश्लेषित करता है कि हिंदी साहित्य ने किस प्रकार समरसता के सिद्धांत को अपनाया और समाज में एकता और समानता की भावना को विकसित किया। साहित्य समाज का दर्पण होता है, और इसमें समरसता का भाव दर्शकों को प्रेरित करता है कि वे जाति, धर्म और भाषा की सीमाओं से परे एक समावेशी समाज की रचना करें।

अंजली कुमारी का शोध पत्र अमृतलाल नागर के प्रसिद्ध निबंध 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में नारी चेतना के तत्वों को उद्घाटित करता है। यह निबंध स्त्री स्वाधीनता, उनकी सामाजिक स्थिति और संघर्षों का प्रामाणिक चित्रण करता है। नारीवाद के समकालीन संदर्भ में इस निबंध का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नारी चेतना के विकास की दिशा में मील का पत्थर साबित होता है।

योग भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है। डॉ. निकेश कुमार विभिन्न अंग किस प्रकार व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उत्थान में सहायक होते हैं। योग केवल साधना नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन पद्धति है, जिसे भारतीय ज्ञान परंपरा में अत्यंत महत्व दिया गया है।

चिकित्सा और विज्ञान के क्षेत्र में भी इस अंक में महत्वपूर्ण शोध प्रकाशित किए गए हैं। डॉ. पायल जायसवाल और डॉ. ललिता गोयल का शोध पत्र कुछ प्राकृतिक औषधियों के जीवाणुरोधी प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, आशुतोष पाठक ने खाद्य संरक्षण की प्राकृतिक रणनीतियों पर शोध किया है, जो वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है।

प्रवासन वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। मनीष कुमार का शोध पत्र इस विषय पर गहराई से विचार करता है कि प्रवासन किस प्रकार लोगों के जीवन स्तर, सामाजिक संबंधों और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। प्रवासन के लाभ और चुनौतियों पर संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

**निष्कर्ष:-**

'शोध उत्कर्ष' का यह अंक विभिन्न विषयों पर गहन अनुसंधान प्रस्तुत करता है। यह अंक साहित्य, समाजशास्त्र, शिक्षा, चिकित्सा और विज्ञान के विविध पहलुओं पर केंद्रित है। शोध उत्कर्ष का उद्देश्य गंभीर और मौलिक शोध को प्रोत्साहित करना है ताकि विद्वानों, शोधार्थियों और पाठकों को नवीन दृष्टिकोण और गहन विश्लेषण प्राप्त हो सके।

हम आशा करते हैं कि यह अंक शोध और अकादमिक विमर्श को एक नई दिशा देगा तथा पाठकों को समृद्ध बौद्धिक अनुभव प्रदान करेगा। शोध उत्कर्ष के इस अंक के लिए सभी लेखकों, समीक्षकों और संपादकीय टीम को हार्दिक धन्यवाद।

***************************

दिनांक –31/03/2025

**संपादक मंडल**
शोध उत्कर्ष (Shodh Utkarsh)

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

# हिंदी कविताओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

**डॉ. राजेंद्र घोडे**
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे

वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, राजनीतिक शैक्षिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में बदलाव लाए है। यही बदलाव धीरे-धीरे व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जीवन को बदल रहे हैं। क्योंकि परिवर्तन सृष्टि का नियम है। बहुत से बदलाव चीजो समय, सभ्यता तथा दैनंदिन जीवन में होते रहते हैं। इस बदलाव भरी भूमि को समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं से अभिव्यक्त किया है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से सकारात्मक और नकारात्मक बिंदुओं के निर्माण हो रहे हैं उन्हें कवियों ने कविताओं के माध्यम से उजागर किया है। साहित्य से वैश्वीकरण बाजारवाद, उदारीकरण, विश्वग्राम जैसे अनेक विषयों के अंतर्गत भिन्न-भिन्न पारिस्थितियों को भी मुखरित किया है। दरअसल कविता अपने समय की दस्तावेज होती है, जिसमें समय की गूँज सुनाई देती है। इसी को लेकर भगवत रावल कहते हैं- 'कविता काल निरपेक्ष और समाज निरपेक्ष नहीं होती। वह अपने समय में होती है और अपने समय के निशान उस पर मौजूद होते हैं।'1 पूरे विश्व में जिस परिवर्तन या बदलाव को स्वीकृत किया गया है उसी को कवियोंने रेखांकित किया है। बढ़ते हुए वैश्विकरण में आदमी मोबाईल, ई-मेल, कम्प्यूटर, क्रेडिट कार्ड आदि जीवन केंद्रित वस्तुओं से जुड़ा है। हर एक व्यक्ति का जीवन सुबह से लेकर श्याम तक कई वैश्विक वस्तुओं के आकर्षण में बीतते हुए दिखाई देता है। वे घर बैठे-बैठे इन वस्तुओं से रु-ब-रु होकर अत्यंत शीघ्र गती से उपयोग की कामना चाहते हैं। इसी वजह से वर्तमान में मानव के उपभोग के लिए चौबीसों घंटे बाजार अपना कार्य कर रहे हैं।

आज व्यक्ति वस्तुओं के उपयोग में इतना फँसा हुआ है कि जिस चीज की वह चाह रखता है वह उसे कुछ क्षणों में मिल जाती है। इसलीए हम कह सकते हैं कि आज महानगरों में बाजार विकसित हुए हैं, जिससे न घरो में न पंछी, न कुत्ते न बिल्ली मेहमान आते हैं बल्कि जो आते हैं वह तो केवल वस्तु बेचनेवाले एजंट या वस्तुओं के पार्सल। ऐसी बढ़नेवाली वस्तु केंद्रित वृत्ति से कवि चिंतित होते हुए दिखाई देते हैं।

बाजार ने व्यक्ति को खरीदार तो काया ही है लेकिन उसके दिमों-दिमाग पर भी अधिकार बनाया है। व्यक्ति की हर एक जरूरत को किस रूप में पूरा किया जा सकता है, उसके अनेक पर्याय बाजार में उपलब्ध या खुले किए गए है। वर्तमान में हर वस्तु चीज को बाजार मे अपने नियंत्रण में लिया है। बाजार ने आज लुभावने सपनों से व्यक्ति को चीजों का जरूरतमंद बनाया है। इस नई मनोवृत्ति के प्रति कवयित्री रंजना जायसवाल 'बाजार-एक' कविता के माध्यमले कहती है-

**'पहले वे**
**जरूरत पैदा करते हैं**
**शुरू-शुरू में पूरी भी करते हैं**
**जरूरतें पर आदी बनते ही**
**तटस्थ हो जाते हैं**
**फिर रह जाता है**
**आदमी**
**अभाव में छटपटाता।''2**

इस प्रकार की विचारधारा को बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बढ़ाकर नई-नई आवश्यकताओं को जन्म दिया है, जैसे सुबह नहाने के साबुन से लेकर रात सोने के गुड़ नाईट तक भिन्न-किन जरूरतों को निर्माण किया है। इन आवश्यकताओं के कारण व्यक्ति इन चीजों, वस्तुओं को अपने शरीर का अंग समझने लगा है, जिसके न होने से वह निराश, बेचैन हो उठता है। चीजें व्यक्ति की जरूरतों के अनुसार सेवा प्रदान सेवा प्रदान करती है किंतु इन सेवाओं के अभाव में व्यक्ति स्वयं को हताश महसूस करता है।

वर्तमान मानव जीवन के सभी पहलू केवल यंत्रवत साधनों उपकरणों से जुड़े हुए हैं। इस नई सभ्यता हमें नई उद्भावनाओं का सामना करना पड़ रहा हैं। इस संदर्भ में से कवि भगवत रावत 'बैलगाड़ी' कविता में इसी समस्या को लेकर लिखते हैं-

**''एक दिन अपनी ही चमक-दमक की**
**रफ्तार में परेशान सारे के सारे वाहनों के लिए**
**पृथ्वी पर जगह नहीं रह जाएगी।''3**

मानव जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए भिन्न-भिन्न कार्पोरेट कंपनियों इन उपकरणों साधनों को अधिक मात्रा में को निर्मित कर रहे है। आज कई व्यक्तियों के पास एक से अधिक मोटार गाड़ियो की संख्या दृष्टिगत होती है, ये केवल वैश्वीकरण की देन हैं। इनसे आगे चलकर भविष्य में निर्माण घेवा मुसीबतों को लेकर कवि चिंतनशील बने है। लुभावने सपने दिखाकर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अधिक मुनाफा कमाना चाहती हैं। बाजार में कौन-सी चीज ना रूप में आकर उभरकर आ सकती है, इसका कोई अंदाजा नहीं होता। लेकिन सब मनुष्य उन चीजों के प्रति आकर्षित रहते हैं।

वैज्ञानिकता एवं यांत्रिकता से एक नई विश्व क्रांति का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, ई-मेल, जैसे उपकरणों की उपयुक्तता को लेकर आम आदमी भी गुलाम हो गया है। क्योंकि यह सभी उपकरण आधुनिक मनुष्य की जरूरतें बन गई है। वैज्ञानिकता एवं यांत्रिकता ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना अस्तित्व कायम किया है जैसे कि- व्यापार उद्योग, मनोरंजन, वस्तुएँ, शिक्षा डाक आदि। वैश्वीकरण की वैज्ञानिक एवं यांत्रिक नीतियों से मानव जीवन के लक्ष्य, मूल्य व्यक्तित्व आदि में अभूतपूर्व परिवर्तन होते हुए दिखाई देती है। वैज्ञानिकता एवं यांत्रिकता से नकारात्मक पहलू भी सामने दिखाई देते है। इसको लेकर भी कवि जनता का ध्यान आकर्षित करता चाहते हैं। 'यह भागता शहर' इस कविता के माध्यम से कवयित्री रंजना जायसवाल वास्तविकता प्रकट करती है। वह कहती है-

**यहाँ रोमांच है, रोमांस नहीं**
**देह है, आत्मा नहीं**
**सब कुछ कृत्रिम**
**मशीन से संचालित**
**पेड़-पत्ते और फल-फूल**
**पशु-पक्षी सब**
**यहाँ तक कि आदमी**
**मुश्किल है पहचान असल की**
**नकल ज्यादा वास्तविकता लगती है यहाँ।''4**

मानव की आंतरिक संवेदनाओं की मृत्यु होकर केवल मशीनी जीवन बना है। यांत्रिकला के लाभ में असल की जगह नकल ही वास्तविक लग रही है। विश्व क्रांति के दौर में वैज्ञानिकता और यांत्रिकता के कारण मानव जीवन के लिए जितने लाभ हुए है उतनी हातियाँ भी बढ़ती हुई दिखाई दे रही हैं।

वर्तमान समय में हर एक हर एक क्रिया का काम विज्ञान, तंत्रज्ञान के द्वारा अधिक मात्रा में हो रहा है। हर एक आदमी अपने श्रम, अर्थ, समय की गति पर नियंत्रण करने हेतु इन साधनों का गुलाब बनना पसंद करता है। उसे केवल फल और परिणाम की आवश्यकता है। इसलीए हर पल वह इन तकनीकी साधनों से जुड़ता रहता है। इस स्थिति को लेकर कवि ज्ञानेंद्रपति ’कदम-कदम पर’ इस कविता के माध्यम से यंत्रवत स्थिति के दर्शन को व्यक्त करते हुए कहता है-

**“कितने कदमों का है यह शहर**
**इसका पूरा ज्युग्राफिया है मौजूद**
**चमकते शातिर खस्वाट के भीतर।”[5]**

तकनीकी विज्ञानवादी युग में बड़े-बड़े शहरों को भौगोलिकता से अधिक छोटे छोटे नक्शों में रूपांतरित किया है। आज समुचे विश्व को तकनीकीने सीमित किया है।

विज्ञान और तकनीकी से विध्वंसक और भयानक रूप भी प्रस्तुत होते है। आदमी अधिक से अधिक लाभ लेने हेतु स्वयं के जीवन से खेल रहा है। इस बढ़नेवाली अमानवीयता को लेकर कवि ज्ञानेंद्रपति ’बीज-व्यथा’ कविता में कहता है-

‘रासायनिक खादों और कीटकनाशकों के जहरीले संयत्रों की आयतित तकनीक आती है पीछे-पीछे तुम्हारा घर उजाडकर अपना घर भरनेवाली आयतित तकनीक यहाँ अन्न-जल में जहर भरनेवाली कहर ढानेवाली बगैर कुहराम’[6]

कवि बीज उत्पादन तकनीक के माध्यम से होनेवाले दुष्प्रभाव को अभिव्यक्त करते हैं कि जितनी अधिक मात्रा में हम कृत्रिमता के हथकंडे अपना रहे हैं, उतनी अधिक मात्रा में नई-नई तकनीकों का विस्तार हो रहा है। यह नीति व्यक्ति, समाज और राष्ट्रों को उजाकर अधिक मुनाफे के साथ जुड़ी है। विज्ञान और तकनीक मनुष्य जीवन के सृजनात्मकता और सापेक्षता की पहचान बने हैं लेकिन वर्तमान दौर में बदली हुई मानसिकता में अर्थ, लाभ की शक्ति कार्य कर रही है।

विश्व भर में आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या अधिक तीव्र हुई है। आज हर कोई व्यक्ति स्वार्थ से इतना क्रुर बना है कि वह पृथ्वी और प्रकृति की तमाम चीजों पर अधिकार पाकर उसे प्रदुषित कर रहा है। पर्यावरण के जंगल, पेड़, नदी, पशु, पंछी सभी से मानव अपना खेल खेल रहा है। इस स्थिति को निर्मला पुतुल अपनी कविता ‘बूढ़ी पृथ्वी का दुःख’ के माध्यम से व्यक्त करती है

**‘क्यों होती है**
**तुम्हारे भीतर धमस**
**कटकर गिरता है**
**जब कोई पेड़ धरती पर’[7]**

विकास का आधार लेकर पृथ्वी पर से पेड़ों की बड़ी मात्रा में कटाई हो रही है। पेड़ों से मनुष्य के जीवन के लिए प्राणवायु मिलता है। इसी सवाल को लेकर कवयित्री कहती है कि क्या खुद के ही जीवन से एक तहर से खेलना यह कैसा व्यवहार है। जब पेड़ कट जाता है तो कोई दुःख नहीं होता।

वैश्वीकरण के युग में भौतिक सभ्यता, शहरीकरण के नामपर प्राकृतिक जीवन को तहस-नहस किया जा रहा है। हमारी प्राकृतिक जरूरतों को मिटाया जा रहा है। हमारा जीवन जिन चीजों पर टिका हुआ है वह वर्तमान युग के भौतिक सभ्यता, सहरीकरण हे द्वारा प्रदुषित हो रहा है। भौतिक औद्योगिक क्रांति का गहरा दुष्प्रभाव पर्यावरण पर हुआ है। आज शहरीकरण और भौतिक सभ्यता के लिए इन मशीनीकृत राक्षसों में प्राकृतिक जीवन के सभी पहलुओं को मिटाया है। पर्वत, पहाड़, पशु, पंछी, पेड को क्रसरों और बारूदों के द्वारा उजाड़ा जा रहा है।

समाज में जिस तरह विकास बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है ठीक उसी प्रकार अपराध, भय, घृणा का प्रतिशत भी बढ़ता जा रहा है। आज आदमी का जीवन तनाव, पीड़ा, नैरास्य से भरा हुआ दिखाई दे रहा है। तनाव भरी जिंदगी में जीवन जीते-जीते व्याकन विस्थापित हो रहा है। किसी भी जगह जाए वहाँ पीड़ा का भाव बना रहता है। इस पीड़ा से अपना संसार उठाकर अन्य जगह डेरा बसाते हैं, लेकिन पुनः उस स्थिति का सामना करते-करते वे अपनी खुद की पहचान भी खोते है। इस स्थिति पर मंगलेश डबराल ’दःख’ कविता में दर्शाते है-

**’लोग छोड़कर जाते हैं घर-द्वार**
**अनजान दुनिया में भटकले निरुद्देश्य**
**रोटी कै बदले में बदल देते है**
**अपने नाम और विचार’[8]**

तनाव के बिखराव में आदमी अपनी पहचान खो रहा है। खुदकी पहचान छुपाने के लिए नकली मुखौटे का प्रयोग कर रहा है। इस तनाव भरी जिंदगी में आम आदमी सुख, समाधान के लिए बिखराव भरा जीवन जी रहा है।

अतः हम कह सकते है कि व्यक्ति को वैश्विकरण ने कई सुविधाएँ दी हैं लेकिन उससे व्यक्ति ने जीवन के आनंद को हाशिए पर रख दिया है। भौतिक सुविधाओं की लालसा से वे अपने सेहत स्वास्थ के प्रति उदासीन या लापरवाह दिखाई रहे हैं। व्यक्ति आत्मीय प्रेम के लिए जुझ रहा है। मूल्य परिवर्तित होकर उपभोग के मूल्य बन गए है और सच्ची आत्मीयता, प्रेम, समन्वय के रिश्ते भी अनजान है। शाश्वत होते गए है। वैश्वीकरण की स्थितियों से आम आदमी के अस्तित्व, संघर्ष, वर्तमान दशा और दिशाओं का प्रभाव हिंदी कविताओं में साफ झलकता हुआ दिखाई देता है।

******************

**संदर्भ सूची -**

1.*कवि एकादश*, संपा. लीलाधर मंडलोई एवं अनिल जनविजय, मेघा बुक्स, दिल्ली संस्करण- 2008, पृ.140
2.*जिंदगी के कागज़ पर*, रंजना जायसवाल शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा दिल्ली प्रथम संस्करण 2009, पृ.78
3.*ऐसी कैसी नींद*, भगवत रावत, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2004 पृ.12
4.*जिंदगी के कागज पर*, रंजना जायसवाल शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा दिल्ली प्रथम संस्करण 2009, पृ.80
5.*संशयात्मा*, ज्ञानेंद्रपति, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2004, पृ.33
6.वही, पृ.170
7.*नगाड़े की तरह बनते शब्द*, निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपति इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली युवक संस्करण 2005, पृ.31
8.*आवाज भी एक जगह है*, मंगलेश डबराल, वाणी प्रकाशन शन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2000, पृ.50

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

# एनसीएफ 2023: स्कूल शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यचर्या क्षेत्र

**विक्की सिंह**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
ओमकारानन्द इन्सटीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट एण्ड टेक्नोलॉजी,
ऋषिकेश. मो0: 7668035320

**सारांश -**

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क प्रकाशित चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क ढांचे में से एक है। 1975, 1988, 2000 और 2005 में। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा NCF2023 पूरे भारत में पाठ्यक्रम: पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण प्रथाओं को डिजाइन करने के लिये एक व्यापक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करता है। NCF2023 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक अभिन्न अंग है, जिसका उद्देश्य शिक्षा के लिये समग्र समावेशी और बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है। यह नवीनतम ढांचा NCF 2023 में निर्धारित मूलभूत सिद्वान्तों पर आधारित है, जिसका विस्तार 3 से 18 वर्ष की आयु तक स्कूल शिक्षा के सभी चरणों को कवर करने के लिये किया गया है।

मेरा मानना है कि हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शिक्षा सुधार के सिद्वान्तों को पहली बार श्री अरबिन्दो ने 100 साल पहले राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पर अपने निबन्धों में व्यक्त किया था, जिसकी परिणति राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा तैयार की गई पद्धति में हुई है, जिसे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSC) द्वारा अपनाया गया है, और अब राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जा रहा है। NCF के रूप में जाना जाता है। यह दस्तावेज शिक्षा के सिद्वान्त, जो यह बताते हैं, दुनिया के कई स्कूलों में आज प्रचलित सबसे प्रगतिशील बाल-केन्द्रित शैक्षिक विचारों और रणनीतियों को मूर्त रूप देते हैं और आरम्भिक दशकों में श्री अरबिन्दो द्वारा व्यक्त अन्त दृष्टि की व्यापक प्रकृति का वर्णन करते हैं और 20वीं शताब्दी के 40 और 50 के दशक में माता द्वारा उनके मौलिक विचार प्रगतिशील शिक्षा सुधार के मानदंड बन गये हैं। इस संक्षिप्त निबन्ध का उद्देश्य इस उल्लेखनीय उपलब्धि की संक्षिप्तता को प्रदर्शित करना है।

की वर्ड - एनसीएफ 2023, स्कूल शिक्षा, एनईपी 2020, पाठ्यक्रम ।

**बीज शब्द:**NCF 2023, स्कूल शिक्षा,पाठ्यचर्या रूपरेखा,बहु-विषयक शिक्षा,समग्र शिक्षा,ज्ञान, क्षमता,मूल्य,शिक्षार्थी-केन्द्रित दृष्टिकोण,आलोचनात्मक सोच,समावेशी शिक्षा,प्रयोगात्मक अधिगम,तकनीकी एकीकरण,मूल्यांकन प्रणाली,शिक्षकों का व्यावसायिक विकास,बोर्ड परीक्षाएँ,व्यावसायिक शिक्षा,शारीरिक शिक्षा,कला एवं संस्कृति,भाषा शिक्षा,

**प्रस्तावना -**

भारतीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा 06 अप्रैल 2023 को जारी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा NCF 2023 School Education प्रथम ड्राफ्ट जारी किया गया था, जिसे सभी विद्वतजनों के सुझाव लेने के लिये जारी किया गया था। यह दस्तावेज भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में काफी चर्चा एवं कौतूहल का विषय रहा है। इसके पूर्व 2022 में शिक्षा के आधारभूत चरण के लिये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा जारी हुई थी। यह दोनों ही फ्रेमवर्क राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित है। NCF 2023 School Education का उद्देश्य स्कूली शिक्षा के छात्रों के सीखने और शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके में एक बड़ा बदलाव लाना है।

NCF 2023 School Education यह फ्रेमवर्क, जो देश में स्कूली शिक्षा के लिये एक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करता है, जिसका उद्देश्य बच्चों में सोच, रचनात्मकता और समस्या को सुलझाने के कौशल को विकसित करने पर जोर देना है। इसे गेम -चेंजर के रूप में सराहा जा रहा है। माना जा रहा है कि यह फ्रेमवर्क भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदल सकता है। यह रूपरेखा एक शिक्षार्थी-केन्द्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देती है जो छात्रों की विविध आवश्यकताओं और हितों को ध्यान में रखता है। यह शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के महत्व पर भी जोर देता है। हालांकि NCF2023 को लागू करने की व्यवहार्यता और शिक्षकों के लिये पर्याप्त संसाधनों और प्रशिक्षण की आवश्यकता के बारे में भी चिन्ताएँ हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हम देखेंगे कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को उन्नत करने के लिये इस फ्रेमवर्क में क्या-क्या प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही स्कूली शिक्षा पर NCF 2023 के सम्भावित प्रभाव आने वाली चुनौतियों का पता लगाएँगे।

**अध्ययन के उद्देश्य -**

1.स्कूल शिक्षा के संबंध में NCF 2023 के विजन का अध्ययन करना।
2.विद्यमान स्कूल शिक्षा में पाठ्यचर्या संबंधी दोषों की समीक्षा करना।
3.स्कूल शिक्षा के लिये छब्थ् 2023 द्वारा सुझाए गए पाठ्यचर्या निवेश की समीक्षा और चर्चा करना।
4.NCF 2023 के मार्ग में आने वाली बाधाओं पर चर्चा करना।
5.इन बाधाओं को हल करने के लिये समाधान पर चर्चा करना।
6.NCF 2023 के पहलुओं पर सुझाव देना।

**कार्य प्रणाली -**

वर्तमान पेपर एक दस्तावेजी अध्ययन और प्रकृति गुणात्मक और सैद्वान्तिक शोध है। शोधार्थी द्वारा सामग्री विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया था। यह शोध कार्य मुख्य रूप से आधिकारिक दस्तावेजी साक्ष्यों और पुस्तकों, ई-पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, वेबसाइटों, विभिन्न संगठनों की रिपोर्टों, इंटरनेट ब्लॉगों और लिखित दस्तावेजों जैसे सूचना के विभिन्न स्रोतों पर आधारित है।

**NCF 2023 का मुख्य उद्देश्य -**

इस NCF 2023 का बड़ा उद्देश्य भारत के विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को सकारात्मक रूप से संवर्धित करने में सहायता करना है, जैसा कि NCF2020 में कहा गया है, जिसे पाठ्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तनों के माध्यम से किया जा सकेगा।

सकारात्मक बदलाव से आशय है कि यह बदलाव केवल विचारों में ही नहीं बल्कि शिक्षा में व्याप्त दोषपूर्ण अभ्यास में बदलाव लाना है। क्योंकि 'पाठ्यक्रम' शब्द विद्यार्थी के विद्यालय में कुल अनुभवों को संक्षेप में बाँधता है और 'अभ्यास' केवल पाठ्यक्रम सामग्री और शिक्षण-प्रणाली के ही सन्दर्भ में नहीं होता, बल्कि विद्यालय के पर्यावरण और संस्कृति को भी शामिल करता है।

समाज का विजन और शिक्षा का विजन राष्ट्रीय शिक्षा नीति का हिस्सा है जबकि इस विजन एवं शिक्षा का विजन राष्ट्रीय शिक्षा नीति का हिस्सा हैं, जबकि इस दरदर्शिता को प्राप्त करने के लिये हमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में स्कूली शिक्षा का उद्देश्य, वांछनीय मूल्य और स्वभाव, क्षमताएँ और ज्ञान, पाठ्यचर्या के क्षेत्र, संस्कृति, प्रक्रियाएँ

सभी को NCF में विस्तार से विचार पड़त है। इस लिहाज से NCF 2023 इसे पूरा करता है।

**स्कूली शिक्षा का उद्देश्य -** NCF 2020 में जो शिक्षा का दृष्टिकोण रखा गया है, उसे स्कूली शिक्षा द्वारा व्यक्तियों में वांछनीय मूल्यों, क्षमताओं और ज्ञान विकसित करके प्राप्त किया जा सकता है पर उसके लिये हमें ज्ञान, क्षमता, मूल्य जैसे शब्दों को समझना होगा।

**1.ज्ञान:** इस दस्तावेज के अनुसार ज्ञान सिर्फ यह जानना भर नहीं है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है बल्कि इस तथ्यों के सत्य होने के बारे में तर्क करने की क्षमता है। ज्ञान तर्कसंगत विचार करने और उसमें कार्यवाही करने में सक्षम बनाता है।

**2.क्षमताएँ:** क्षमताएँ जैसे-जांच करना (अवलोकन, साक्ष्यों के संग्रह, विश्लेषण, संश्लेषण), संचार (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना), समस्या -समाधान एवं तार्किक तर्क, सौंदर्य एवं सांस्कृतिक क्षमता, स्वास्थ्य, जीविका एवं कार्य के लिये क्षमताएँ, सामाजिक जुड़ाव के लिये क्षमताएँ जैसे-सहयोग, टीम वर्क।

**3.मूल्य स्वभाव:** नैतिक मूल्य जैसे-सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सभी के लिये सम्मान, लोकतान्त्रिक मूल्य आदि स्वभाव-सकारात्मक कार्य नीति, जिज्ञासा-आश्चर्य, भारत और गर्व।

NCF 2020 में प्रतिमान बदलाव जो छब्थ् का मार्गदर्शन करते हैं - NCF2020 स्कूली शिक्षा में तीन आदर्श बदलावों की कल्पना करता है जो छब्थ् का मार्गदर्शन करते हैं -

1.अधिक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा की ओर परिवर्तन।
2.रटने की बजाय आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच पर जोर देना।
3.एक नई पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना में परिवर्तन।

NCF 2023 में प्रमुख नवीनीकरण

**1.बहु-विषयक** और समग्र शिक्षा: NCF 2023 एक बहु-विषयक दृष्टिकोण पर जोर देता है, जो छात्रों को धाराओं के बीच कठोर अलगाव के बिना विभिन्न विषयों का पता लगाने के लिये प्रोत्साहित करता है।

**2.लचीलापन और विकल्प:** नया ढाँचा विषय चयन में अधिक लचीलापन और विकल्प प्रदान करता है, विशेष रूप से ग्रेड 11 और 12 के छात्रों के लिये।

**3.व्यावसायिक शिक्षा पर बढ़ा हुआ फोकस:** प्रारम्भिक चरण से व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण का उद्देश्य छात्रों को व्यावहारिक कौशल से समृद्ध करना है।

**4.संशोधित परीक्षा प्रणाली :** तनाव को कम करने और सीखने के परिणामों में सुधार के लिये सेमेस्टर प्रणाली और मॉड्यूलर बोर्ड परीक्षाओं की शुरूआत।

**5.समग्र शिक्षा:** प्रारम्भिक चरण में अनुभवात्मक शिक्षा, कला और व्यवसाय शिक्षा को एकीकृत करने पर ध्यान केन्द्रित करता है।

उपरोक्त को यथार्थ रूप देने के लिये यह फ्रेमवर्क निम्नलिखित महत्वपूर्ण पक्षों को शामिल करने की सिफारिश करता है -

तर्कसंगत विचार और स्वायत्तता
स्वास्थ्य और तंदरूस्ती
लोकतान्त्रित भागीदारी
आर्थिक भागीदारी
सांस्कृतिक एवं सामाजिक भागीदारी

पाठ्यचर्या के क्षेत्र - NCF2023 स्कूल शिक्षा में मुख्य रूप से 8 क्षेत्रों का उल्लेख करती है, जो इस प्रकार हैं -

1.भाषा: जो प्रभावी संचार को संभव बनाती है तथा इसका उपयोग तर्क और आलोचनात्मक सोच के साथ निकटता से जुड़ी हुई है।
2.गणित: जो समस्या समाधान और तार्किक क्षमता विकसित करे।
3.विज्ञान: जो प्राकृतिक दुनिया को समझने में मदद करती है। तर्कसंगत सोच व वैज्ञानिक सोच का विकास करना।
4.सामाजिक विज्ञान: यह शिक्षा सामाजिक जीवन को समझने में मदद करती है जो छात्रों को प्रभावी लोकतान्त्रिक प्रक्रिया में सक्षम बनाती है।
5.कला: कलाओं के साथ जुड़ने से हमारी रचनात्मक क्षमता में इजाफा होता है तथा सांस्कृतिक संवेदनाओं का विकास होता है।
6.अन्तः विषयक क्षेत्र: इसकी सबसे बड़ी विशेषता सोच एवं समस्या समाधान की क्षमता विकसित होने में है।
7.शारीरिक शिक्षा: इस पाठ्यचर्या के अनुसार खेलों में संलग्नता से महत्वपूर्ण नैतिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों का विकास होता है।
8.व्यावसायिक शिक्षा: जिसका उद्देश्य जीविका और कार्य और आर्थिक भागीदारी के लिये क्षमता का विकास करना।

NCF2023 का महत्वपूर्ण पक्ष -

**1.समग्र विकास:**

NCF फ्रेमवर्क छात्रों के शारीरिक, भावात्मक, सामाजिक एवं मानसिक सम्पन्नता के विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है। यह फ्रेमवर्क मान्यता देता है कि शिक्षा केवल अकादमिक सफलता के बारे में ही नहीं होती है, बल्कि यह छात्र के सम्पूर्ण विकास के बारे में भी होती है और इसे प्राप्त करने के लिये यह फ्रेमवर्क सुझाता है कि शारीरिक फिटनेस, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों को स्कूल में शामिल करे।

**2.प्रयोगात्मक सीखना:**

अनुभवजन्य अधिगम में छात्रों से सीखने के अनुभव शामिल होते हैं जो छात्रों को कक्षाओं में सीखी गई बातों को वास्तविक दुनिया की स्थितियों में लागू करने की अनुमति देते हैं। इस प्रकार की शिक्षा छात्रों को विषयवस्तु की गहरी समझ विकसित करने और जानकारी को लम्बे समय तक बनाये रखने की अनुमति देती है। इसके लिये Project -Base-Learning क्षेत्र भ्रमण तथा अन्य गतिविधियों को कक्षा शिक्षण का अंग बनाना होगा।

**3.तकनीकी का समावेश:**

NCF 2023 School Education राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को पहचानती है और शिक्षण अधिगम में तकनीकी का समावेश करती है।

**4.NCF 2023 का चरण डिजाइन:**

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा-निर्देशों का पालन करती है और स्कूली पाठ्यक्रम को चार चरणों में विभाजित करती हैं। ये चरण हैं -

1.आधारभूत चरण: (3 to 8)
2.प्रारम्भिक चरण ; (8 to 11)
3.मध्य चरण : (11 to 14)
4.माध्यमिक चरण (Phase 1 - 9 and 10 grades, Phase 2 - 11 to 12,
Age 14 to 18 Years)

**5.मूल्याँकन और बोर्ड परीक्षाएँ:**

छात्रों को सार्थक और चुनौतीपूर्ण मूल्याँकन के माध्यम से उच्च स्तरीय सोच कौशल विकसित करने के अवसर मिलने चाहिए।

निम्नलिखित तीन समूहों में से कम से कम दो से छात्रों को चार विषय (पाँचवा विषय वैकल्पिक के साथ) चुनने होंगे:

समूह-1भाषाएँ
समूह-2कला, शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और कल्याण, व्यावसायिक शिक्षा
समूह-3सामाजिक विज्ञान, अंत विषय क्षेत्र
समूह-4गणित, कम्प्यूटेशन सोच, विज्ञान

NCF 2023 के मुख्य सिद्वान्त -
1.शिक्षार्थी-केन्द्रित शिक्षा
2.समग्र विकास
3.समावेशिता
4.रचनावाद
5.आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान
6.आधारभूत शिक्षा पर जोर
7.जीवन कौशल

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के कार्यान्वयन के लिये प्रमुख 4 रणनीतियों पर आधारित है -
1-शैक्षणिक विकास
2-व्यक्तिगत शिक्षा
3-डिजिटल प्रौद्योगिकी का अनुकूलन
4-शिक्षकों का व्यावसायिक विकास

**NCF2023 कैसे बदलेगी शिक्षा प्रणाली -**

साल 2020 में नई शिक्षा नीति का प्रस्ताव पास हुआ था, इसे तुरन्त ही स्कूल व कॉलेज शिक्षा में लागू किया जाने लगा। इससे भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव देखने को मिले। अब NCF यानी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के ड्राफ्ट में एजुकेशन सिस्टम में बड़े बदलाव की जानकारी दी गई है। अब बच्चों को सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं दिया जायेगा। छब्थ् ड्राफ्ट में प्री-प्राइमरी से लेकर 12वीं तक की शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलावों का जिक्र है। इसमें स्किल व प्रयोगात्मक शिक्षा पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया गया है।

29 अप्रैल 2022 को श्री धर्मेन्द्र प्रधान (केन्द्रीय शिक्षा मंत्री, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरू में आयोजित एक समारोह में) द्वारा एक दस्तावेज जारी किया गया, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया: ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'दर्शन' है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 'मार्ग' है और यह दस्तावेज 21वीं सदी की बदलती मांगों को पूरा करने और भविष्य पर सकारात्मक प्रभाव डालने वाला 'संविधान' है।''

NCF 2023 भारत में शिक्षा के लिये एक नई मार्गदर्शिका की तरह है जो बच्चों को अधिक सीखने का आनंद लेने और सोचने में बेहतर और रचनात्मक होने पर ध्यान केन्द्रित करता है।

प्री प्राइमरी व प्राइमरी स्तर पर क्या बदलाव होंगे ? -

प्री-प्राइमरी स्तर को फाउंडेशनल लेवल भी कहा जाता है। इसमें 3 से 8 साल तक की उम्र के बच्चे होते हैं। नयी शिक्षा प्रणाली में इन बच्चों को पढ़ाने के लिये खेल आधारित शिक्षा पर जोर दिया जायेगा। प्री-स्कूल से दूसरी कक्षा तक इसी विधि से पढ़ाई होगी। बच्चों को पढ़ाने के लिये खिलौने, पहेलियों जैसी विधि पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा। तीसरी, चौथी और पाँचवी कक्षा के बच्चों को पढ़ाने के लिये भाषा और गणित की पुस्तकों का इस्तेमाल किया जायेगा। यहाँ भी गतिविधियों और खोज आधारित शिक्षा पर जोर दिया जायेगा। माध्यमिक स्तर यानि छठी, सातवीं और आठवीं कक्षा के बच्चों के पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किया जायेगा।

सेकेंडरी स्टेज पर क्या बदलाव किये जायेंगे (9वीं-10वीं) -

9वीं और 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों को 8 सह-पाठ्यक्रम क्षेत्र के तहत 16 विषयों की पढ़ाई करनी होगी। सुझाये गये पाठ्यक्रम क्षेत्र में मानविकी विषय (जिसमें भाषायें शामिल हैं ) गणित और कम्प्यूटर, वोकेशन शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, कला, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और अन्तरानुशासनिक विषय शामिल हैं। विद्यार्थियों को आठ बोर्ड पेपर देने होंगे। 10वीं के अन्तिम सर्टिफिकेट हेतु 2 वर्ष का प्रदर्शन देखा जायेगा।

**उच्च माध्यमिक शिक्षा (11वीं-12वीं) पर क्या बदलाव किए -**

12वीं कक्षा के विद्यार्थी कॉलेज की तरह सेमेस्टर प्रणाली के हिसाब से पढ़ाई करेंगे। विद्यार्थी को 8 पाठ्य-सहगामी क्षेत्र से कोर्स चुनने का विकल्प मिलेगा। फिलहाल 12वीं में पाँच विषय होते हैं। अभी तक विद्यार्थियों के पास कोई अन्य स्ट्रीम के विषय पढ़ने का विकल्प नहीं होता है लेकिन नयी प्रणाली में वह भौतिक विज्ञान के साथ इतिहास की पढ़ाई भी कर सकेंगे।

**कब से लागू होगी नयी शिक्षा प्रणाली-**

सरकार ने हाल ही में बदले गये छब्थ् के आधार पर नई किताबों का ऐलान किया है। शैक्षिक सत्र 2024-25 में नए पाठ्यक्रम, नई शिक्षा प्रणाली और नई किताबों से पढ़ाई की शुरूआत की जायेगी। हालांकि, अभी तक परीक्षा प्रणाली में बदलाव, मूल्याँकन और विषयों को लेकर नई जानकारी नहीं दी गई है। शिक्षकों, अभिभावकों व छात्र-छात्राओं को सलाह दी जाती है कि वह शिक्षा प्रणाली में हो रहे मुख्य बदलावों पर अपनी दृष्टि रखे।

कक्षा की भी बदलेगी सूरत - मौजूदा दौर में छात्र कक्षा में श्यामपट्ट और शिक्षक की तरफ देखते हुए बैठते हैं। NCF ड्राफ्ट 2023 में सुझाव दिया गया है कि बच्चों को अर्द्धवृत्त (Semi-Circles); यानी आधी गोलाई में बिठाना चाहिए। उन्हें समूह में बिठाने की व्यवस्था भी की जा सकती है। सभी विद्यार्थी पढ़ाई में बराबर का भाग लें।

**रचनात्मक होगी स्कूल प्रार्थना सभा या असेंबली -**

NCF ड्राफ्ट में स्कूल प्रार्थना सभा के तरीके में बदलाव की बात भी है। इसके अनुसार अगर इस समय का सही तरीके से उपयोग किया जाए तो बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। स्कूल सभा को विद्यार्थियों के लिये उपयोगी और रचनात्मक होना चाहिए। वहाँ उनका समय खराब नहीं होना चाहिए। सभा या प्रार्थना सभा में कोशिश करनी चाहिए कि बच्चों को कुछ नया सीखने का अवसर मिले।

स्कूल ड्रेस और फर्नीचर में भी होगा बदलाव -

NCFमें कहा गया है कि स्कूल ड्रेस के रंग और डिजाइन को चुनते वक्त कुछ खास बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। स्कूल अपने हिसाब से पारम्परिक, मॉर्डन या लिंग के प्रति तटस्थ यूनिफार्म चुन सकते हैं। कई स्कूलों में अभी भी बच्चे जमीन पर बैठ कर पढ़ाई करते हैं। बच्चों को चादर पर बिठाने व शिक्षक के कुर्सी पर बैठने की परम्परा को भी खत्म किया जायेगा। साथ ही प्रिंसिपल को किसी खास कप में चाय सर्व करने की परम्परा भी बदली जायेगी।

**संस्कृति से भी जुड़ेंगे बच्चे -**

छब्थ् में स्पष्ट कहा गया है कि बच्चों को भारत के गौरवशाली अतीत और इसकी समृद्ध विविधता, भौगोलिक स्थिति और संस्कृति से अवगत करवाना होगा। इससे बच्चे देश के इतिहास, कला और संस्कृति से जुड़ाव महसूस कर सकेंगे। विद्यार्थी को भारत के प्राचीन, मध्यकालीन और मॉर्डन समय के लोकतान्त्रिक मूल्यों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। छब्थ् में त्रि-भाषा सूत्र पर भी जोर दिया गया है।

NCF2023 की मुख्य विशेषतायें -

**राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 की कुछ मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं -** NCF2023 प्रारम्भिक बचपन देखभाल और शिक्षा EC-CE पर महत्वपूर्ण जोर देता है। साक्षरता और संख्यात्मकता में एक मजबूत नींव रखता है।

यह फोकस बच्चों की समझ और भविष्य की सीखने की क्षमताओं को बढ़ाने के लिये बनाया गया है।

NCF2023 सभी बच्चों को शीर्ष स्तर की शिक्षा प्रदान करने के महत्व को रेखांकित करता है। यह हमारे देश के संविधान में उल्लिखित समतामूलक, समावेशी और विविधतापूर्ण समाज को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण के अनुरूप है। यह ढाँचा NEP 2020 द्वारा प्रस्तावित 5+ 3 +3 + 4 संरचना के अनुरूप है जो शिक्षा को चार चरणों में व्यवस्थित करता है।

**आधारभूत चरण (आयु 3-8) -**

इस चरण में आंगनबाड़ी प्री-स्कूल (3 वर्ष ) और उसके बाद प्राथमिक विद्यालय (ग्रेड 1-2, आयु 6-8 को कवर करते हुए) शामिल हैं। प्रारम्भिक चरण (आयु 8-11): इसमें ग्रेड 6-8 को कवर किया जाता है। माध्यमिक चरण (आयु 14-18) दो चरणों में विभाजित-पहले चरण में ग्रेड व 10 और दूसरे चरण में ग्रेड 11 व 12

बहु विषयक, समग्र और एकीकृत शिक्षा।

माध्यमिक चरण में लचीलापन और विकल्प।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 का उद्देश्य शिक्षण पद्धति सहित पाठ्यक्रम में सकारात्मक बदलावों के माध्यम से भारत की स्कूल शिक्षा प्रणाली को सकारात्मक रूप से बदलाने में मदद करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023, योग्यताएँ सीधे पाठ्यक्रम लक्ष्य से प्राप्त होती हैं और प्रत्येक चरण के अंत तक प्राप्त होने की उम्मीद है। स्कूली शिक्षा के प्रत्येक चरण के अंत में योगात्मक मूल्याँकन इन योग्यताओं पर आधारित होना चाहिए।

विभिन्न प्रकार की ऑडियो और लिखित सामग्री के साथ जुड़कर तर्क और कौशल विकसित करने के लिये भाषा का उपयोग करता है।

छात्र पढ़ते व सुनते समय अपने स्वयं के भावनात्मक पूर्वाग्रहों को पहचानते हैं और भाषण तथा लेखन में आधार और निष्कर्षों के बीच तार्किक संबंध बनाते हैं।

अच्छी तरह से डिजाइन की गई कक्षा में चल रहे मूल्याँकन को अवलोकित अनुसूची, बच्चों के पोर्टफोलियो, सरल भाषा, समग्र प्रगति कार्ड और प्रत्येक योग्यता के लिये रूब्रिक्स के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।

**राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 पर निष्कर्ष -**

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 भारत में अधिक लचीले, शिक्षार्थी केन्द्रित और समावेशी शैक्षिक प्रतिमान की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिन्हित करता है। इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को आज की दुनिया की पेचीदगियों को प्रभावी ढंग से समझने के लिये आवश्यक कौशल और ज्ञान से सशक्त बनाना है। यह रूपरेखा व्यापक विकास, आलोचनात्मक सोच और समावेशिता को मौलिक शैक्षिक सिद्वान्तों के रूप में बढ़ावा देती है।

NCF 2023 कक्षा-12 के लिये सेमेस्टर प्रणाली का प्रस्ताव करता है जो कि एक उत्तम विचार है। इससे छात्रों में परीक्षा को लेकर तनाव कम होगा। बच्चे अपनी रूचि के अनुसार कोई भी विषय चुन सकते हैं। यह बच्चों के सीखने का दायरा बढ़ायेगा।

NCF2023 भारतीय स्कूली शिक्षा के लिये एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो सकता है जो छात्रों को एक रूचिकर और सक्रिय शिक्षा का अनुभव प्रदान करने का प्रयास करता है। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य छात्रों के सम्पूर्ण विकास को बढ़ावा देना है जिससे उनका अकादमिक प्रदर्शन सुधर सकता है और सीखने में उत्साह बढ़ जाता है।

फ्रेमवर्क 2023 शिक्षा प्रणाली को शारीरिक, भावात्मक, सामाजिक और ज्ञानात्मक क्षेत्रों पर जोर देने के माध्यम से छात्रों के समृद्ध विकास को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है। यह न केवल शिक्षा को एक ज्ञान अर्जित करने का साधन मानता है बल्कि इसे छात्र के सम्पूर्ण विकास के लिये आवश्यक मानता है।

फ्रेमवर्क 2023 का मुख्य उद्देश्य छात्रों को सक्रिय शिक्षा का अनुभव करने में मदद करता है जिससे उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में रूचि पैदा हो सके और उन्हें अपनी व्यावसायिक और व्यक्तिगत रूप से सफलता प्राप्त करने हेतु तैयार कर सके।

NCF2023 के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में किया जा रहा बदलाव न केवल छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देगा बल्कि यह भी तकनीकी प्रगति, नैतिक मूल्यों की समझ और राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करेगा। यह छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी और उच्च शिक्षा के लिये भी तैयार कर सकता है।

अतः इस प्रकार NCF2023 भारत में स्कूल शिक्षा हेतु एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है जो छात्रों को सक्रिय, सहज और सामर्थ्यवान शिक्षा का लाभ पहुँचाने का प्रयास करता है।

****************

**सन्दर्भ ग्रंथ -**


1. hindi.news 18.com *"NCF 2023 Draft"*
2. Pgtprime.com
3. Rajput JS.Waliak. Teacher Education
4. Bernad etle Robinson, Colin Latchem, Teacher Education through Open and Distance Learning, Rout ledge, 2003
5. Singh, Sundaram, Teacher Education in India
6. (2020), *National Education Policy*. New Delhi : Ministry of Education
7. https : // en. wikipiedia.org/wiki/Nati-policy-en-education
8. Arora, G.L. (1984) : Reflection on Curriculum, New Delhi, NCERT
9. Arora, G.L. (1988) : Curriculum and Quality in Education, New Delhi, NCERT
10. Ministry of Education and Social Welfare (1977) : *Report of the Review Committee on the Curriculum for the Ten-Year school,* New Delhi, ME & SW, Govt. of India
11. NCERT (1998) : The Primary years : *Towards a curriculum framework (Part-1),* New Delhi, NCERT
12. NCERT (1999) : The Primary years : *Towards a curriculum framework (Part-II),* New Delhi, NCERT
13. Ministry of Education (2019). *Draft National Education Policy 2019.*https ://www.education.gov.in/sites/upload-files/mhrd/files/draft-NEP-2019-EN-Revised.pdf

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

# हिन्दी कहानी लेखन और संजीव

**डॉ. पी.एम.आर. जयंती**
हिंदी में प्राध्यापक
एसकेआर और एसकेआर सरकार। महिलाओं के लिए कॉलेज (ए) कडप्पा.

कहानी की कहानी अत्यंत प्राचीन है। कहानी का संबंध मानव के आरंभ के साथ जोड़ा जाता है। मनुष्य के जन्म और विकास के साथ ही कहानी का जन्म और विकास भी होता गया। जब से मनुष्य भाषा का प्रयोग करने लगा तब से कहानी कहने- सुनने की प्रवृत्ति चली आ रही है। कहानी आरंभिक काल से ही मनोरंजन का साधन रही। इसके माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जाती थी। उदात्त मानवीय मूल्यों का विकास असानी से किया जा सकता है। कहानी बड़ी सरलता से लोगों की समझ में आती है और उनको विस्तृत रूप से प्रभावित भी करती है। हिन्दी कहानी साहित्य के पूर्व रूप को जातक कथाएँ, पंचतंत्र, हितोपदेश, बृहत्कथा, चौरासीवैष्णवों की वार्ता आदि से जोड़ा जाता है। परंतु आज कहानी का जो रूप देखते हैं वह पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित एक विधा है। वस्तुतः आधुनिक हिन्दी कहानी का प्राथमिक स्वरूप हम बंगला से अनूदित कहानियों में पाते हैं पश्चिम की अंग्रेजों की कहानियों के अनुकरण पर बंगला में 'गल्प' के रूप में कहानी की रचना आरंभ हुई और फिर बंगला से हिन्दी में इन कहानियों का रूपांतर हुआ।
हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास का आरंभ 1900 ई. के आस-पास माना जाता है। क्योंकि इससे पहले हिन्दी में कहानी जैसी किसी विधा का रूपायन नहीं हुआ था। हिन्दी में प्रथम कहानी को लेकर काफी मतभेद हैं। इंशा अल्लाखाँ की 'रानी केतकी की कहानी' या 'उदयभानुचरित' ही प्रथम कहानी मानी गयी। पर बाद में किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती' प्रथम कहानी मानी गयी। वह भी अमान्य सिद्ध हुई तो पं. रामचंद्र शुक्ल जी ने अपनी कहानी "ग्यारह वर्ष का समय" (सन् 1903) को ही प्रथम कहानी माना।

हिन्दी की प्रथम कहानी के अंतर्गत जिन कहानियों का उल्लेख किया गया है, उनके अलावा इस युग में लिखी गई अन्य प्रसिद्ध कहानियाँ हैं माधवप्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता, लाला भगवान दीन की 'प्लेग की चुडैल', वृंदवनलाल वर्मा की 'राखीबंद भाई' तथा 'नकली किला, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'रक्षाबंधन', ज्वालादत्त शर्मा की 'मिलन' आदि हैं। वस्तुतः 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी में मौलिक कहानियों का विकास परिलक्षित होता है। सरस्वती पत्रिका ने हिन्दी कहानी को नया मोड दिया। इससे हिन्दी कहानी को गति मिली। इसी के साथ साथ सन् 1909 ई में काशी में 'इंदु' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसी पत्रिका के साथ जयशंकर प्रसाद ने कहानी साहित्य में प्रवेश किया। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ 'आग' चंदा, गुलाम, चितौर उद्धार; आदि इंदु में प्रकाशित हुई। सन् 1912 ई में इनका पहला कहानी संग्रह 'छाया' नाम से प्रकाशित हुआ। राधिकारमण प्रसाद की कहानी 'कानों में कंगना' भी इंदु में सन् 1913 ई में प्रकाशित हुई।

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युगप्रवर्तक कहानीकार माने जाते हैं। प्रारंभ में वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखा करते थे। उर्दू में लिखा हुआ उनका कहानी संग्रह "सोजे वतन" 1907 ई में प्रकाशित हुआ था। जिसे ब्रिटीश सरकार ने जब्त कर लिया था इसके पश्चात वे हिन्दी में 'प्रेमचंद' के नाम से लिखने लगे और उनका यह नाम कथा साहित्य में अहम हो गया। उनकी पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' सन् 1916 ई में प्रकाशित हुई और अंतिम कहानी 'कफन' 1936 ई में। मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने जीवन काल में लगभग 300 कहानियों की रचना की, जो 'मानसरेवर' के आठ भागों में प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी कहानी में प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी की काया ही पलट गई। "प्रेमचंद का आविर्भाव हिन्दी कहानी साहित्य की एक अपूर्व घटना थी। उन्होंने सामाजिक मानव की सामान्य और विशिष्ट परिस्थितियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का अंकन कर हिन्दी कहानी को एक निश्चित यथार्थवादी दिशा और गति प्रदान की।" जयशंकर प्रसाद इस युग के दूसरे महान कहानीकार हैं। "ग्राम" इनकी सर्वप्रथम मैलिक कहानी है। इस युग में चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने "उसने कहा था", "सुखमय जीवन" और "बुद्ध का कांटा" जैसी कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों के द्वारा गुलेरी जीने हिन्दी कहानी में अपना अलग स्थान बनाया। विश्वंभरनाथ शर्मा "कौशिक" तथा सुदर्शन ने प्रेमचंद से प्रभावित होकर कहानियाँ लिखी हैं तो चतुरसेन शास्त्री, राधाकृष्णदास तथा विनोद शंकर व्यास ने प्रसाद जी से प्रभावित होकर कहानियाँ लिखी। कौशिकजी ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी। प्रेमचंद युग के अन्य कहानीकारों में पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', जैनेंद्रकुमार तथा अज्ञेय उल्लेखनीय हैं। जैनेंद्र मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं। इन पर गाँधीवादी दर्शन का प्रभाव भी है। "अपना अपना भाग्य", "पत्नी", "हत्या", "खेल", "जाह्नवि", "पाजेब", "एकदिन" आदि जैनेंद्र की प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। अज्ञेय भी मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं। "रोज", "कडियाँ", "अमलवल्लरी", "मैन", "हार सिंगार" आदि उनकी बहु चर्चित कहानियाँ हैं। इस संदर्भ में डॉ. नगेंद्र का मंतव्य है "प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को महबूत नींव ही नहीं दी, उसे कलात्मक ऊंचाई भी प्रदान की। कौशिक, सुदर्शन, उग्र, राहुल आदि ने कहानी को सामाजिक पीडा की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बनाया। जैनेंद्र और अज्ञेय ने मनोविश्लेषण को आधार बनाकर नवीन प्रयोग किए, जहाँ से हिन्दी कहानी की एक नवीन धारा का सूत्रपात हुआ। तात्पर्य यह कि इस युग में हिन्दी कहानी अपने विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं को पार कर वहाँ पहँची जहाँ से हमें इसके श्रेष्ठ रूप के दर्शन होने लगते हैं।

प्रेमचंदोत्तर युग में हिन्दी कहानी का बहुमुखी विकास हुआ है। इसी युग में भारत को आजादी मिली। जीवन तेज गति से बदलने लगा। इस परिवर्तन का प्रभाव कहानी पर भी पड़ा। वैसे तो कहानी इस काल की केंद्रीय विधा रही। अतः कहानी ने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया। प्रेमचंदोत्तर युग के कहानीकारों में सब से ज्यादा उल्लेखनीय कहानीकार यशपाल और उपेंद्रनाथ 'अश्क' हैं। ये दोनों कहानीकार प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ानेवाले भी हैं। हिन्दी कहानी आंदोलनों में नई कहानी सब से प्रमुख आंदोलन है। यह आंदोलन सन् 1950 के आस-पास विकसित हुआ है। जीवन यथार्थ को नई कहानी एक विलक्षण ढंग से प्रस्तुत करती है। नई कहानी में भोगे हुए यथार्थ को अधिक महत्व दिया गया। सर्वप्रथम दुष्यंतकुमार ने 'कल्पना' पत्रिका में एक लेख में नई नाम से कहानी आंदोलन का नामकरण किया। "कहानी" पत्रिका ने भी इसमें अपना योगदान दिया। इसके संपादक भौरव प्रसाद गुप्त के संपादन में 1956 के नव-वर्षांक में इस आंदोलन को प्रतिष्ठा मिली। नई कहानी में यथार्थ के प्रति नया दृष्टिकोण रहा।नई कहानी के समर्थकों के लिए आधुनिकता प्रतिपल परिवर्तित जीवन की यथार्थता है। नई कहानी बड़े महत्वपूर्ण सामाजिक स्थाईत्व को स्वीकार करती है। नई कहानी अपने अपने

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

मनुष्य केंद्रित के कारण उसे मानव के व्यवहार क्षेत्र के रूप में ही देखती है। नई कहानी ने अपने संवेदनाओं को मानवीय संबंधों के क्षेत्र में संबंध रखा। इसमें आधुनिकता, महानगर बोध, अंचलिकता सभी का समोवेश है। नई कहानी पुरानी कहानी से अलग है। नई अपने परिवेश के प्रति अत्यंत संवेदनाशील है। नई कहानी में धर्म और ईश्वर का एक अलग ही संदर्भ मिल जाता है। इसी प्रकार परिवार और समाज स्त्री पुरुष संबंध और व्यक्तिगत कुंठा इन कहानीकारों में नया अर्थ लेकर आती है। इस संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं - "नई कहानी आंदोलन के दौरान इस बात पर अत्यधिक जोर दिया गया कि स्वानुभूत संवेदना या विचार ही 'प्रामाणिक' और कहानी का आधार बन सकते हैं। नई कहानी में मूल्यों एवं मान्यताओं में परिवर्तन के साथ-साथ विद्रोह भावना के लिए भी अभिव्यक्ति मिली है। महानगरीय जीवन तथा मध्यवर्गीय जीवन का बखूबी चित्रण किया गया। वातावरण सृष्टि की प्रधानता, पात्रों के नामों, वर्गों का सामान्यतया लोप पाया जाता है। भाषा में स्वाभाविकता, बिंबात्मकता, प्रतीकात्मक प्रयोग आदि नई कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ हैं। कहानी की परंपरागत धारणाओं को अस्वीकार करके लिखी गई कहानी को 'अकहानी' का नाम दिया गया है। अकहानी के शीर्षक से श्याममोहन श्रीवात्सव तथा सुरेंद्र सन् 1970 के आस पास लिखी गई कहानी को समकालीन कहानी के नाम से जानी जाती है। 'समकालीन' शब्द अंग्रेजी के 'कांटेपररी' का समानार्थी है। इस शब्द को विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने ढंग से व्याख्यायित करने की चेष्टा की। समकालीनता के संदर्भ में डॉ. नरेंद्र मोहन के विचार हैं "समकालीन एक ठहरी हुई गतिहीन और जड़ स्थिति नहीं है बल्कि ठहरात, गतिहीनता ऐतिहासिक प्रक्रिया और जड़ता को सख्ती और निर्ममता से जोड़ने वाली यह गतिमान ऐतिहासिक प्रक्रिया और चेतना है। समकालीन कहानी का अर्थ जो उस काल में लिसी गयी कहानियों से है जिनमें समय, समाज और जीवन की आत्मा तथा मानसिकता का संपूर्ण साक्षात्कार होता है। वास्तव में समकालीन कहानी का अनुशीलन अपने समय व समाज का अनुशीलन है।

समकालीन कहानी का क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह पुरानी कहानियों से भिन्न हैं। पुरानी कहानी में अलौकिक एवं प्राकृतिक तत्वों की प्रधानता पायी जाती है, किंतु समकालीन कहानी में लौकिक एवं जीवन यथार्थ का चित्रण होता है। समकालीन कहानी भावनात्मक संबंधों की अपेक्षा संबंधों की विसंगति, विडंबना, जटिलता, संघर्ष, तनाव, कुंठा, घुटन आदि का सजीव चित्रण करती नजर आती है। समकालीन महत्वपूर्ण कहानीकारों में संजीव, सृजय, स्वयंप्रकाश, अखिलेश, संजय खाती, उदय प्रकाश, शैलेंद्र सागर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जनवादी कहानी का व्यवस्थित आरंभ आठवें दशक से माना जाता है। वस्तुतः यह कहानी आंदोलन समूचें जनवादी आंदोलन से जुड़ा हुआ है। "सन् 1977 ई. में 'दिल्ली विश्व विद्यालय' में 'जनवादी विचारमंच' की स्थापना हुई।

सक्रिया कहानी आंदोलन के प्रवर्तक राकेश वत्स माने जाते है। इन्होंने 'मंच' नामक पत्रिका के द्वारा सक्रिया कहानी का सूत्रपात किया है। सक्रिय कहानी व्यक्तिवादी दानवीय प्रवृत्तियों का विरोध करते हुए मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल देती है। वह शोषण का विरोध करती है और साधारण आदमी के हित के लिए प्रयत्नशील है।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संजीव एक जिंदादिल कथाकार हैं। उनकी जिंदादिली, प्रतिबद्धता हर कहानी में परिलक्षित होती है। इसी प्रतिबद्धता के कारण हिन्दी कहानी के विकास एवं कहानी कला के योगदान में श्री 'संजीव' का सुनिश्चित एवं प्रतिष्ठित स्थान है। कहानी की परंपरा अत्यंत प्राचीन होते हुए भी आज यह साहित्य की एक लोकप्रिय, सशक्त एवं जीवंत, विधा मानी जाती है। हिन्दी कहानी की विकास यात्रा हिन्दी गद्य के विकास साथ साथ आरंभ होती है। हिन्दी में कहानी विधा आधुनिक युग की देन है। कहानी की सृजन - प्रेरणा और रचना प्रक्रिया समय के साथ निरंतर बदलती और परिवर्तित होती रहती है। हिन्दी कहानी ने अपने अल्प समय में ही विकास से कई चरण तय किये हैं। यह हमेशा से संभावना भरी महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा विशेष के लिए रूढ़ हो गया है। कथ्य और शिल्प के धरातल पर भी यह विधा अत्यंत रोचक एवं प्रभावशाली बनी हुई है। इस के माध्यम से सम-सामयिक जीवन की कतिपय समस्याओं एवं प्रेरणाओं की अभिव्यक्ति हुई है।

***********************

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

# भारतीय ज्ञान परंपरा में अष्टांग योग के विविध आयाम

डॉ निकेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,दर्शनशास्त्र विभाग एस एस वी कॉलेज, कहलगाँव।
तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, (बिहार)
ईमेल: nikesh2012@gmail.com

**प्रस्तावना**: भारतीय ज्ञान परंपरा में योग का स्थान अद्वितीय है। ज्ञान की इस परंपरा में योग को भारत की सबसे बड़ी देन के रूप में विश्व भर में स्वीकार किया जा रहा है। विश्व पटल पर बढ़ता हुआ योग भारतीय ज्ञान परंपरा की विजय है। निश्चित रूप से इसका श्रेय योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि को जाता है। उन्होंने योगसूत्र की रचना कर योग के आठ अंग अर्थात योग के आठ आयाम वाले अष्टांग योग के मार्ग से सम्पूर्ण विश्व को लाभान्वित किया है। अतः इस शोध-पत्र का उद्देश्य महर्षि पतंजलि के योगसूत्र में वर्णित अष्टांग योग के आठ आयामों से परिचित होना है।

**मुख्य शब्द:** अष्टांग योग, चित्त, यम, नियम, आसान, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि, बहिरंग, अंतरंग।

महर्षि पतंजलि को योग दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने योग को 'चित्त की वृत्तियों के निरोध' (**योगः चित्तवृत्तिनिरोधः**)[1] के रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने 'योगसूत्र' नाम से योगसूत्रों का एक संकलन किया जिसमें उन्होंने पूर्ण कल्याण तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए अष्टांग योग (आठ अंगों वाले योग) का एक मार्ग विस्तार से बताया है। अष्टांग योग को आठ अलग-अलग चरणों वाला मार्ग नहीं समझना चाहिए; यह आठ आयामों वाला मार्ग है जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। इनके संबंध में महर्षि पतंजलि लिखते हैं-**यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि।**[2] ये आठ अंग हैं: (1) यम, (2)नियम, (3)आसन, (4)प्राणायाम, (5)प्रत्याहार, (6)धारणा, (7) ध्यान, (8)समाधि। इन आठ अंगों के अनुष्ठान से अविद्या का नाश तथा यथार्थ ज्ञान का उदय होता है। जैसे-जैसे साधक योगाभ्यास में अग्रतार होता है वैसे-वैसे उसकी अविद्या क्षीण होती जाती है और प्रज्ञा प्रस्फुटित होती जाती है। योग की पूर्ण सिद्धि से विवेकख्याति की उत्पत्ति होती है। इन योगों का प्रयोजन है- विवेक ज्ञान की प्राप्ति एवं अशुद्धि तथा अविद्या का नाश। विवेक ज्ञान से ही मोक्ष मिलता है।

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग को दो भागों में बाँटा है – बहिरंग योग एवं अंतरंग योग। इसके अंतर्गत प्रथम पांच अंग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार) 'बहिरंग' और शेष तीन अंग (धारणा, ध्यान, समाधि) 'अंतरंग' नाम से प्रशिद्ध हैं। आठ अंगों का निम्नलिखित विश्लेषण हम क्रमशः उपस्थित कर रहे हैं:

1. यम – यम का अर्थ होता है- उपरम या अभाव। **अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्याउपरिग्रहा यमाः।**[3] अर्थात अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यह पांच यम कहलाते है। सभी यम धर्म के रक्षक है, परंतु जहाँ यम धर्म का विरोधी हो जाये वहाँ धर्म को प्रधानता दी जाती है। ये निम्नलिखित हैं -अहिंसा – मन, वाणी और कर्म से कभी भी किसी भी प्रकार के प्राणी को दुःख नहीं देना अहिंसा है। दूसरे शब्दों में प्राणीमात्र से प्रेम अहिंसा है। विरोधी भाव – देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए की गई हिंसा भी अहिंसा है, क्योंकि वह धर्म की रक्षक है।

सत्य – इन्द्रियों और मन के द्वारा जो ज्ञान हो उसे वैसा का वैसा व्यक्त करना सत्य है। विरोधी भाव – लंगड़े को लंगड़ा कहना सत्य है, गूंगे को गूंगा कहना भी सत्य है, किन्तु अहिंसा का विरोधी होने से अधर्म है। अतः व्यर्थ का कटु सत्य कभी नहीं बोलनी चाहिए।

अस्तेय – दूसरों के विचारों, अधिकारों या वस्तुओं का अपहरण करना चोरी (स्तेय) है, इसके विपरीत अस्तेय है।

ब्रह्मचर्य – मन, वचन और कर्म से सभी अवस्थाओं में सभी प्रकार के मिथुनों का त्याग ब्रह्मचर्य है।

अपरिग्रह – व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए धन – संम्पति का संग्रह परिग्रह और इसके विपरीत इसके अभाव का नाम अपरिग्रह है।

2. नियम – शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।4 अर्थात शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान यह पांच नियम कहलाते है। सभी नियम आत्मा, मन और इन्द्रियों की स्वच्छता व पवित्रता के पोषक और शोधक है। ये पांच नियम हैं-

शौच – जल से बाहर के अंगो यथा हाथ, पैर आदि शारीरिक अंग को शुद्ध रखे, सत्य के पालन से मन को शुद्ध रखे, विद्या और तप से जीवात्मा का शुद्धिकरण करें, ज्ञान से बुद्धि का शुद्धिकरण करें। शौच स्वयं पवित्रता का प्रतीक है।

संतोष – अपने किये गये प्रयत्न के अनुसार जो फल मिले उसमें प्रसन्न रहना संतोष है। कहा भी गया है 'संतोषी सदा सुखी' जिसे अपने किये गये कर्म में संतोष तथा कर्मफल में विश्वास रहता है वह हमेशा सुखी रहता है। इसलिए आप जो भी करें ईश्वर का कार्य समझ कर करें जिससे आपको असंतोष ना हो।

तप – धर्म और कर्तव्य कर्म के लिए कष्ट सहन को तप कहते है। हमारा धर्म है कि आत्मा को अविद्या की राह से हटाकर विद्या के प्रकाशमय पथ का अनुसरण कराये। इसके निमित्त जो सर्दी – गर्मी, भूख – प्यास आदि कष्ट सहन किया जाता है, वह सभी तप की श्रेणी में आते है। तप संकल्प से किये जाते है, नकल से नहीं। अधिकांश लोग दूसरों का अनुकरण करके व्रत – उपवास आदि रखना शुरू कर देते है किन्तु यह मुर्खता है। आप जो भी तप का अभ्यास करों, उसके पीछे संकल्प होना चाहिए। आपके पास अपने तप का स्पष्ट कारण होना चाहिए कि आप ऐसा क्यों कर रहे है। कोई भी ऐसा तप ना करे, जिससे लाभ के बजाय हानि की सम्भावना अधिक हो। जैसे बहुत से लोग निर्जला एकादशी का व्रत करते है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से एकदम अनुचित है। उपवास कोई भी क्यों ना हो, जल का तो भरपूर उपयोग होना चाहिए।

स्वाध्याय – स्वाध्याय के दो अर्थ लिए जाते है, पहला – स्वयं का अध्यनन करना और दूसरा सद्ग्रंथो का अध्यनन करना। जिस तरह हमें प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता होती है उसी तरह आत्मा को भी प्रतिदिन स्वाध्याय रूपी भोजन की आवश्यकता होती है। स्वाध्याय स्वयं को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया का नाम है। आज का वातावरण बहुत ही कलुषित हो चूका है, तथा प्रतिदिन मार्गदर्शन प्रदान करने वाले गुरु का सुयोग आज के समय में संभव नहीं। इसलिए विद्वान मनुष्य को चाहिए कि सद्ग्रंथ को अपना मार्गदर्शक मानकर अपने जीवन को ईश्वरीय मार्ग के लिए प्रशिक्षित करें।

ईश्वर प्रणिधान – ईश्वर प्रणिधान का अर्थ है कि जो भी करें, ईश्वर को समर्पित कर दें। इससे कर्ता होने का अहंकार नहीं होगा। ईश्वर को हर समय अपने साथ अनुभव करें।

3. आसन – आसन शब्द संस्कृत भाषा के अस धातु से बना है जिनका दो अर्थ है- बैठने का स्थान तथा दूसरा शारीरिक अवस्था। शरीर

मन और आत्मा जब एक संग और स्थिर हो जाता है, उससे जो सुख की अनुभूति होती है वह स्थिति आसन कहलाती है। तेजोबिन्दु उपनिषद में आसन के विषय में कहा है- सुखेनैव भवेत् यस्मिन्न जस्रं ब्रहमचिन्तम। अर्थात जिस स्थिति में बैठकर सुखपूर्वक निरन्तर परमब्रहम का चिन्तन किया जा सके उसे ही आसन समझना चाहिए। योगसूत्र के अनुसार- **संतोषादनुत्तमसुखलाभ:।**[5] अर्थात – स्थिर और सुखे पूर्वक बैठना आसन कहलाता है। सुखपूर्वक बैठने की अवस्था का नाम आसन है। हठयोग में कई आसनों का वर्णन है जिनमें जो आसन साधना के लिए उपयुक्त है उनमें सुखासन, पद्मासन, वज्रासन, बद्ध – पद्मासन और सिद्धासन है। जब लम्बे समय तक योगी साधक को इन आसनों में बैठने का अभ्यास हो जाता है तो उसे आसन सिद्धि कहते है। इनके अतिरिक्त कई आसन हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी है।

4. प्राणायाम – प्राणायाम दो शब्दों से मिलकर बना है। प्राण + आयाम। 'प्राण' का अर्थ होता है- 'जीवन-शक्ति'। 'आयाम' के दो अर्थ हैं। पहला- नियन्त्रण करना या रोकना तथा दूसरा लम्बा या विस्तार करना। प्राणवायु का निरोध करना 'प्राणायाम' कहलाता है। योग सूत्र में प्राणायाम को इस प्रकार प्रतिपादित किया है – **तस्मिन् सति श्वासप्रश्वापसयोर्गतिविच्छेलद प्राणायाम:।**[6] अर्थात – उसकी (आसनों की) स्थिरता होने पर श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति के नियमन करना ''प्राणायाम है। प्राणवायु को भीतर लेना श्वास है, बाहर निकालना प्रश्वास है। जब इन दोनों की गति को विच्छेद किया जाता है तो इसे प्राणायाम कहते है। प्राणायाम का अविष्कार प्राण नाड़ियों के शुद्धिकरण के लिए किया गया है। इनके शुद्धिकरण के पश्चात् योगी का प्राण पर अधिकार हो जाता है। जब प्राण पर अधिकार हो जाता है तो वह प्राण को जहाँ चाहे लगा सकता है ।असल में प्राणायाम प्राणशक्ति है जिसके सही उपयोग के कई लाभ है।

5. प्रत्याहार – योग दर्शन में प्राणायाम के पश्चात प्रत्याहार का कथन एवं विवेचन उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया गया है। **स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्यस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहार:।**[7] प्रत्याहार का सामान्य अर्थ होता है, पीछे हटना, उल्टा होना, विषयों से विमुख होना। इसमें इन्द्रिया अपने बहिर्मुख विषयों से अलग होकर अन्तर्मुख हो जाती है, इसलिए इसे प्रत्याहार कहा गया है। इन्द्रियों के संयम को भी प्राणायाम कहते है। प्राण और चित्त दोनों एक दूसरे से बंधे हुए है। यदि मन नियंत्रण में हो जाये तो प्राण स्वतः नियंत्रण में आ जाता हैं। इसके विपरीत यदि प्राण नियंत्रण में आ जाये तो मन स्वतः नियंत्रण में हो जाता है। ''जहाँ चित्त वहाँ प्राण''-इस उक्ति के अनुसार मन और प्राण का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। जब प्राणायाम करते – करते प्राण नियंत्रण में आ जाता है तो मन स्वतः नियंत्रण में आ जाता है। और जब मन नियंत्रण में आकर इन्द्रियों के बाहरी विषयों से अंतर्मुख होना है उसी अवस्था को प्रत्याहार कहते है।

6. धारणा – महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग के अन्तरंग यह योग का छठा अंग है। **देशवन्धष्चित्तस्थ धारणा।**[8] मन (चित्त) को एक विशेष स्थान पर स्थिर करने का नाम 'धारणा' है। यह वस्तुत: मन की स्थिरता का घोतक है। हमारे सामान्य दैनिक जीवन में विभिन्न प्रकार के विचार आते जाते रहते है। दीर्घकाल तक स्थिर रूप से वे नहीं टिक पाते और मन की सामान्य एकाग्रता केवल अल्प समय के लिए ही अपनी पूर्णता में रहती है। इसके विपरीत धारणा में सम्पूर्णत: चित्त की एकाग्रता की पूर्णता रहती है। जब मन प्रत्याहार से अंतर्मुख होने लगता है तो उसे किसी ध्येय पर लगाया जाता है। प्रवृति से मन चंचल होने से ध्येय वस्तु पर टिकता नहीं है किन्तु बार – बार उसे ध्येय वस्तु पर लाया जाता है। ध्येय के निरंतर प्रवाह की इस प्रक्रिया को धारणा कहते है।

7. ध्यान – धारणा की उच्च अवस्था ध्यान है। ध्यान शब्द की उत्पत्ति ध्येचित्तायाम् धातु से होती है जिसका अर्थ होता है- चिन्तन करना। किन्तु यहाँ पर ध्यान का अर्थ चिन्तन करना नहीं अपितु चिन्तन का एकाग्रीकरण अर्थात् चित्त को एक ही लक्ष्य पर स्थिर करना है। **तत्र प्रत्ययेकतानता ध्यानम्।**[9]

सामान्यत: ईश्वर या परमात्मा में ही अपना मनोनियोग इस प्रकार करना कि केवल उसमें ही साधक निगमन हो और किसी अन्य विषय की ओर उसकी वृत्ति आकर्षित न हो 'ध्यान' कहलाता है। योग शास्त्रो के अनुसार जिस ध्येय वस्तु में चित्त को लगाया जाये उसी में चित्त का एकाग्र से जाना अर्थात् केवल ध्येय मात्र में एक ही तरह की वृत्ति का प्रवाह चलना, उसके बीच में किसी दूसरी वृत्ति का नहीं उठना 'ध्यान' कहलाता है। जब निरंतर धारणा के अभ्यास से मन की प्रवृति किसी वस्तु पर लम्बे समय तक ठहरने लगे तो ध्येय के उस सतत प्रवाह को ध्यान कहते है। इसमें ध्येय और ध्याता का अंतर बना रहता है।

8. समाधि – अष्टांग योग में समाधि का विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। साधना की यह चरम अवस्था है, जिसमें समाधि स्वयं योगी का बाह्य जगत् के साथ संबंध टूट जाता है। यह योग की एक ऐसी दशा है, जिसमें योगी चरमोत्कर्ष की प्राप्ति कर मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। और यही योग साधना का लक्ष्य है। अत: मोक्ष्य प्राप्ति से पूर्व योगी को समाधि की अवस्था से गुजरना पड़ता है। योग शास्त्र में समाधि को मोक्ष प्राप्ति का मुख्य साधन बताया गया है, योग भाष्य में संभवतः इसलिए योग को समाधि कहा गया है। यथा ''योग: समाधि'' पातंजलि योगसूत्र में चित्त की वृतियो के निरोध को योग कहा गया है। समाधि अवस्था में भी योगी की समस्त प्रकार की चित्त वृत्तियॉ निरूद्ध हो जाती है। महर्षि पतंजलि ने समाधि का स्वरूप निम्न प्रकार से बताया है- **तदेवार्थमात्रनिर्भासंस्वरूपशून्यनमिव समाधि:।**[10] अर्थात् – जब (ध्यान में) केवल ध्येय मात्र की ही प्रतीती होती है और चित्त का निज स्वरूप शून्य सा हो जाता है, तब वह (ध्यान ही) समाधि हो जाता है। अतः जब ध्येय और ध्याता का अंतर समाप्त होकर केवल ध्येय रह जाये तो उस अवस्था को समाधि कहते है। समाधी की दो श्रेणियाँ होती है- सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात। सम्प्रज्ञात समाधि का मतलब वितर्क, विचार, आनंद से है जबकि, असम्प्रज्ञात में सात्विक, राजस और तमस सभी प्रकार की वृतियों की रोकधाम हो जाती है।

उपरोक्त अष्टांग मार्ग के अनुपालन से मनुष्य के चित्त की वृतियों का निरोध होता है और मनुष्य में एकाग्रता आती है। मन स्थिर और शांत हो जाता है।

*****************

**संदर्भ सूची:**


पातंजल योग सूत्र, 1/2
वहीं, 2/29
वहीं, 2/30
वहीं, 2/32
वहीं, 2/42
वहीं, 2/49
वहीं 2/54
वहीं 3/1
वहीं 3/2
वहीं 3/3

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

# विभूति नारायण राय के उपन्यासों में यथार्थपरकता

**डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय**
सहायक आचार्य (हिंदी)
के. पी. उच्च शिक्षा संस्थान झलवा, इलाहाबाद (उ.प्र.)
ईमेल - sppandeya340@gmail.com

आधुनिक साहित्य अपने वैचारिक भाव बोध और मानवीयता के विशेष संदर्भों के कारण कल्पना की परलौकिकता से परे हटकर यथार्थ की इहलौकिकता को केंद्र में रखता है। इसी संदर्भ में समकालीन साहित्य भी है। वर्तमान में समकालीन साहित्य का आशय 90 के बाद के समय के साहित्य से है। अपने समय से साक्षात्कार कराने वाली रचना ही समकालीन साहित्य है। रचनाकार अपने आलोचनात्मक दृष्टि से समाज में निहित विसंगतियों एवं अंतर्विरोधों का पड़ताल करता है और उसे रचनात्मक अभिव्यक्ति देता है। इस संदर्भ में कथा आलोचक शंभु कहते हैं- "समकालीनता न केवल एक विषय वस्तु या थीम है बल्कि इसमें रचनात्मक रूप देने वाली एक दृष्टि भी है। ''समकालीनता अपने समय में रहते हुए उसके साथ-साथ चलते हुए उसमें आगे जाती है। काल या समय की अपनी एक सीमा का सामर्थ्य होती है। अपना एक तात्कालिक यथार्थ होता है। एक लेखक जब इस तत्काल्वाद को लांघकर आने वाले समय की सच्ची और सही और संभावित तस्वीर उकेरने लगता है, दरअसल तभी वह समकालीन कहलाए जाने योग्य होता है।'' समकालीनता के संदर्भ में शंभु गुप्त का यह कथन कथाकार विभूति नारायण राय के ऊपर बहुत ही सटीक बैठता है। 1981 में 'घर' उपन्यास से साहित्य की दुनिया में विधिवत कदम रखने वाले विभूति जी ने अपने समय का यथार्थपरक सृजन उपन्यास के रूप में किया है। यद्यपि विभूति जी इसके पहले भी छिटपुट रूप में व्यंग्य एवं छात्र जीवन में कविताएं लिखते थे लेकिन साहित्यिक दुनिया में कोई पहचान नहीं था। विभूति नारायण राय ने जब लिखना शुरू किया तो वह संक्रमण का दौर था। इस दौर में कथ्य एवं शिल्प दोनों में बदलाव शुरू हो गया था। एक तरफ जहाँ साहित्य में अति यथार्थ के प्रति मोह था तो वहीं दूसरी ओर इससे मुक्त होने की बेचैनी भी थी। अतीत का अति यथार्थ और वर्तमान का कल्पना और यथार्थ का मिश्रण एक नए तरह के कथ्य और शिल्प को गढ़ रहा था।

इस दौर में उदय प्रकाश, संजय, विनोद कुमार शुक्ल, मनोहर श्याम जोशी के कथा साहित्य में बदलाव की पृष्ठभूमि दिखती है। बाद के कहानीकारों ने इस बदलाव को अपने साहित्य नए ढंग से दर्ज किया। विभूति नारायण राय इसी संक्रमण काल के उपन्यासकार हैं जिन्होंने यथार्थ की जड़ता को तोड़ते हुए एक नए फ़लक पर यथार्थवादी साहित्य रचा। जनवादी दृष्टिकोण और संवेदनात्मक अनुभूति के कारण राय साहब ने उपन्यासों में अपने समय और समाज को वास्तविक रूप में चित्रित किया है। सर्वेश जैन ने विभूति नारायण राय के साहित्य पर लिखते हुए एक शीर्षक लिखती हैं- ''विभूति नारायण राय अर्थात गत तीस वर्षों का भारतीय इतिहास'' इस शीर्षक से ही स्पष्ट है कि विभूति जी ने जो साहित्य रचा है उसमें भारतीय जीवन का विगत तीस वर्षों का यथार्थ है। यह यथार्थ की भाव भूमि बदलते एवं नए बनते सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को बयां करते हैं। विभूति नारायण राय ने अब तक कुल पाँच उपन्यास 'घर' (1981), 'शहर में कर्फ्यू' (1986), 'किस्सा लोकतंत्र'(1993), ' तबादला' (2001), 'प्रेम की भूतकथा' (2010) है। पहला उपन्यास 'घर' और अभी तक का अंतिम उपन्यास 'प्रेम की भूत कथा' को छोड़कर शेष उपन्यासों की पृष्ठभूमि में एक तरह की साम्यता 1986 में प्रकाशित 'शहर में कर्फ्यू' इनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास के प्रसिद्धि को इसी बात से समझा जा सकता है कि यह लगभग सभी भारतीय भाषाओं एवं भारत के बाहर भी अन्य भाषाओं में भी अनुदित हो चुका है । विभूति जी ने यह उपन्यास पुलिस महकमे में उच्च अधिकारी रहते हुए सांप्रदायिक दंगों में पुलिसिया कार्यवाही किस तरह से होती है और दंगों के संदर्भ में पुलिस की स्थिति, पुलिस का सांप्रदायिकता के खिलाफ किसी विशेष तरह का प्रशिक्षण न होना और किसी खास धर्म के प्रति घृणा के भाव को बहुत सी महीन मानवीय पक्षों के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास के संदर्भ में लेखक की आत्म स्वीकारोक्ति है कि- "शहर में कर्फ्यू लिखना मेरे लिए एक त्रासदी से गुजरने जैसा था। उन दिनों मैं इलाहाबाद में नियुक्त था और शहर का पुराना हिस्सा दंगों की चपेट में था। हर दूसरे तीसरे साल होने वाले दंगों से यह दंगा मेरे लिए कुछ था। इस बार हिंसा और दरिंदगी अखबारी पन्नों से निकलकर मेरे अनुभव संसार का हिस्सा बनने जा रही थी - एक ऐसा हिस्सा जो अगले कई सालों तक द:स्वप्न की तरह मेरा पीछा नहीं छोड़ने वाला था। मुझे लगा कि इस दःस्वप्न से मुक्ति का सिर्फ एक उपाय है इन अनुभवों को लिख डाला जाय।" विभूति जी के इस वक्तव्य से उनकी रचना प्रक्रिया को समझना आसान हो जाता है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों से विषय वैविध्यता खूब है। एक ही उपन्यास में कहने का ढंग भी भिन्न भिन्न है। यथार्थ को चित्रित करने में कोई दुहराव नजर नहीं आता। 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास के केंद्र में सांप्रदायिकता की मानसिकता, राजनीति के लिए सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, किसी खास संप्रदाय का विरोध, पुलिस का चरित्र आदि मन:स्थितियों में व्यक्तियों के अलग-अलग व्यवहार का रेखांकन है। इलाहाबाद शहर के मुस्लिम बाहुल्य हिस्से में दंगे भड़कने के बाद कर्फ्यू लगने एवं गरीब मजदूर मुस्लिम परिवारों में भूखमरी की स्थिति, मौत का स्याह सन्नाटे की बहुत ही मार्मिक अंकन है। इस सन्नाटे को पुलिस की गाड़ियाँ तोड़ती हैं। आजादी के समय से ही दंगे इस देश का अनिवार्य हिस्सा बन गया था। आजादी के समय से ही दंगे नेताओं के राजनीतिक स्वार्थ और उनके दांव पेंच पर टिकती थी। जिसे अंग्रेजों ने भी समय-समय हवा दी। सांप्रदायिकता के संदर्भ में जवाहर लाल नेहरू 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखते हैं- "भारत के अल्पसंख्यक यूरोप के अल्पसंख्यकों की भांति नस्ली या राष्ट्रीय अल्पसंख्यक नहीं हैं, ये धार्मिक अल्पसंख्यक हैं। नस्ली तौर पर भारत एक मिश्रित प्रजातियों का देश है पर यहाँ नस्ल को लेकर कभी कोई प्रश्न नहीं उठे।''
राजनीति ने यहाँ धार्मिक अलगाव को सांप्रदायिक अलगाव में बदल दिया और दंगों के सारे आरोप मुस्लिमों पर थोप दिया। इस संदर्भ में लेखन का कहना है कि दंगे चाहे जो शुरू करता हो लेकिन मरते उसमें सबसे अधिक मुस्लिम ही हैं। सांप्रदायिकता के संदर्भ हमारे बीच यह भ्रम बरकरार है सांप्रदायिक दंगों की शुरूआत मुस्लिम करते हैं। इस भ्रम को लेखन ने थोड़ा है और उपन्यास का यथार्थ परक तथ्यों से कथा यात्रा को तय किया है। इस संदर्भ में आलोचक शंभु लिखते हैं- "यह उपन्यास बड़ी

ताकत के साथ हमारे इस भ्रम और हिन्दू-फासिस्टों के इस षड्यंत्रपूर्ण दुष्प्रचार को तोड़ता है कि इस देश में मुसलमान ज्यादा आक्रामक हैं और दंगे वही भड़काते हैं।"

यह एक ऐसी धारणा है जिसका कोई आधार नहीं है। सारे आंकड़ें इसके विरुद्ध जाते हैं फिर यह धारणा बनी हुई है। बात-बात में मुस्लिम समुदाय को पाकिस्तान भेजने या चले जाने की धमकियाँ दी जाती है। जबकि धर्म के नाम पर एक अलग देश की मांग आम मुसलमानों ने की थी। कुछ राजनेताओं के लिए ही सत्ता सबसे बड़ी चीज थी। यही कारण था कि पाकिस्तान बनने के बाद भी बड़ी संख्या में मुसलमान वहां जाने के लिए तैयार नहीं हुए। इस संदर्भ में रिजवान कैसर का यह कथन विचारणीय है- "1946 के चुनावों में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तानी एजेंडे को मुसलमानों के लिए हर मर्ज की दवा के रूप में प्रायोजित किया था जिसने उन्हें वोट देने वाले उन मुसलमानों का समर्थन दिला दिया जो औसतन 15 प्रतिशत थे जबकि 11 प्रतिशत ने ही मुस्लिम लीग को वोट दिया। ऐतिहासिक सन्दर्भों में बात करें तो मुसलमानों के एक बटे दसवें हिस्से, वह भी ज्यादातर उच्च वर्ग की राय मुसलमानों पर थोप दी गई और उसे पूरे समुदाय का सामूहिक निर्णय बताया गया।" अधिक समर्थन न होने के बावजूद भी पाकिस्तान का निर्माण हुआ और भारत में मुसलमान शक के रूप देखे जाने लगे। शक और भय ने भारत के दो बड़े समुदाय के भीतर एक दूसरे के प्रति वैमनस्य बढ़ता चला गया। धार्मिक भिन्नता ने नस्लीय भिन्नता का रूप ले लिया । इसके फलस्वरूप सरकारी मिशनरी जिसे संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए काम करना होता है वह भी बहुसंख्यकवाद की शिकार हो गई और सांप्रदायिक दंगों में संवैधानिक मूल्यों की रक्षा न कर किसी खास समुदाय की तरफदारी करती नजर आने लगी।

लेखक विभूति नारायण राय ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में इलाहाबाद में में दंगों को जैसा देखा, महसूस किया उसे यथार्थ रूप में उपन्यास के रूप में सृजित किया। यह उपन्यास आँखों देखी रिपोर्ट की तरह लगता है। शायद इसलिए इस उपन्यास को विजेंद्र नारायण सिंह ने रिपोर्ताज शैली का उपन्यास कहा है। 'शहर में कर्फ्यू' यथार्थ का अतिरेक नहीं है बल्कि यथार्थ के चरम को कथा में व्यक्त किया है। साईदा के मार्फत गरीबी, भूखमरी, बेबसी, लाचारी का जो चित्रण लेखन ने किया है वह अन्यत्र मिलना मुश्किल है। सईदा की बीमार बच्ची दवा के अभाव में मर जाती है, साईदा उसे अस्पताल भी नहीं ले जा पाती। यह कथ्य तमाम निम्न वर्गीय, गरीब और वंचित मुस्लिम लोगों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत होती है जिन पर सांप्रदायिकता का कहर सबसे अधिक टूटता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दंगों में ऐसे ही लोग सबसे ज्यादा यातना के शिकार होते हैं।

'किस्सा लोकतंत्र' लोकतंत्र के पतन की कथा है। जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन की व्यवस्था अब चंद घरानों की व्यवस्था हो गई है। भाई-भतीजावाद, जातिवाद, सत्ता सुख की शिकार हो गई है। संसदीय राजनीति में अपराधियों का बोलबाला हो गया है। आज राजनीति में अपराधी, माफिया और दलालों के गठजोड़ में परिणत हो गया है। इस उपन्यास के केंद्र में लोकतंत्र का अपराधीकरण मुख्य रूप से है। इस उपन्यास की कथा की शुरुआत पुलिस के द्वारा अपराधी तत्वों के पनपने से होती है और अंत इन अपराधियों के माफिया तत्वों के गठजोड़ द्वारा एक इतर सत्ता तंत्र को विकसित करने के साथ होता है। वर्तमान में राजनीतिक मूल्य का जो ह्रास हुआ है अपराधी, राजनेता एवं सरकारी तंत्र का जिस तरीके से गठजोड़ है उसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। यह उपन्यास वर्तमान राजनीति के चेहरे से पर्दा हटाता है जो अपराधियों द्वारा संचालित होता है।

इस उपन्यास का अंतर्वस्तु लोकतंत्र का अपराधीकरण है। उपन्यास का नायक पीपी (प्रेमपाल यादव) है जो अपने इलाके का कुख्यात अपराधी है। शराब एवं भू माफिया के रूप में यह अपराधी राजनीति में कदम रखता है। इसे उस समय के राजनेताओं का साथ मिलता है जिसके लिए इसने पहले चंदा देता था और उनके लिए काम करता था। इस उपन्यास में लेखक ने फ्लैश बैक शैली का सहारा लेते हुए पीपी के अतीत के साथ कथा को विस्तार देता है। कथा आलोचक इस उपन्यास में फ्लैश बैक शैली के संदर्भ में कहते हैं कि- "राय पी. पी. की किशोरावस्था के प्रसंगों का सविस्तार विवरण प्रस्तुत कराते हुए उस मनोवैज्ञानिक आधार को समझा देते हैं जो व्यवहार का नियमन करते हैं। यह उपन्यास लोकतंत्र के अपराधीकरण को बेपर्दा करता है।

'किस्सा लोकतंत्र' की तरह ही 'तबादला' भी सामान्य किस्म का उपन्यास है। इसे 'किस्सा लोकतंत्र' का विस्तार भी कहा जा सकता है। जिस जन विरोधी भ्रष्ट सत्ता की चर्चा वहां हुई है उसी का और अधिक विद्रूप यहाँ प्रस्तुत किया गया है। भ्रष्टाचार, कार्य संस्कृति के पतन की बानगी के तौर पर इसमें कार्यालय के वातावरण का चित्रण किया गया है।

'तबादला' 2001 में प्रकाशित विभूति जी का चौथा उपन्यास है। इसके केंद्र में भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार लोकतंत्र को घुन के माफिक चाट जाता है। इलाहाबाद में 12 वर्षों में एक बार लगाने वाले कुम्भ मेले को लेकर सरकारी तंत्र में जो भ्रष्टाचार व्याप्त है उसकी कथा कहता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस उपन्यास में तबादला उद्योग और भ्रष्टाचार की कथा है। अधिशासी अभियंता कमलाकांत और दूसरे अधिशासी अभियंता बटुकचंद उपाध्याय का तबादला सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी कहता है। कमलाकांत बर्मा के तबादले और उनके

स्थान पर बटुकचंद्र उपाध्याय अधिशासी अभियंता के पद स्थापित होने, तत्पश्चात कमलाकांत बर्मा के उसी पद पर पुनः स्थानांतरण होने और एक बार फिर बटुक चंद उपाध्याय के उन्हीं दांव पेचों का इस्तेमाल करके कमलाकांत वर्मा को हटाकर अपनी पुरानी जगह पर आ जाने का वर्णन है। इस तरह तबादला करवाने और रुकवाने के लिए दोनों अधिशासी अभियंता तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं। पैसे देकर अपना तबादला करवाते हैं और फिर पैसे देकर तबादला रुकवाते हैं। तबादले के माध्यम से भ्रष्टाचार की लूट किस तरह मची हुई है और जनता का पैसा किस तरह से लूट की भेट चढ़ जाता है, इसका चित्रण इस उपन्यास में बखूबी हुआ है। भ्रष्टाचार की जो कार्य संस्कृति सरकारी दफ्तरों में व्याप्त है यह उपन्यास उसकी एक बानगी प्रस्तुत करता है।

विभूति नारायण राय के रचनाओं के पात्र किसी काल्पनिक दुनिया से नहीं होते हैं, बल्कि हमारे आस-पास के घर-परिवार व जीवन के हिस्से लगते हैं। राय के पात्र अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ कथा पटल पर उपस्थित होते हैं। इन पत्रों की भूमिका एक पक्षीय नहीं होती है वरन बहुआयामी जीवन चरित्रों के साथ प्रस्तुत होते हैं। इनके तीन उपन्यास 'शहर में कर्फ्यू', 'किस्सा लोकतंत्र' और 'तबादला' की पृष्ठभूमि में लोकतंत्र है। लोकतंत्र का अपहरण किस तरह से राजनेता, अपराधी और प्रशासन के आला अधिकारी मिलकर करते हैं उपन्यासों की केंद्रीय अंतर्वस्तु है।

****************

**संदर्भ :-**

1. सिंह, पुष्पपाल,(2015). समकालीन हिन्दी कहानी: युगबोध का संदर्भ.
2. राय, विभूति नारायण. (2003). शहर में कर्फ्यू, भूमिका से, इलाहाबाद : इतिहास बोध प्रकाशन.
3. गुप्त, शंभु और जैन सर्वेश . (2012). अनहद गरजै. दिल्ली: शिल्पायन प्रकाशन.
4. नेहरू, जवाहरलाल.(198). डिस्कवरी ऑफ इंडिया, दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. सिंह, विजेंद्र नारायण एवं सिंह, कृष्णकुमार. (2015). इलाहाबाद: साहित्य भंडार.
6. यादव, राजेन्द्र. (अगस्त, 2003). हंस अक्षर प्रकाशन: दिल्ली.

# फादर कामिल बुल्के का हिंदी साहित्य में योगदान

**सौरभ शुभम**
(पीएचडी स्कॉलर)
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

फादर कामिल बुल्के (1909–1982) हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक हैं, जिन्हें अक्सर अंतरसांस्कृतिक समझ और विद्वता का प्रतीक माना जाता है। एक बेल्जियन जेसुइट पादरी, जिन्होंने अपना जीवन भारत को समर्पित किया, बुल्के ने न केवल हिंदी भाषा में महारत हासिल की बल्कि इसके प्रमुख समर्थकों में से एक बन गए। उनकी यात्रा केवल उनकी भाषाई विशेषज्ञता की गहराई के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य के सांस्कृतिक और बौद्धिक ताने-बाने में उनके योगदान के लिए भी उल्लेखनीय है। बुल्के का कार्य इस बात का शानदार उदाहरण है कि कैसे विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि से आने वाले व्यक्ति किसी भाषा और उसके साहित्यिक परंपराओं में गहरा योगदान दे सकते हैं। उनके कार्यों में अनुवाद, शब्दकोश निर्माण, और विद्वतापूर्ण विश्लेषण शामिल हैं, विशेष रूप से धार्मिक और दार्शनिक विषयों पर। उनकी प्रमुख कृति, राम कथा: उत्पत्ति और विकास, हिंदू धार्मिक अध्ययन का एक आधारभूत ग्रंथ मानी जाती है और रामायण की व्याख्याओं को गहराई से प्रभावित करती है। यह लेख बुल्के के जीवन, हिंदी के प्रति उनके प्रेम, और हिंदी साहित्य एवं भारतीय बौद्धिक धरोहर को समृद्ध बनाने के उनके प्रमुख योगदानों पर प्रकाश डालता है।

## हिंदी और शैक्षणिक उपलब्धियों में प्रवीणता-

विदेशी होते हुए भी, बुल्के ने हिंदी भाषा में असाधारण निपुणता प्राप्त की, चाहे वह बोलने में हो या लिखने में। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य का गहन अध्ययन किया, जहां उन्होंने रामायण पर अपने अद्वितीय शोध के लिए डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उनकी डॉक्टरेट थीसिस, "राम कथा: उत्पत्ति और विकास", में रामायण की उत्पत्ति, विकास और विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं में इसके विविध अर्थों का विश्लेषण किया गया। यह कार्य भारतीय महाकाव्यों और उनकी सांस्कृतिक महत्ता के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण योगदान बना हुआ है।

बुल्के की जटिल भारतीय ग्रंथों की सटीक और संवेदनशील व्याख्या करने की क्षमता ने भारतीय विद्वानों के बीच उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई। संस्कृत में उनकी दक्षता ने हिंदू शास्त्रों और दार्शनिक परंपराओं की उनकी समझ को और अधिक समृद्ध किया, जिससे वे इन ग्रंथों का मूल रूप में अध्ययन कर सकोराम कथा: प्रारंभ और विकास फादर द्वारा किए गए अध्ययन "राम कथा: प्रारंभ और विकास" में रामायण की गहरी और विस्तृत जांच की गई है। इस विद्वतापूर्ण अध्ययन में, उन्होंने रामायण की कथा के ऐतिहासिक, सामाजिक और शैक्षिक विकास का विश्लेषण किया है। फादर ने रामायण के विभिन्न संस्करणों की तुलना की है, जिसमें वाल्मीकि द्वारा रचित प्रारंभिक संस्कृत पाठ के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, बांग्ला, ओडिया, मलयालम और अन्य भाषाओं में क्षेत्रीय संस्करणों को भी शामिल किया है। उनका शोध यह स्पष्ट करता है कि रामायण केवल एक धार्मिक पाठ नहीं है; यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर बन चुकी है, जो भारत और दक्षिण एशिया के विभिन्न समुदायों को प्रभावित करती है। बुल्के ने यह भी अध्ययन

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 09 जनवरी - मार्च -2025 Impact factor– 03

किया है कि रामायण की कथा को प्राचीन कथाओं, नृत्य-नाटकों और पारंपरिक गीतों के माध्यम से कैसे आगे बढ़ाया गया है। इस शोध में तुलसीदास के रामचरितमानस और कंबन के कंब रामायण जैसे कार्यों का महत्व भी उजागर किया गया है। इसके अलावा, , बुल्के ने रामायण पर विदेशी शैक्षिक परंपराओं के प्रभाव का भी विश्लेषण किया है, और दिखाया है कि इसका प्रभाव न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में, बल्कि दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों जैसे इंडोनेशिया, थाईलैंड और कंबोडिया में भी महत्वपूर्ण है। बुल्के का शोध धार्मिक व्याख्याओं से परे जाता है, और रामायण को महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों जैसे न्याय, धर्म, वफादारी और सहानुभूति का प्रतीक मानते हुए प्रस्तुत करता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया है कि कैसे इस महाकाव्य ने भारतीय कला, संगीत और रंगमंच को आकार दिया है। यह अध्ययन भारतीय शैक्षिक अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में कार्य करता है और रामायण के वैश्विक महत्व पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। बुल्के का कार्य यह सिद्ध करता है कि रामायण केवल एक कथा नहीं है, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक धरोहर है जो समय और
भौगोलिक सीमाओं से परे है।बुल्के का इंग्लिश-हिंदी शब्दकोश द्विभाषी शब्दकोशविज्ञान में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यह भाषा और संस्कृति के संरक्षण और समझ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्हें अपने अनुसंधान की गंभीरता और गहराई के लिए जाना जाता है। बुल्के, एक बेल्जियन जेसुइट पादरी, भाषाविद और विद्वान, ने हिंदी और इसकी बोलियों का अध्ययन करने में कई वर्ष समर्पित किए। उनका कार्य उन अंग्रेजी बोलने वालों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी का स्रोत है जो हिंदी सीखना या उपयोग करना चाहते हैं। संस्कृति और भाषा के आदान-प्रदान में भूमिका बुल्के के शब्दकोश की एक खासियत यह है कि यह अंग्रेजी और हिंदी जैसी दो अलग- अलग संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम करता है। हिंदी, जिसे दुनियाभर में लाखों लोग बोलते हैं, एक समृद्ध सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा से जुड़ी हुई है, जिसकी जटिलताओं को अंग्रेजी बोलने वालों के लिए समझना कठिन हो सकता है।
1949 में, रांची के सेंट जेवियर कॉलेज में संस्कृत और हिंदी विभाग के प्रमुख के रूप मेंकार्यभार संभाला। हालांकि, शुरुआती समस्याओं के कारण उन्होंने प्रोफेसर बनने की बजायएक विद्वान के रूप में अपने करियर पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। उन्हें 17वीं सदी के हिंदीकवि तुलसीदास में गहरी रुचि थी, जिनकी रचनाओं पर उन्होंने अपनी डॉक्टोरल थीसिस लिखी। बुल्के ने प्रसिद्ध नाटक ब्लू बर्ड को हिंदी में रूपांतरित किया और उसे नील पंची के नाम से प्रस्तुत किया। उन्हें तुलसीदास और उनके भक्ति रचनाओं पर बोलने के लिए अक्सर आमंत्रित किया जाता था, और वह इस कार्य को बहुत उत्साह के साथ करते थे। अपने कार्यों के माध्यम से उन्होंने लोगों को उनके आध्यात्मिक धरोहरों के गहरे मूल्यों से जोड़ा, और उनकामानना था कि तुलसीदास का साहित्य सुसमाचार की शिक्षाओं के लिए एक बेहतरीन परिचय है। 1951 में, उन्होंने भारतीय नागरिकता प्राप्त की और भारत सरकार द्वारा उन्हें हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय आयोग का सदस्य बनाया गया। बिहार में
रहते हुए उन्होंने दरभंगा के चर्च का दौरा किया और "दिव्यात्माओं और माता सीता की महान भूमि – मिथिला" की सराहना की, और भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के बाद उन्होंने "बिहारी" नाम अपनाया। , बुल्के का निधन 17 अगस्त 1982 को दिल्ली में गैंगरीन के कारण हुआ।
बुल्के का हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान- एक नया दृष्टिकोण
बुल्के का हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान उनके अनुवादक और शब्दकोशकार के रूप मे कार्य था। उनका मानना था कि अनुवाद एक शक्तिशाली उपकरण है जो सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है और साहित्यिक धरोहरों को एक व्यापक दर्शक वर्ग के लिए सुलभ बनाता है। बुल्के का हिंदी-इंग्लिश शब्दकोश, "अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश", छात्रों, शोधकर्ताओं और
लेखकों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन गया। इसकी स्पष्टता, व्यापकता और सटीकता ने इसे दशकों तक एक भरोसेमंद संदर्भ बना दिया। यह शब्दकोश उनकी भाषाई सटीकता और दोनों भाषाओं की गहरी समझ का प्रतीक है। अपने शब्दकोशीय कार्य के अतिरिक्त, बुल्के ने कई ईसाई ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया, जिनमें बाइबिल भी शामिल है। उनके अनुवाद सांस्कृतिक और भाषाई सूक्ष्मताओं के प्रति संवेदनशील थे, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि पाठ भारतीय पाठकों के साथ गूंजे और उनका मूल अर्थ बरकरार रहे।

**हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में समर्थन-**

बुल्के हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में समर्थन देने के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने हिंदी को भारत के विविध भाषाई परिप्रेक्ष्य में एक एकता की ताकत के रूप में देखा और इसके अपनाने और विकास को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया। उनके प्रयास उस व्यापक आंदोलन के साथ मेल खाते थे जो हिंदी को एक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए था, जो क्षेत्रीय विभाजन को पाट सके और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दे सके। सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची में हिंदी के प्रोफेसर के रूप में, बुल्के ने अनगिनत छात्रों को मार्गदर्शन दिया और उन्हें भाषा के प्रति अपनी दीवानगी से प्रेरित किया। उनकी शिक्षा हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक और दार्शनिक समृद्धि पर आधारित थी, जिससे छात्रों को इसकी भूमिका को समझने और भारत की पहचान को आकार देने में इसके महत्व को सराहने के लिए प्रेरित किया।

**आध्यात्मिक और अंतरधार्मिक जुड़ाव**-बुल्के का हिंदी साहित्य से जुड़ाव उनके आध्यात्मिक खोज और अंतरधार्मिक संवाद के प्रति प्रतिबद्धता में गहरे रूप से निहित था। उनका मानना था कि साहित्य सार्वभौमिक सत्य की खोज करने और विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा देने का एक माध्यम हो सकता है। उनकी रचनाएँ अक्सर ईसाई और भारतीय दार्शनिक विचारों का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत करती थीं, जो करुणा, विनम्रता और सत्य की खोज जैसे साझा मूल्यों पर बल देती थीं। भारतीय महाकाव्यों और शास्त्रों के साथ जुड़कर, बुल्के ने यह दिखाया कि कैसे आध्यात्मिकपरंपराएँ एक-दूसरे को समृद्ध और पूरक बना सकती हैं।

**विरासत और प्रभाव** -फादर बुल्के का हिंदी साहित्य में योगदान भारतीय बौद्धिक और सांस्कृतिक जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ गया है। उन्हें एक विद्वान, शिक्षक और सांस्कृतिक दूत के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने हिंदी और भारतीय परंपराओं के प्रति अपनी प्रेमभावना केमाध्यम से पूर्व और पश्चिम के बीच पुल का काम किया। बुल्के का कार्य हिंदी साहित्य के शोधकर्ताओं और छात्रों, साथ ही अंतरसांस्कृतिक अध्ययन में रुचि रखने वालों को प्रेरित करता है। उनका जीवन भाषा की परिवर्तनकारी शक्ति और साहित्यिक शोध के स्थायी महत्व का प्रतीक है, जो समझ और एकता को बढ़ावा देने में सहायक है।

************************

# हिंदी साहित्य में समरसता

**शशि प्रकाश पाठक**
शोधार्थी, हिंदी विभाग
बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ
ईमेल--shashiqwer177@gmail.com मो. नं-- 7905394161

काल के प्रवाह में विचलन स्वाभाविक है। आज हमें समता, समानता ,समरसता और अधिकारों की बात करनी पड़ रही है। सुधारों की बात करनी पड़ रही है, क्योंकि विचलन ने हमें उन मूल्यों से विरत कर दिया, जहां एक आदमी को ईश्वर बन जाने की स्वतंत्रता थी। आदमी का मनुष्य बनना और फिर देवत्व की तरफ बढ़ना साधारण नहीं है। उसके मूल्यनिष्ठ होते जाते की मुनादी है, घोषणा है। ऋषि कहते हैं-'मर्नु भवः' यानि मनुष्य बनो। यही बात बाद में गालिब के मुंह से निकलती है -

**यूं तो मुश्किल है हर काम का आसां होना**
**आदमी को मयस्सर नहीं इंसा होना।**

यानि जन्म से आप 'आदमी' हो सकते हैं किंतु 'मनुष्य' या 'इंसान' एक प्रक्रिया से गुजरने के बाद ही आप बनते हैं।वेदों में कहा गया है 'माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या' अर्थात् भूमि मेरी माता है और हम सभी उसके पुत्र हैं। आदिकाल से ही पृथ्वी को मातृभूमि की संज्ञा दी गई है। भारत के राष्ट्र जीवन का आधार सदा आध्यात्मिकता रहा है। सर्वजन में एक ही तत्व को देखने वाली यह संस्कृति बेजोड़ हैं। इस संस्कृति के समाज विकास में हरेक का अपना महत्व लक्षित है। इसी विश्वास के आधार पर यहां युगानुकुल समाज रचना का विकास हुआ। समता, ममता और समरसता हमारे भारतीय लोकजीवन का अभिन्न अंग है। हम जिस देश में रहते हैं उसके ऋषि कहते हैं- 'सर्वभूतहिते रताः।' प्रकृति से साथ हमारा संवाद बहुत पुराना है। इसलिए हमने अपनी समूची सृष्टि को स्वीकारा। किसी को विरोधी नहीं माना। पेड़,पहाड़, नदियां, समुद्र, वनस्पतियां, जलचर,नभचर, जीव-जंतु, मनुष्य सबमें ईश्वर का वास मानने वाले हम ही हैं। हम ही कह पाए जो जड़ में है वही चेतन में है। कण-कण में ईश्वर का वास मानने वाली संस्कृति ही भारतीय संस्कृति है। सामाजिक समरसता, समानता व सामासिकता, न्याय और बंधुत्व आदियुग से मानव की आकांक्षा रहे हैं । आज भी उनके लिए मनुष्य हिंसक- अहिंसक तरीकों से जूझता रहता है, बावजूद इसके आज भी वे समाज के लिए स्वप्न ही बने हुए हैं।विश्व-भर के साहित्य को ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि सभी महान साहित्यकारों के साहित्य में उनके अपने समय का समाज प्रतिबिम्बित होता है। साहित्य एक ऐसा महत्त्वपूर्ण साधन है जिसमें समाज विशेष की प्रगति तथा पतन की मनोस्थिति सभी कुछ देखी जा सकती है। जिन्सवर्ग के अनुसार -"समाज व्यक्तियों का वह समूह है जो किन्हीं सम्बन्धों या तरीकों द्वारा संगठित है और जो कि उन्हें उन दूसरे लोगों से अलग करता है जो इन सम्बन्धों में शामिल नहीं होते अथवा जो उनसे व्यवहार में भिन्न हों।" हिंदी साहित्य की भी आधारभूमि तत्कालीन मानव समाज ही है। इनके गद्य व पद्य में मानव और समाज का चित्रण पूर्ण रूप से रचनात्मक और कलात्मक भाषा में हुआ है।

साहित्य में भी समानता और न्याय की अभिव्यंजना सनातन से ही रही है। हर युग में, हर भाषा के साहित्य ने इन्हें संवेदना के केंद्र में रखा है। हिंदी साहित्य के आरंभिक काल में ही हम इसकी गंभीर अभिव्यंजना को देख पाते हैं। हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति की प्रकृति सामासिक रही है, क्योंकि यहां कई बोलियां, उपबोलियां और क्षेत्रीय विशेषताएं समरस हुई हैं। वैविध्य और समरसता ही इस सांस्कृतिक विकास प्रक्रिया का मूलकेंद्र हैं। हिंदी साहित्य का आदिकालीन साहित्य इसी सामासिक समरूपता के आरंभिक दौर का उत्कृष्ट उदाहरण हैं । डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ' हिंदी साहित्य और संवेदना के विकास' में कहते हैं -'वस्तुत: किसी साहित्य के आरंभ की पहचान वहां से की जा सकती है जहां वह धार्मिक कर्मकांड और रहस्य भावना से क्रमशः उन्मुक्त हो रहा हो।

इस दृष्टि से हिंदी में सिद्धो- नाथों से लेकर कबीरदास तक यह प्रक्रिया देखी जा सकती हैं। वैदिक साहित्य में एक ओर, और नाथ-सिद्धों की बानियों में दसरी ओर, धर्म और साहित्य एक दूसरे में घुले-मिले दिखाई देते हैं। सिद्धों-नाथों के युग से निकल कर हिंदी संतों में साहित्य का प्रथम उन्मीलन उत्तर में दिखाई देता है, जिसका प्रतिरूप दकनी में पुरानी खड़ी बोली का सूफ़ी साहित्य है। संतो के यहां या तो रहस्यानुभूति के गूढ़ स्वर हैं,या फिर नए व्यवहारिक जगत में प्रवेश करने पर हिंदू- मुस्लिम और ऊंच-नीच के विद्वेष को मिटाने का यत्न है,जो विरोधों के शमन का बड़ा गहरा रचनात्मक उपक्रम है।'

जाहिर है कि यह असांप्रदायिक सामासिकता आदिकाल के मूल में है। राहुल सांकृत्यायन जी के अनुसार हिंदी परंपरा के पहले कवि सिद्ध सरहपा जी -भोग में निर्वाण और काया में तीर्थ देखते है। चंद और विद्यापति क्रमशः वीर और श्रृंगार तथा भक्ति और श्रृंगार को समरस करते हैं। नाथ परम्परा राजाओं को योगी बनाती चलती है चटपटनाथ की सबदी है 'तांबा-तुंबा ये दुई सूचा! राजा ही तैं जोगी ऊंचा।' यह सामासिकता जैन कवियों में कम दिखाई पड़ती है क्योंकि वे अधिकतर धार्मिक रहे हैं। इस संदर्भ में भारतीय साहित्य के भक्ति परम्परा के प्रमुख स्तंभों में से एक मैथिली के सर्वोपरि कवि विद्यापति का उल्लेख गंभीरतापूर्वक किया जा सकता है। इन्हें वैष्णव और शैव भक्ति के सेतु के रूप में भी स्वीकार किया गया है। मिथिला के लोगों को 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' का पाठ पढाके जन चेतना को उभारा है।

उधर दूसरी तरफ अमीर ख़ुसरो जी के रचनाकर्म से यह आभाष होता है कि हिंदी साहित्य का चरित्र आरम्भ से ही एकदम असांप्रदायिक रहा है। हिंद मुस्लिम का जहां सीधा द्वंद चित्रित किया है वहां भी वह वीरों का युद्ध रूप में ही आता है। उनके कृतित्व में किसी एक पक्ष के प्रति घृणा भाव नहीं है। साहित्य और संगीत की जरूरतें भी खुसरो के यहां घुल-मिल सी गई हैं।

भारतीय जीवन में एक काल ऐसा आया जब भारतीय उपमहाद्वीप पर इस्लाम के कट्टर अनुयायियों का आक्रमण हुआ और भारत की सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था में उथल-पुथल हो गयी।काल-प्रवाह में हमारी एकात्म भावना, सामाजिक समरसता में आततायियों के प्रहारों की धुल जम गयी। तब भारतीय संत परम्परा ने पुनः इसे जीवंत करने का कार्य किया काल के प्रवाह में उत्पन्न मनुष्य–मनुष्य के मध्य भेदभाव को मिटा कर समरस सामाज स्थापना का प्रयास किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में – "इस्लाम के प्रवेश ने धर्मगत एवं समाज व्यवस्था को पूरी तरह से झकझोर दिया था। उस समय भक्त कवियों की भक्ति ने दो रूपों में आत्म प्रकाश किया। एक सगुण साधना, दूसरी निर्गुण साधना। पहली साधना ने हिन्दू जाति की बाह्याचार एवं शुष्कता

को आन्तरिक प्रेम में सींचकर रसमय बनाया और दूसरी साधना ने बाह्याचार की शुष्कता को दूर करने का प्रयत्न किया।"इस काल खंड में अनेक प्रकार के सामाजिक तथा राजनीतिक परिवर्तन के कारण समाज में विघटन और विभाजन ने जोर पकड़ा, इसी से जातियों औ उपजातियों की संख्या में वृद्धि हो गई। संत कवियों ने जन–जन में छुपे एकात्म भाव को जगाने का प्रयास किया,लोक साहित्य की रचना की। सन्त साहित्य का उद्देश्य "लोक" में फैले अविश्वास, अनास्था एवं कुरीतियों को दुर करना था। संतो ने मानवीय भावनाओं को उजागर करने का कार्य किया। भारतीय जीवन में निहित सद्भावना, समरसता को पुनः स्थापित करने का महती प्रयास किया।

संत नामदेव दर्जी जाति के थे। इन्होंने सभी प्राणियों के अंदर एक ही आत्मा का दर्शन किया और सामाज में जाति – पाँति से ऊपर उठ समरस सामाज निर्माण की प्रेरणा दी वे कहते हैं :

**सर्वभूतों में हरि यही एक सत्य।**
**सर्व नारायण देखते हरि।।**

अर्थात 'सभी जीवों में ईश्वर ही सत्य हैं। प्रभु सभी को देख रहे हैं। संत शिरोमणि कबीरदास ने जन्म से ऊँच–नीच माने जाने वाली परम्परा पर पुर-जोर प्रहार किया और इसका उपहास भी उड़ाया। सभी मनुष्यों के जन्म की विधी एक ही हैं, चाहे वे किसी भी वर्ण के क्यों न हों। एक ही रक्त एवं शरीर के अंग सब एक ही समान हैं। एक ही बूँद से समस्त मानव सृष्टि की गई हैं, फिर ब्राह्मण और शुद्र का अंतर कैसा? कहते है-

**एकै त्वचा हाड़ मल मूत्रा, एक रुधिर एक गूदा।**
**एक बूँद से सृष्टि रची हैं, को ब्राह्मण को शूद्रा ।।**

मानवतावाद के पक्षधर कबीर जी कहते है कि भगवान की दृष्टि में सब बराबर हैं न कोई छोटा हैं न कोई बड़ा हैं। उनकी दृष्टि में भगवान की भक्ति में जाति की आवश्यकता नहींहैं। भक्ति में मुल्लाओं और पंडितों की आवश्यकता नहीं हैं कहते है -

**जो मोहि जाने तोहि मैं जानौं।**
**लोक वेद का कहा न मानौं।।**

रैदास एक चर्मकार परिवार में जन्म पाकर अपनी आध्यात्मिक–साधना, चरित्रबल तथा विनयशील स्वभाव के कारण ईश्वरभक्ति का व्यापक साहित्य लिखा, किंतु अपने परिवारिक कार्य को लेकर कोई ग्लानि नहीं थी। वे लिखते हैं__

**"जाति एक जाने एक ही चिन्हा,**
**देह अवमन कोई नही भिन्ना।**
**कर्म प्रधान ऋषि-मुनि गांवें,**
**यथा कर्मफल तैसहि पावें।**
**जीव कै जाती वरन कुल नांहि,**
**जाती भेद है जग मूरखाई।**
**नीति-समृति-शास्त्र सब गावें,**
**जाती भेद शउ मूढ़ बतावें।"**

अर्थात् 'जीव की कोई जाति नहीं होती' वे ऋषि मुनियों की वाणी बताते हुए कहते हैं जब सबमें प्रभु है तो जाति भेद कैसा। सूरदास की भक्ति पद्धति में ऊँच – नीच का भेद नहीं हैं। उनका मानना हैं कि भगवान् के दरबार में जाति नहीं पूछी जाती :

**'जाति–पाँति कोई पूछत नाहीं श्री पति के दरबार।'**

स्वयं श्री वल्लभाचार्य तथा भक्ति मार्ग के अन्य आचार्यो ने भी इनमें ऊँच-नीच का भेद नहीं माना। भक्त सूरदास ने ईश्वरभक्ति में कोई भेद मानने से स्पष्ट मना कर दिया। 'सूरसागर के प्रथम स्कंध में वे कहते हैं:

**'जाति पांति कुल-कानि न मानत, वेद पुराननि साखै।'**

सामाजिक समरसता के पुरोधा गोस्वामी तुलसीदास ने अपने साहित्य में सामाजिक समरसता के लिए कई प्रयास किए: तुलसीदास ने रामचरितमानस के ज़रिए समाज में टूटन और जड़झरहट को दूर करने की कोशिश की,उन्होंने राम की कथा के ज़रिए राजनीतिक, सामाजिक, और पारिवारिक आदर्शों को स्थापित किया। तुलसीदास ने राम और शिव में परस्पर भक्तिभाव चित्रित करके वैष्णवों और शैवों में विरोध को खत्म करने की कोशिश की।तुलसीदास ने समाज में समरसता लाने के लिए समन्वयवात्मक दृष्टिकोण अपनाया। इन्होंने समाज में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हुए समाज में दैहिक, दैविक, और भौतिक किसी भी प्रकार के कष्टों को खत्म करने की कल्पना की।

तुलसीदास ने वर्णाश्रम आधारित समाज को आदर्श समाज बताते हुए,भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप संयुक्त परिवार को अधिक महत्व दिया।तुलसीदास ने राम के चरित्र में शील, शक्ति, और सौंदर्य को विकसित करके लोकसंग्रह की साधना की।

इसी प्रकार गुरुनानक, जायसी एवं अन्य संत कवियों ने अपने मन – वचन–कर्म से भारतीय सामाज को समता ममता व एकत्व के सूत्र में बांधकर समरस समाज निर्माण की व्यापक चेष्टा करते दिखाई देते हैं।

साहित्य किसी भी समाज का आईना होता है। साहित्य के आलोक से समाज में चेतना का संचरण होता है। उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी को हिंदी साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी कहा जा सकता है। इस शताब्दी के साहित्यकारों ने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज सुधार को संघर्ष का विषय बनाया। मध्यकालीन भारतीय समाज की रूढ़िवादिता,संकीर्णता,अंधविश्वासी चेतना को पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान के आलोक में झकझोर कर जगाने का कार्य इस दौर के विद्वानों और साहित्यकारों ने किया।भारतेन्दु ने सामाजिक दोषों, रूढ़ियों, कुरीतियों का घोर विरोध किया है ।उन्होंने धर्म के नाम पर होने वाले ढोंग की पोल खोल दी है। छुआछूत के प्रचार के प्रति क्षोभ के स्वर उनकी रचनाओं में सहज ही दिखाई पड़ते हैं।भारतेन्दु ने 'भारत-दुर्दशा' नाटक में वर्णाश्रम धर्म की संकीर्णता का इन शब्दों में विरोध करते हुए कहते हैं "बहुत हमने फैलाए धर्म, बढ़ाया छुआछूत का कर्म।"तो वहीं प्रतापनारायण मिश्र जी की दृष्टि 'मन की लहर' में बाल-विधवाओं की करुण दशा की ओर गई है 'कौन करेजो नहि कसकत सुनि विपति बालविधवन की।' मिश्र जी स्त्रियों की शिक्षा के पक्षपाती हैं, बाल-विवाह के विरोधी तथा विधवाओं के दुख से द:खी है।

साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। कभी कभी साहित्यकार या लेखक शोषित वर्ग से इतना करीब होता है कि उसके कष्टों को वह स्वयं भी अनुभव करने लगता है। मुंशी प्रेमचंद के एक कथन को यहां उद्धृत करना उचित रहेगा..."जो दलित है, पीड़ित है, संत्रस्त है,उसकी साहित्य के माध्यम से हिमायत करना साहित्यकार का नैतिक दायित्व है।" प्रेमचंद का किसान - मजदूर चित्रण उस पीड़ा और संवेदना का प्रतिनिधित्व करता है जिनसे होकर आज भी अविकसित एवं शोषित वर्ग गुजर रहा है।

साहित्य की महती भूमिका होती है कि वह कितनी सूक्ष्मता और मानवीय संवेदना के साथ मानवीय अवयवों को उद्घाटित करता है। साहित्य, समाज की उन्नति के साथ भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। हिंदी साहित्य समाज की उन्नति में अमीर ख़ुसरो से लेकर तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, प्रेमचंद, भारतेंद,निराला नागार्जुन तक की श्रृंखला के रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूर्ण योगदान दिया है। व्यक्तिगत हानियां उठाकर भी इन्होंने शासकीय मान्यताओं के खिलाफ़ जाकर समाज निर्माण हेतु कदम उठाएं। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के रचनाकारों ने अपने समय से आगे की रचना की। यह उनकी दूरदृष्टि ही कही जा सकती है कि उन्होंने भविष्य की

परिस्थितियों को पहले भांप लिया था और उस समय ही हिंदू-मुस्लिम,जातिगत एकता व बंधुत्व पर अपनी रचना की। अपने रचनाकर्म के माध्यम से जनसामान्य को जागरूक करने का प्रयास करते हुए समता,ममता व समरसता की बात करते हैं। सामाजिक असंतुलन के आज के विभ्रमकारी दौर में हमें इन साहित्यकारों के रचनाओ को फिर से पढ़ने की जरूरत है क्योंकि इसमें सामाजिक समरसता, समानता ,न्याय और सामासिकता की एक अदभुत छटा निखर कर आती है जो हिंदी साहित्य की सच्ची प्रस्तावना है।

*****************

**संदर्भ ग्रंथ:-**


1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्य का आदिकाल*, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ,पटना,1952
2. बलदेव उपाध्याय, *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, शारदा संस्थान, वाराणसी,1969
3. कृष्ण चंद्र,*भारतीय संस्कृति*,सुरभारती प्रकाशन, दिल्ली,1992
4. गोपाल कृष्ण, *भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता*, मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी,2015
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, *हिंदी साहित्य का इतिहास*, लोकभारती प्रकाशन,2013
6. डॉ रामधारी सिंह दिनकर,*संस्कृत के चार अध्याय*, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,1946
7. शिव कुमार मिश्र,*भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य*, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
8. शंभूनाथ (सं.), *जातिवाद और रंगभेद*, वाणी प्रकाशन,1990
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद


# 'श्रृंखला की कड़ियां'निबंध में नारी चेतना

**अंजली कुमारी**
शोध छात्रा हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश मो.7018930339

**शोध सारांश**- भारतीय समाज में स्त्री को सामान्य मानव के बजाय त्याग एवं बलिदान की मूर्ति और देवतुल्य व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जाता रहा है। स्त्री से एक पुत्री, बहन,पत्नी या किसी अन्य रूप में सदैव अपेक्षा की जाती है कि वह अपने अधिकारों और इच्छाओं की बलि देकर समझौता करे।'श्रृंखला की कड़ियां' निबंध में महादेवी वर्मा ने स्त्रियों के होते आ रहे अन्याय शोषण और विभिन्न परिस्थितियों को आधार बनाकर नारी चेतना संबंधी अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। उनके निबंध में विद्रोह पूर्ण स्वर में समाज में व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता का विरोध किया है जो समाज के ठेकेदारों के असंवेदनशील शोषण वृत्ति का परिणाम है।पुरुष प्रधान समाज में नारी से संबंधित सामाजिक विषमता, शिक्षा की कमी के कारण नारियों में अपने अधिकारों के प्रति अज्ञानता,लोकलाज , स्त्रीत्व के नाम पर नारी का मानसिक और शारीरिक शोषण ,आरक्षण के नाम छलावा, लेडीज़ फर्स्ट आदि ऐसे विषय है जिन पर लेखिका का ध्यान आज से नौ दशक पूर्व केंद्रित हुआ। इसलिए लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी चेतना का जो आह्वान किया वह आज भी समस्त नारी जाति के लिए अनुकरणीय है।

**बीज शब्द** - लोकलाज ,अज्ञानता, उत्तराधिकार, अस्तित्व, मानसिकता, भारत, नवजागरण।

**प्रस्तावना** - हिंदी साहित्य की छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा सन 1931ईस्वी में प्रकाशित "श्रृंखला की कड़ियां" निबंध संग्रह में भारतीय समाज में स्त्री विमर्श ,समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण, नारी चेतना और विमर्श और मानवीय संबंधों के विश्लेषण को प्रस्तुत किया है जो उनके गहन आत्मिक अनुभूति का परिचायक है। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक ,आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों से नारी जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। परिस्थितिया बदलने के साथ शासन व्यवस्था ने नारी की जीवन शैली में भी बदलाव लाने का प्रयास किया है जिसके परिणामस्वरूप आज नारी का अस्तित्व भी बदला है। 21वीं शताब्दी में नारी विमर्श साहित्यकारों की लेखनी और चर्चा के केंद्र में है। परंतु अधिकतर साहित्यकारों ने बिना किसी आंदोलन के नारी उत्पीड़न और चेतना को अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।महादेवी वर्मा ने जीवंत नारियों के संघर्ष ,सुख दुख,आशा निराशा आदि मनोभावों का साक्षात्कार उन्हें अपने अंतःकरण से किया है। उनका कहना था" संसार परिवर्तनशील है ,यहां बड़े-बड़े साम्राज्य बह गएं, संस्कृतियां लुप्त हो गई ,जातियां मिट गई,रीति रिवाज़ बदल गए, रूढ़ियां टूट गई ।सब कुछ बदल गया पर स्त्रियों की दशा नहीं बदली है।"[1] लेखिका के जीवन काल में जिन स्त्रियों के साथ संपर्क हुआ उनकी दारुण व्यथा का प्रत्यक्ष अनुभव किया और पुरुष प्रधान समाज में स्त्री विरोधी मानसिकता ने उन्हें व्यथित किया। भारतीय नारी जीवन भर विषम परिस्थितियों का सामना करती हुई स्वयं को समर्पण करने पर भी समाज में उपेक्षित रही। महादेवी वर्मा लिखती है कि "मैं भारतीय नारी की विषम परिस्थितियों को अनेक दृष्टि बिंदुओं से देखने का प्रयास किया है। अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूँ अतः इन निबंधों

में उग्रता की गंध स्वाभाविक है ,परंतु ध्वंस के लिए ध्वंस के सिद्धांत में मेरा कभी विश्वास नहीं रहा। मैं तो सृजन के उन प्रकाश तत्वों के प्रति निष्ठावान हूं जिनकी उपस्थिति में विकृति अंधकार के समान विलीन हो जाती है। उन्होंने नारी चेतना के संदर्भ में पुनः उल्लेख किया है कि भारतीय नारी भी जिस दिन अपने संपूर्ण प्राणप्रवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं ।उसके अधिकारों के संबंध में यह सत्य है कि वह भिक्षावृत्ति से न मिले हैं न मिलेंगे।"[2] जिस समाज में विसंगतियां, रूढ़िवादी परंपराओं ,मानसिक विकृतियों का सामना करने में जितनी अधिक ऊर्जा सक्रिय होती है ।वह समाज उतना ही चेतना युक्त होता है। चेतना के संदर्भ में रत्नाकर पाण्डेय लिखते हैं"चेतना सामाजिक वातावरण से विकसित होती है, वातावरण के प्रभाव से व्यक्ति नैतिकता और उचित व्यवहारिकता प्राप्त करता है ।चेतना और मनुष्य के सामाजिक चरित्र में मौलिक संबंध है क्योंकि मनुष्य केवल चेतना से उत्पन्न प्रेरणा के कारण ही कोई भी कार्य करता है ।चेतना वह एक विशेष गुण है जो मनुष्य को जीवित बनाती है और चरित्र वह सामाजिक संगठन है, जिसके द्वारा वास्तविकता व्यक्त होती है और जीवन के विभिन्न कार्य चलते रहते हैं ।किसी मनुष्य की चेतना उसकी व्यक्तिगत संपत्ति न होकर सामाजिक उपक्रम का परिणाम होती है।"[3] लेखिका के मन में यह प्रश्न बार-बार कौंधता है कि स्त्री के मातृत्व को महिमा मंडित करने वाला तथा यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता आदि शब्दों के छलावे में भ्रमित करने वाला समाज नारी के प्रति संवेदनहीनता और मानवीयता की सारी सीमाएं कैसे लग सकता है? स्त्री विमर्श की इस यात्रा में जब लेखिका का जब नारी की इस विषाक्त यात्रा से साक्षात्कार होता है तो नारी चेतना के असंख्य प्रश्न अपने आप उभरने लगते हैं। "नारीत्व का अभिशाप" नामक निबंध में महादेवी वर्मा लिखती हैं कि " क्या नारी के बड़े से बड़े त्याग को, आत्म निवेदन को, संसार ने अपना अधिकार नहीं किंतु उसका अद्भुत दान समझकर नम्रता से स्वीकार किया है ?कम से कम इतिहास तो नहीं बताता कि उसके किसी बलिदान को पुरुष ने उसकी दुर्बलता की अतिरिक्त कुछ और समझने का प्रयत्न किया।"4 प्राचीन समय में अधिकतर समाज में स्त्री की आर्थिक निर्भरता ने पुरुष स्त्री के संबंधों को मालिक और दासी के संबंधों के रूप में परिभाषित किया है। समाज में संपत्ति का उत्तरदायित्व मिलने से पुरुष को एक प्रकार का उत्तराधिकार तो मिल गया था ।शारीरिक शक्ति अधिक होने तथा सामाजिक नियमों का निर्माता होने के कारण अधिकार मिलना भी स्वाभाविक था। इस प्रकार भारतीय समाज में एक पुत्री, बहन ,पत्नी, माता आदि का अस्तित्व होने के साथ -साथ नारी सदैव आर्थिक निर्भरता दृष्टि से परामुखोपेक्षिणी रही है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में नारी को सहचरी, अर्धांगिनी , पत्नी जैसे असंख्य दर्जा प्राप्त हुआ है ,लेकिन वास्तविक रूप में वह आज भी पुरुष के समान दर्जा प्राप्त न कर सकी।"समय की गति के अनुसार न बदलने वाली परिस्थितियों ने स्त्री के हृदय में जिस विद्रोह का अंकुर जम जाने दिया है उसे बढ़ने का अवकाश यहीं घर बाहर की समस्या दे रही है। जब तक समाज का इतना आवश्यक अंग अपनी स्थिति से असंतुष्ट तथा अपने कर्तव्य से विरक्त है, तब तक प्रयत्न करने पर हम अपने सामाजिक जीवन में सामंजस्य नहीं ला सकते। केवल स्त्री के दृष्टिकोण से ही नहीं, वरन् हमारे सामूहिक विकास के लिए यह भी आवश्यक होता जा रहा है कि स्त्री घर की सीमा के बाहर भी अपना विशेष कार्य क्षेत्र चुनने को स्वतंत्र हो।"5 इस प्रकार लेखिका ने "श्रृंखला की कड़ियां" निबंध संग्रह में सदियों से चली आ रही स्त्रियों की अस्तित्व को पुनर्स्थापित कर नारी चेतना का संदेश दे कर मुख्य धारा के साथ जोड़ने का प्रयास किया है।

यद्यपि आधुनिक नारी का संघर्ष पुरुष से नहीं अपितु समाज में व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता से है ।आज की नारी न पुरुष की छाया बनकर जीना चाहती है और न ही वह गुलामी सा जीवन व्यतीत करना चाहती है ।जिस प्रकार पुरुष को घर, परिवार, समाज में जो स्थान प्राप्त है, आधुनिक नारी भी प्रत्येक क्षेत्र में समानता का दर्जा प्राप्त करना चाहती है।" जीवन के विकास के लिए दूसरों से सहायता लेना बुरा नहीं ,परंतु किसी को सहायता दे सकने की क्षमता न रखना अभिशाप है ।सहयात्री वे कहे जाते हैं जो साथ चलते हैं, कोई अपने बोझ को सहयात्री कह कर अपना उपहास नहीं कर सकता। भारतीय पुरुष ने स्त्री को या तो सुख के साधन के रूप में पाया या भार रूप में ,फलता वह उसे सहयोगी का आदर न दे सका।"[6]

भारतीय समाज में विषम अर्थ विभाजन भी नारी शोषण का मूल कारण रहा है। पुरुष प्रधान समाज में अपने स्वामित्व के लाभ से उसे परावलंबी भी बना दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में नारी की स्थिति द्वंद ग्रस्त रही है जिसके परिणाम स्वरुप भारतीय नारी समाज में सदैव हाशिए पर रही है। लेखिका के लिए यह चिंता का विषय है कि आज भी व्यवस्थापकों द्वारा आरक्षण रूपी शब्दों में छली जा रही है ।इसलिए प्रतिभाशाली शिक्षित स्त्रिया अपनी प्रतिभा से परिवार और समाज में सामंजस्य स्थापित कर इस छलावे से मुक्ति पा सकती है। इस संदर्भ में लेखिका को यह कहने में कोई संकोच नहीं कि"स्त्रियों के उज्जवल भविष्य को अपेक्षा रहेगी कि उसके घर और बाहर में ऐसा सामंजस्य स्थापित हो सके, जो उसके कर्तव्य को केवल घर या केवल बाहर ही सीमित न कर दें। ऐसी सामंजस्यपूर्ण स्थिति के उत्पन्न होने में अभी समय लगेगा और संभव है यह मध्य का समय हमारी क्रमागत सामाजिक व्यवस्था को कुछ डांवाडोल भी कर दे, परंतु निराशा को जन्म देने वाले कारण नहीं उत्पन्न होने चाहिए।"[7]

किसी भी युग में नवीन चेतना, नवजागरण, आंदोलन सामान्यतः सामाजिक समस्याओं एवं रूढ़िवादी परंपराओं को लेकर किए गए हैं ।भारत जैसे धार्मिक सांस्कृतिक देश में स्त्रियों से संबंधित समस्याओं के नए रूप में उत्पन्न होते रहे हैं ,जैसे दहेज प्रथा, अनमेल विवाह,बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या,आर्थिक एवं सामाजिक विषमता को लेकर पूरे देश में चलाए जा रहे आंदोलन नारी चेतना का जीता जागता प्रमाण हैं। सिमोन की पुस्तक"दि सेकंड सेक्स"उस घुटन भरी स्त्री के हजारों वर्षों की परिस्थिति का जीता जागता दस्तावेज है ,जिसमें उसका मनचाहे रूप में पुरुष ने शोषण किया है। इसलिए सिमोन स्त्री और नीग्रो की तुलना करती है। समाज जड़ नहीं चेतन है। यह चेतना ही समझ में बदलाव लाती है। जो समाज समय के साथ नहीं बदलते, वे ऊर्जाहीन हो जाते हैं।"[8] महादेवी वर्मा के लिए नारी शोषण की कड़वी सच्चाई को आत्मसात करना अत्यंत दुष्कर है। वह समाज में माता-पिता का अपनी ही पुत्री के प्रति पालन पोषण, शिक्षा , विवाह,उत्तराधिकारी से संबंधित दृष्टिकोण को लेकर लेखिका के हृदय में टीस उत्पन्न करती है। इसके लिए वह दृष्टिकोण और परिस्थितियों को दोष देती है।"यदि हम शताब्दियों से केवल सिद्धांतों का निर्जीव भार लिए हुए शिथिल हो रहे हैं तो हमारा और हमारी परिस्थितियों का दोष है।"[9] पितृ सत्तात्मक समाज में पुरुष यह कैसे भूल जाता है कि नई आज भी आज्ञाकारिणी पुत्री, बहन ,पतिव्रता पत्नी और त्यागमयी माता होने के साथ एक मनुष्य भी है। "स्त्री किस प्रकार अपने हृदय को चूर चूर कर पत्थर की देव प्रतिमा बन सकती है, यह देखना हो तो हिंदू गृहस्थ की दुधमुँही बालिका से शापमयी युवती में परिवर्तित होती हुई विधवा को देखना चाहिए जो किसी अज्ञात व्यक्ति के लिए अपने हृदय की ,हृदय के सामान् इच्छाएं

कुचल कुचल कर निर्मूल कर देती है ,सतीत्व और संयम के नाम पर अपने शरीर और मन को आमानुषिक यंत्रणाओं के सहने का अभ्यस्त बना लेती है।"10 भारतीय परिवेश में नारी का व्यक्तित्व कर्तव्यों , रूढ़िवादी परंपराओं , सामाजिक मान्यताओं के बंधन में बंधे रहने के कारण नारी चेतना का विकास नहीं हुआ ।उन्हें बचपन से इस प्रकार की शिक्षा दी गई कि उसे अपने परिवार की मान्यताओं, परंपराओं ,आदर्शों को ही अपने जीवन में स्वीकार करना है ।जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री सब कुछ सहन करने के लिए तैयार रही मानो सहनशीलता ही उसका आभूषण है। वास्तव में नारी ही परिवार का मूल केंद्र है ,जहां उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। भविष्य में उसे किस प्रकार उत्तरदायित्व एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा यह उसे परिवार के रूढ़िवादी सांचे में ही समझाया जाता है। इसलिए भारतीय समाज में नारियों को अपने अधिकारों के विशाल फलक से अलग रखा जाता है ताकि उनकी महत्वाकांक्षाएं फलीभूत नहीं हो सके ।ऐसी स्थिति में नारी के अस्तित्व का मैं कुंठित होकर रह जाता है। स्त्री पुरुष की प्रकृति में अंतर होने के परिणाम स्वरूप पुरुष ने स्त्री को अपने साथ कभी संघर्ष होने ही नहीं दिया, अन्यथा आज मानव जाति की अलग कहानी हमारे सामने होती है। नई चेतना अपनी पहचान एवं नारी अस्मिता का बोध कराती है और अपने अपनी अस्तित्व बनाने की प्रेरणा भी देती है। चेतना नारी को विभिन्न परिस्थितियों को समझने की समझ भी देती है जिससे वह अपने हित और अहित को लेकर जागरूक हो सके ।यही कारण है क्या आधुनिक शिक्षित हुआ चेतनशील नारी रूढ़िवादी परंपराओं ,अंधविश्वासों, धार्मिक मान्यताओं आदि का खंडन कर रही है। यदि लेखिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विश्लेषण करते हैं तो प्रतीत होता है कि भारतीय संस्कृति ने स्त्री को शिक्षित होने की जहां प्रेरणा दी वहां नारी स्वावलंबी बनी ।आर्थिक स्वतंत्रता,समानता ने स्त्री की जीवन शैली को परिवर्तित कर दिया ।सार रूप में कहा जाए तो वैश्वीकरण के इस दौर में नारी चेतना को एक नई पहचान दी है|

**निष्कर्ष** - इस प्रकार "श्रृंखला की कड़ियां निबंध" में महादेवी वर्मा ने नौ दशक पूर्व नारी को समाज की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में देखने की जो अंतर्दृष्टि दी है वह समस्त नारी जाति के लिए प्रेरणा स्रोत है।इनके संपूर्ण साहित्य पर विचार करने के बाद कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में महादेवी वर्मा को नारी सशक्तिकरण के प्रेरणा स्रोत के रूप में याद की जाती रहेगी।

***************

**संदर्भ सूची -**

1.*प्रतियोगिता दर्पण*, उपकार प्रकाशन, आगरा,अप्रैल 2016, आधी दुनिया का पूरा सच, नीलमणि शर्मा,पृष्ठ 98

2.महादेवी वर्मा, *श्रृंखला की कड़ियां* ,लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद, संस्करण 2012 पृष्ठ 09

3.पांडेय रत्नाकर ,हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना, पांडुलिपि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 158

4.महादेवी वर्मा, *श्रृंखला की कड़ियां,* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,नारीत्व का अभिशाप, पृष्ठ 33

5.महादेवी वर्मा, *श्रृंखला की कड़ियां* ,लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,घर और बाहर, पृष्ठ 53

6.महादेवी वर्मा, *श्रृंखला की कड़ियां* ,लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न,पृष्ठ 90

7.महादेवी वर्मा ,*श्रृंखला की कड़ियां*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,घर और बाहर, पृष्ठ 54

8.वी एन सिंह/जनमेजय सिंह, नारीवाद रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, *स्त्री विमर्श :स्त्री सशक्तिकरण का प्रश्न* ,संस्करण 2024, पृष्ठ 108

9.महादेवी वर्मा ,*श्रृंखला की कड़ियां* ,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,जीने की कला,पृष्ठ 125

10.महादेवी वर्मा ,*श्रृंखला की कड़ियां*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, जीने की कला,पृष्ठ 125

# Comparative Study of Antibacterial Effect of *Trigonella Foenum-Graecum, Boswellia Serrata*, and *Nigella Sativa* on Aggregatibacter Actinomycetemcomitans

**Dr. Payal Jaiswal & Dr. Lalita Goyal**
Department of Biochemistry, M.L.B. Govt. Girls P.G. College, Indore, M.P.

## Abstract

Bacterial resistance to antibiotics has become a major concern, necessitating the exploration of alternative treatments. Herbal medicine offers a promising approach, as many plant species possess antimicrobial properties. *Aggregatibacter actinomycetemcomitans* (*A. a.*) is a Gram-negative coccobacillus responsible for aggressive forms of periodontal disease. This study evaluates the antibacterial efficacy of *Trigonella foenum-graecum* (fenugreek), *Boswellia serrata* (BS), and *Nigella sativa* (NS) against *A. a.* using the broth microdilution method. The minimum inhibitory concentrations (MIC) of fenugreek, BS, and NS were determined to be 374.33 μg/ml, 708.33 μg/ml, and 705 μg/ml, respectively, indicating that fenugreek exhibited the strongest antibacterial effect. These findings suggest that fenugreek could be a potential alternative treatment for periodontitis. Future research should focus on optimizing extraction methods and concentrations to enhance antibacterial potency.

**Keywords:** *Aggregatibacter actinomycetemcomitans,* microdilution, periodontitis, antibacterial potency.

## Introduction

The development of bacterial resistance to antibiotics over time has become a significant concern. As an alternative, herbal medicines have gained attention due to their antibacterial properties. Approximately 70,000 plant species have been identified for their antimicrobial potential, showing efficacy against bacteria, fungi, and viruses. *Aggregatibacter actinomycetemcomitans* (*A. a.*) is a Gram-negative coccobacillus that plays a crucial role in aggressive forms of periodontal disease, particularly localized aggressive periodontitis.

Herbal extracts such as *Trigonella foenum-graecum* (fenugreek), *Boswellia serrata* (BS), and *Nigella sativa* (NS) have been traditionally used for various medicinal purposes (Al-Okbi, S. Y. et al. 2014) Fenugreek has demonstrated benefits in controlling diabetes, reducing cholesterol, aiding digestion, and acting as an antioxidant (Singh, D. et al. 2018). *Boswellia serrata* is well-known for its anti-inflammatory properties, primarily due to boswellic acid, which is effective against inflammatory diseases(Gupta, A,. et al. 2017) . *Nigella sativa* (black cumin) has been widely used in traditional medicine for its diuretic, antipyretic, and anti-inflammatory properties. This study aims to compare the antibacterial effects of fenugreek, BS, and NS against *A. a.* to explore their potential in treating aggressive periodontitis using natural alternatives.\

## Objective

This study investigates the antibacterial efficacy of Trigonella foenum-graecum, Boswellia serrata, and Nigella sativa against A. actinomycetemcomitans, aiming to explore traditional herbal therapies for the treatment of aggressive periodontitis.

## Materials & Methods

Fenugreek, BS, and NS seeds were procured from Jevik Setu Market, Indore, specializing in organic seeds and vegetables. The seeds were finely ground using a mortar and pestle and soaked in dimethyl sulfoxide (DMSO) for one week. The extract was then filtered and centrifuged at 4000 rpm for 30 minutes at 4°C, followed by storage at 4°C for further analysis.

The pathogenic bacterial strain was obtained from the Periodontology Department of the College of Dental Science and Hospital, Rau, Indore, M.P. The minimum inhibitory concentration (MIC) of fenugreek, BS, and NS against A. a. was determined using the broth Microdilution method.

## Results & Discussion

The MIC values obtained were as follows:

- Fenugreek: 374.33 μg/ml
- Boswellia serrata: 708.33 μg/ml
- Nigella sativa: 705 μg/ml

No turbidity was observed in the negative control group, confirming the antimicrobial activity of the tested extracts.

**Table: Showing the Antibacterial effect of herbal extracts on A.a. Bacteria-**

| S.No. | Herbal Extract | Mean±SD |
|---|---|---|
| 1 | Fenugreek | 374.33±4.04 |
| 2 | B.S. | 708.33±7.63 |
| 3 | N.S. | 705±5 |

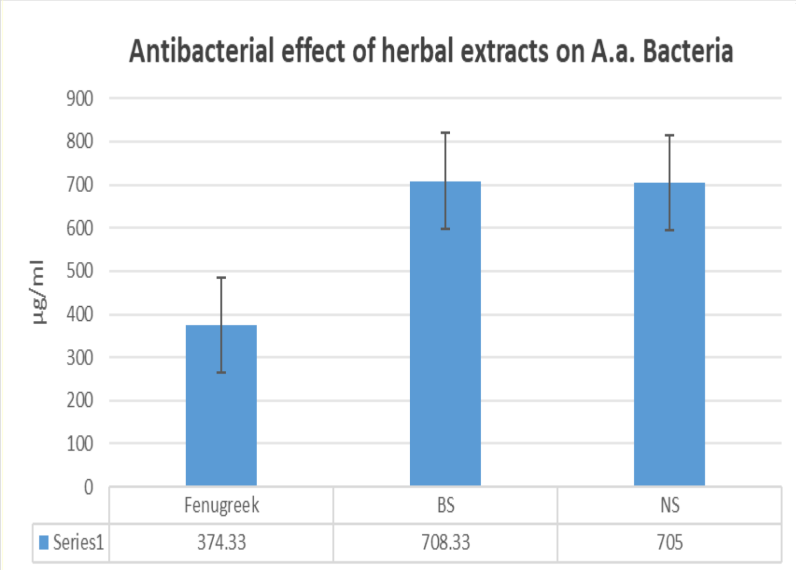


**Graph: Showing the Antibacterial effect of herbal extracts on A.a. Bacteria**

The results indicate that fenugreek exhibited the strongest antibacterial effect (Gupta, R. et al. 2014) against *A. a.* compared to BS and NS. Currently, the standard treatment for periodontal disease focuses on biofilm removal through mechanical procedures and systemic antibiotic therapy (Deas, D.E. et al.2010). Alternative approaches such as photodynamic therapy with herbal photosensitizers (Moslemi, et al. 2015) and adjunctive use of systemic antibiotics (Dakic, A. et al.2016) have also been explored. Previous studies have evaluated the antimicrobial properties of other natural extracts against *A. a.*. For instance, Kapadia,S.P.et al 2015. investigated the antimicrobial activity of banana peel extract using the agar well diffusion method. *Ocimum sanctum* (Tulsi) has also been widely studied for its antibacterial properties (Mondal, S. et al. 2011). However, limited studies exist on the antibacterial activity of fenugreek, BS, and NS specifically against *A. a.*. Our study is among the first to examine fenugreek's antibacterial effect on *A. a.*.

One challenge in comparing results with previous studies was the variation in extraction methods and bacterial strains. Future studies should focus on evaluating different extraction techniques, including aqueous and alcoholic extracts, to optimize antibacterial efficacy.

Conclusion

Our comparative study demonstrates that ***Trigonella** foenum-graecum* exhibits the strongest antibacterial activity against ***A. actinomycetemcomitans*** compared to ***Boswellia serrata*** and ***Nigella** sativa*. Given fenugreek's well-documented medicinal properties, it has the potential to be explored further as an alternative treatment for periodontitis. Future research should aim to refine extraction methods and optimize concentrations for enhanced antibacterial potency.

***********

## Reference


1. Al-Okbi, S. Y., Mohamed, D. A., & Hamed, T. E. (2014). Potential protective effect of Nigella sativa crude oils on fatty liver in rats. Journal of Medicinal Food, 17(3), 285-291.
2. Dakic, A., Boillot, A., Colliot, C., Carra, M. C., Czernichow, S., & Bouchard, P. (2016). Detection of Porphyromonas gingivalis and Aggregatibacter actinomycetemcomitans after systemic administration of amoxicillin plus metronidazole as an adjunct to non-surgical periodontal therapy: a systematic review and meta-analysis. Frontiers in microbiology, 7, 1277.
3. Deas, D. E., & Mealey, B. L. (2010). Response of chronic and aggressive periodontitis to treatment. Periodontology 2000, 53(1).
4. Gupta, A., & Upadhyay, N. K. (2017). Boswellia serrata: An effective anti- inflammatory agent. Journal of Ethnopharmacology, 208, 204-211.
5. Gupta, R., Singh, N., & Nishteswar, K. (2014). Therapeutic efficacy of Trigonella foenum-graecum in metabolic disorders: A review. Ancient Science of Life, 33(4), 245-250.
6. Kapadia, S. P., Pudakalkatti, P. S., & Shivanaikar, S. (2015). Detection of antimicrobial activity of banana peel (Musa paradisiaca L.) on Porphyromonas gingivalis and Aggregatibacter actinomycetemcomitans: An: in vitro: study. Contemporary clinical dentistry, 6(4), 496-499.
7. Khan, M. A., & Afzal, M. (2016). Chemical composition and medicinal properties of Nigella sativa Linn. Asian Pacific Journal of Tropical Biomedicine, 6(5), 398-405.
8. Mondal, S., Varma, S., Bamola, V. D., Naik, S. N., Mirdha, B. R., Padhi, M. M.,and Mahapatra, S. C. (2011). Double-blinded randomized controlled trial for immunomodulatory effects of Tulsi (Ocimum sanctum Linn.) leaf extract on healthy volunteers. Journal of ethnopharmacology, 136(3), 452-456.
9. Moslemi, N., Soleiman-zadeh Azar, P., Bahador, A., Rouzmeh, N., Chiniforush, N., Paknejad, M., & Fekrazad, R. (2015). Inactivation of Aggregatibacter actinomycetemcomitans by two different modalities of photodynamic therapy using Toluidine blue O or Radachlorin as photosensitizers: an in vitro study. Lasers in medical science, 30, 89-94.
10. Raja, A. F., Ali, F., Khan, I. A., Shawl, A. S., Arora, D. S., Shah, B. A., & Taneja, S. C. (2011). Antistaphylococcal and biofilm inhibitory activities of acetyl-11-keto-β-boswellic acid from Boswellia serrata. BMC microbiology, 11, 1-9.
11. Safayhi, H., Sailer, E. R., & Ammon, H. P. (1995). Mechanism of 5-lipoxygenase inhibition by acetyl-11-keto-beta-boswellic acid. Molecular pharmacology, 47(6), 1212-1216.
12. Schneider, C., & Segre, T. (2009). Green tea: potential health benefits. American family physician, 79(7), 591-594.
13. Singh, D., Kumar, T. R., & Kumar, S. (2018). Medicinal properties of Trigonella foenum-graecum: A review. International Journal of Pharmaceutical Sciences and Research, 9(6), 2155-2161.

# EXPLORING THE COMPLEX RELATIONSHIP BETWEEN MIGRATION AND WELLBEING: BENEFITS AND CHALLENGES

**Manish Kumar**
Department of economics
Banaras Hindu university Varanasi (U.P.) – 221005
Email: kumarmanish2321998@gmail.com

## ABSTRACT

Migration is a multifaceted phenomenon influenced by various factors such as socioeconomic conditions, political stability, natural disasters, and climate change. This review paper explores the intricate relationship between migration and wellbeing, a concept encompassing physical health, mental state, economic stability, and social integration. How does migration influence wellbeing? If migration improves wellbeing, in what areas does it enhance? Conversely, if it diminishes wellbeing, in what aspects does it do so? The paper aims to assess the overall effect of migration on household wellbeing. The first section delves into the key concepts of migration and wellbeing, examining the impact of migration on the different dimensions of quality of life. The complex relationship between the two is discussed through various lenses, from economic gains to social integration and family dynamics.

The second section outlines the methods and criteria used to assess studies on the topic, focusing on how migration can affect wellbeing both positively and negatively. For example, when men migrate for work, women in rural areas often take on greater social and economic responsibilities, which can shift gender roles and increase employment rates. At the same time, migration can strain family relationships, create emotional stress, and disrupt the upbringing of children. However, it also brings positive outcomes, such as remittances that improve financial stability and access to resources for families.

The third section synthesizes key findings from different studies, highlighting the importance of policies that support migrant wellbeing. It stresses the need for governments and healthcare providers to create inclusive policies that offer mental health services, job opportunities, and education. By addressing these challenges, migration can yield positive outcomes, fostering healthier and more integrated communities while enhancing overall household wellbeing.

**Key word:** Migration, Wellbeing, Socio-Economic.

## 1. INTRODUCTION

Migration is when people move from one place to another, either within the same country or to a different country, usually to find better work or living conditions. People often migrate to escape poverty, find jobs, or seek better opportunities for themselves and their families. Well-being is about how good or satisfying someone's life is. It includes not just how much money they have, but also how healthy they are, how educated they are, and whether they feel safe and happy. Well-being can be affected by many things like income, relationships, and access to services like healthcare. When we talk about migration and well-being together, we are interested in how moving to a new place change someone's life. For example, migration can bring in more money through remittances, but it can also cause emotional challenges if families are separated. Understanding the relationship between migration and well-being is essential in today's globalized world because migration significantly impacts economies, societies, and individuals. Migrants often contribute to economic growth, address labour shortages, and send remittances that support families in their home countries. However, migration can also lead to challenges like brain drain and social integration issues. In an increasingly interconnected world, recognizing how migration affects the well-being of both migrants and the communities involved is key to developing inclusive policies that promote economic development, social harmony, and global cooperation in addressing challenges such as displacement due to conflict or climate change. The purpose of this review is to explore both the positive and negative effects of migration on well-being. It looks at how migration can improve lives by increasing income and providing better opportunities, while also considering the challenges, such as family separation and difficulties in adjusting to new places. The goal is to understand how migration influences people's quality of life and what can be done to address the challenges while maximizing the benefits. This paper is structured into

four main sections. Following the introduction, the second section outlines the objectives of the paper. The third section presents the methodology of the paper. The fourth section presents the findings and discussion of the paper and fifth section presents the policy implications of the paper.

**2. OBJECTIVES**

This review paper aims to critically analyze the multifaceted relationship between migration and household wellbeing by (1) examining how migration influences diverse dimensions of wellbeing-including physical health, mental state, economic stability, and social integration; (2) assessing both the positive and negative impacts of migration, such as economic empowerment through remittances versus familial strain and emotional stress; and (3) synthesizing evidence to advocate for inclusive policies that enhance migrant wellbeing through mental health support, equitable employment, education, and social integration. The study seeks to provide a holistic understanding of migration's role in shaping household outcomes and inform strategies to maximize its benefits while mitigating adversities.

**3. METHODOLOGY**

The methodology for identifying relevant studies involved a systematic search in the Scopus database using the keywords "Migration" AND ("Wellbeing" OR "remittances") in the title field, which initially retrieved 262 records. The search was refined by limiting documents to peer-reviewed "articles" and "conference papers", reducing the results to 83 records. Subsequently, only open-access publications were selected to ensure accessibility, yielding 52 papers. Further filtering by subject areas-Social Science, Economics, and Econometrics—retained 102 records, after which non-English publications were excluded, resulting in a final set of 68 studies for in-depth analysis. This structured approach prioritized relevance, accessibility, and disciplinary alignment to systematically capture literature exploring migration's intersection with wellbeing and remittances.

**4. FINDINGS AND DISCUSSION**

**4.1 MIGRATION THEORIES**

Push-Pull Factors: This theory explains migration as a result of factors that "push" people out of their home country and "pull" them to another. Push factors include problems like unemployment, poverty, or political instability, which make people want to leave. Pull factors are opportunities like better jobs, higher wages, or improved living conditions that attract people to a new place. Neoclassical Economic Theory: This theory views migration as an economic decision. People migrate to places where they can earn higher wages and improve their financial situation. The theory suggests that labour moves from areas with low wages to areas with high wages, balancing out labour markets between countries or regions. New Economics of Labour Migration (NELM): This theory expands on the idea of migration by considering not just individuals but also households. It argues that families often make migration decisions together to diversify their income sources and reduce risks, like crop failures or job loss, by having members work in different places and send money back home (remittances).

**4.2 WELLBEING MODELS**

To understand well-being, we can use different frameworks that focus on its psychological, economic, and social dimensions: Psychological Well-being: This framework looks at a person's emotional health and happiness. It includes things like life satisfaction, feeling positive emotions, having a sense of purpose, and being able to cope with stress. Psychologist Carol Ryff's model of well-being, for example, includes key elements like self-acceptance, personal growth, and autonomy, which together define how well someone feels mentally and emotionally. Economic Well-being: This focuses on how financially secure and stable a person or household is. It includes factors like income, savings, employment, and the ability to meet basic needs. People with higher economic well-being are generally able to live more comfortably, have access to better resources, and plan for the future. Economic well-being is often measured by income levels, job stability, and access to material resources. Social Well-being: This dimension considers how connected and supported a person is by their relationships and community. It looks at the quality of social connections, family ties, friendships, and a sense of belonging. Social well-being means feeling supported and valued by others, which plays an important role in overall happiness. Each of these dimensions helps us understand well-being more fully by looking beyond just one area of life

**4.3 BENEFITS OF MIGRATION ON WELLBEING**

**Economic Opportunities**

Migration helps people find better job opportunities and higher wages, improving their financial situation. Many leave areas with few jobs for stronger economies where they can earn more, support their families, and send money home. Remittances also enhance the quality of life for families back home (Todaro, 1969; Adams & Page, 2005).

**Educational and Skill Development**

Migration offers access to better education and skill

development, enhancing migrants' qualifications and job prospects. Many pursue higher education or training, leading to career advancement and improved economic situations. Investing in education for their children also benefits future generations and fosters development (Orozco, 2003).

**Cultural Enrichment**

Migration exposes people to new cultures, helping them grow personally and become more open-minded. This experience teaches valuable skills like adaptability and empathy, improving relationships and work with others. It also boosts creativity and problem-solving by providing new perspectives (Leung et al., 2011).

**Remittances**

Remittances sent home by migrants greatly enhance the well-being of their families. These funds help cover basic needs like food, housing, and healthcare, and enable investments in education, breaking the cycle of poverty. Additionally, remittances stimulate local economies and promote community development, leading to reduced poverty rates and improved quality of life (Ratha, 2013).

## 4.4 CHALLENGES OF MIGRATION ON WELLBEING

**Psychological Impact**

Migration can lead to emotional challenges like stress, identity crises, and homesickness. Adapting to a new culture can cause anxiety, especially with financial pressures (Bhugra, 2005). Migrants may struggle with balancing their original identity with a new one (Sam & Berry, 2010), and homesickness can lead to loneliness and sadness (Hirschmann, 2005). Support and mental health resources are essential for their well-being. Parental migration negatively impacts LBC's social wellbeing. LBC experience mental health challenges due to migration (Nelsensius Klau Fauk,2024). Negative relationship between migration and subjective well-being identified. Migrants accept income increase for reduced life satisfaction post-migration (Gabriel Rodríguez-Puello,2024).

**Social Integration**

Migrants often struggle to adapt to new social norms due to differences in values and traditions, which can lead to misunderstandings and feelings of isolation (Berry, 1997). Language barriers make communication challenging, and the pressure to fit in can cause stress. Additionally, many face discrimination and xenophobia, further hindering their integration and well-being (Schwartz et al., 2014). Promoting inclusive communities and cultural understanding can help support migrants during their transition.

**Legal and Political Barriers**

Migrants face significant challenges related to immigration policies, legal status, and access to essential services, affecting their quality of life. Strict immigration laws can create barriers, leading to fear and uncertainty about deportation (Martin, 2008). Those without legal status often face limited job opportunities and may avoid seeking healthcare due to fear of exposure (Castañeda et al., 2015). Additionally, language barriers and ineligibility for public services hinder access to healthcare and education, impacting their overall well-being (Sullivan et al., 2011). Advocating for inclusive policies is crucial.

**Economic Exploitation**

Migrants often face significant risks in the labour market, including low wages, job insecurity, and exploitation, which can negatively affect their economic well-being and overall quality of life. Low Wages: Migrants are frequently employed in low-paying jobs, especially when they lack formal qualifications or their credentials are not recognized in the host country. Many migrants work in sectors like agriculture, construction, or domestic work, where wages are often below the national average. These low earnings make it difficult for migrants to achieve financial stability, support their families, and improve their standard of living (Piore, 1979). Job Insecurity: Migrants often take temporary or informal jobs, which offer little to no job security. This means that they are at a higher risk of losing their jobs without notice or compensation. Migrants in precarious employment situations may have no access to benefits like sick leave, unemployment insurance, or retirement plans, leaving them vulnerable to financial hardship in times of crisis (Standing, 2011). Seasonal or temporary work contracts are also common, further increasing job insecurity. Exploitation: Migrants are more susceptible to exploitation in the labour market, especially if they are undocumented or lack legal protections. Exploitative practices may include long working hours, unsafe working conditions, and wages far below the legal minimum. Employers may take advantage of migrants' vulnerable legal or economic situations, knowing they are less likely to report abuses for fear of losing their jobs or being deported (Anderson & Rush, 2010). This exploitation often leads to both physical and mental stress, further affecting their well-being. Addressing these risks requires stronger labour protections, fair wage policies, and improved access to legal rights for migrants to ensure their dignity and safety in the workplace.

## 4.5 CASE STUDIES

**Successful Integration Examples**

Migration has led to significant improvements in the well-being of individuals and families in various cases,

particularly by providing better economic opportunities, access to education, and improved living conditions. Economic Advancement: One notable example is the case of Filipino workers migrating to countries like Saudi Arabia or the United States. Many Filipino workers find employment in higher-paying sectors such as healthcare, construction, or domestic work, which allows them to send substantial remittances back home. These remittances have been critical in improving the well-being of their families by boosting household income, allowing for better housing, healthcare, and education (Yang & Martinez, 2005). This economic uplift has helped reduce poverty and increase financial stability in many Filipino households. Education and Skills Development: Another case is the migration of Indian IT professionals to countries like the U.S., Canada, and the UK. Many of these migrants take advantage of advanced educational and professional opportunities, gaining access to high-quality training and experience in the tech industry. This has not only improved their economic status but also enhanced their personal growth and skills. The knowledge they gain abroad often benefits their home countries when they return or through knowledge transfer, contributing to global technological progress (Khadira, 2001). Improved Living Standards: Migration has also had a positive impact on well-being in cases such as Eastern Europeans moving to Western Europe after the expansion of the European Union. For instance, Polish workers who migrated to the UK benefited from higher wages and improved access to services. These migrants were able to provide better living conditions for themselves and their families, both in the host country and through remittances sent home. The increased financial stability and exposure to better healthcare and social services enhanced their overall quality of life (Drinkwater et al., 2009). These cases demonstrate how migration, when well-managed, can provide migrants and their families with opportunities to improve their economic standing, education, and living conditions, significantly enhancing their well-being.

**Challenges in Host Countries**

Migration can cause social and economic tensions, especially in areas with limited jobs or resources. Local populations may feel threatened by migrants competing for low-wage jobs or straining public services like healthcare and housing. For example, the 2008 UK financial crisis saw tensions between native workers and Eastern European migrants (Wadsworth, 2015). Similarly, in South Africa, migrants from Zimbabwe faced hostility over public resource competition (Crush & Ramachandran, 2014). Effective policies are needed to address these issues and promote integration.

## 5. POLICY IMPLICATIONS

**Support Systems**

Policies that help migrants with mental health, social integration, and fair job opportunities are important for their well-being and successful adjustment. Providing tailored support, language training, and fair work conditions helps reduce isolation and allows migrants to contribute positively to the economy (Bhugra & Gupta, 2011; ILO, 2015).

**Community Engagement**

Community programs help migrants integrate by offering language classes, cultural workshops, and social events. These programs build connections between migrants and locals, reduce stereotypes, and create support networks. They also provide job training to boost migrants' skills and employability, making it easier for them to settle and contribute to society (Dempsey, 2021; Schaefer, 2018; Wessendorf, 2013; Kagan, 2017).

**Coordinated Responses**: Global agreements, such as the Global Compact for Safe, Orderly and Regular Migration, provide a platform for countries to coordinate their responses to migration challenges. By fostering dialogue and collaboration, these agreements enable nations to share information, resources, and strategies for managing migration effectively. This coordinated approach can help address issues like human trafficking, irregular migration, and border management more comprehensively (United Nations, 2018).

**Protection of Migrant Rights**: International partnerships help protect migrants' rights by following global agreements that ensure fair treatment, safety, and access to services (United Nations, 1990). Countries also share successful ideas on how to support migrants, like offering language classes and job training, to improve policies and create better integration programs (IOM, 2020).

**Addressing Root Causes**: Global agreements can also address the root causes of migration, such as poverty, conflict, and environmental degradation. Collaborative efforts between countries, international organizations, and NGOs can focus on development assistance and humanitarian support in countries of origin. By improving living conditions and creating economic opportunities, these initiatives can help reduce the pressures that drive people to migrate (World Bank, 2018).

**Facilitating Legal Pathways:** International collaboration can help create and expand legal pathways for migration, which can reduce the incidence of irregular migration and exploitation. By establishing mutual

recognition of qualifications and easing visa restrictions for certain labour markets, countries can facilitate the movement of skilled workers while ensuring that migrants have safe and legal options for migration (ILO, 2017).

**************

## REFERENCES


1. Adams, R. H., & Page, J. (2005). *Do International Migration and Remittances Reduce Poverty in Developing Countries?*
2. Anderson, B., & Ruhs, M. (2010). *Migrant Workers: Who Needs Them? A Framework for the Analysis of Staff Shortages, Immigration, and Public Policy*.
3. Berry, J. W. (1997). *Immigration, Acculturation, and Adaptation*.
4. Betz, H.-G., & Meret, S. (2013). *Right-wing Populist Parties and the Refugee Crisis in Europe: The End of Compassion?*
5. Bhugra, D. (2005). *Migration and Mental Health*.
6. Bhugra, D., & Gupta, S. (2011). *Migration and Mental Health*.
7. Borjas, G. J. (1994). *The Economics of Immigration*.
8. Castañeda, H., et al. (2015). *Immigration and Health: The Importance of a Social Determinants Perspective*.
9. Castles, S., & Miller, M. J. (2009). *The Age of Migration: International Population Movements in the Modern World*.
10. Crush, J., & Ramachandran, S. (2014). *Xenophobic Violence in South Africa: Denialism, Minimalism, and Inaction*.
11. De Haas, H. (2010). Migration and development: A theoretical perspective. *International Migration Review, 44*(1), 227-264.
12. Dempsey, N. (2021). *Language, Identity, and Integration: The Role of Language in Migrant Experiences*.
13. Diener, E., & Seligman, M. E. P. (2004). *Beyond Money: Toward an Economy of Well-being*.
14. Drinkwater, S., Eade, J., & Garapich, M. P. (2009). *Poles Apart? EU Enlargement and the Labour Market Outcomes of Immigrants in the United Kingdom*.
15. Fargues, P., & Benton, M. (2017). *Migration and Integration in Europe: Impact of Migration on Host Societies*.
16. Friedman, S. (2020). *Celebrating Diversity: Building Inclusive Communities*.
17. Gabriel, Rodríguez-Puello., José, Luis, Sánchez-Menoyo., Diana, Romero-Espinosa., Francisco, Rowe. (2024). The disruptive long-term costs of international migration on subjective well-being. doi: 10.31219/osf.io/ydbxu.
18. Hannerz, U. (1990). *Flows and Counter-Flows in Cultural Studies*.
19. Hirschmann, C. (2005). *The Social and Psychological Aspects of Migration*.
20. International Labour Organization (ILO). (2015). *Promoting Fair Migration: General Survey Concerning the Migrant Workers Instruments*.
21. International Labour Organization (ILO). (2017). *Global Estimates of Migrant Workers and Migrant Work*.
22. International Organization for Migration (IOM). (2020). *Migration Governance Framework*.
23. Kagan, M. (2017). *The Role of Community Organizations in Refugee Employment Integration*.
24. Keyes, C. L. M. (1998). *Social Well-being*.
25. Khadria, B. (2001). *Shifting Paradigms of Globalization: The Twenty-First Century Transition Towards Generics in Skilled Migration from India*.
26. Lee, E. S. (1966). *A Theory of Migration*.
27. Leung, A. K. Y., Maddux, W. W., Galinsky, A. D., & Chiu, C. (2011). *Multicultural Experiences Enhance Creativity: The Importance of Cultural Intelligence*.
28. Martin, P. L. (2008). *Migration and Immigration Policy*.


# EXAMINE STRATEGIES FOR PRESERVATION INCLUDING NATURAL PRESERVATIVES TO INCREASE THE LIFESPAN OF FOOD


**Ashutosh Pathak**

*Institute of Pharmacy, Dr. Shakuntala Misra National Rehabilitation University, Mohan Rd, Sarosa Bharosa, Lucknow, Uttar Pradesh India – 226017.*



**Abstract:**

The main purpose of food preservatives, which are additional ingredients added to food, is to add flavor and extend its shelf life. This helps prevent food from spoiling and shields it from microorganisms like bacteria, yeast, and molds, as well as potentially deadly poisoning and other microbes that can cause food-borne illness (antibacterial function). Benzoates, sulfur dioxide, nitrates, and nitrites are examples of antimicrobials that help regulate and limit the development of microbes, fungi, and molds, pH control enhance food flavor or provide color to prevent spoilage etc. An extensive summary of the science underlying artificial and natural food preservatives is provided in this review study. The fundamental ideas of food preservation as well as the biochemical, enzyme-mediated, and microbiological mechanisms that lead to food deterioration are covered in the review's introduction.



**Keywords:** Preservation, Natural preservatives, Artificial Preservatives, Ethylene diamine tetra acetic acid, High Performance Liquid Chromatography


**Introduction:-**Food consumed by human and animals to produce energy can be raw, processed or formulated materials which can promotes growth and required to maintain good health. In most cases, there are no limitations on food consumption but sometime the excessive consumption of certain kind of food such as carbohydrate, fat, sugar and salt, may have harmful effects on health of consumer. Food products will promote the growth of microbial because chemically, they consist of water, fat, carbohydrates, protein and small amounts of organic compounds and minerals, since all these compounds are the source energy for microbes to grow. Several preservation techniques are suggested to stop this from happening. A preservative is a substance, either natural or synthetic, that is applied to many things, including food, medicines, paints, timber, etc., to stop microbial growth or unintended chemical changes from decomposing them. To extend the shelf life of many

foods and medicinal items, these preservatives are frequently applied [1]. To guarantee the use of food with good nutritional content, which is crucial for human health, food quality must be maintained. Therefore, the best approach to maintain food quality and stop it from deteriorating is to use preservation techniques. These days, there are many different kinds of preservation techniques that may be applied to preserve food quality. items for an extended length of time, either via the use of contemporary preservation technologies or traditional means. Additional food preservatives, which fall into two categories—natural and artificial—are used in some of these preservation techniques [2].

There are six food classes, which are as follows:
1. Sweets and fatty acids, such as buttermilk, gel, beverages with sugar, etc.
2. Dairy goods, such as cheese, yogurt, milk, and so on.
3. Protein, such as meat, eggs, poultry, almonds, etc.
4. Vegetables, such as spinach, salad, tomatoes, etc.
5. Fruits, such as bananas, mangoes, and apples.
6. Carbs such as rice, bread, noodles, and so on.

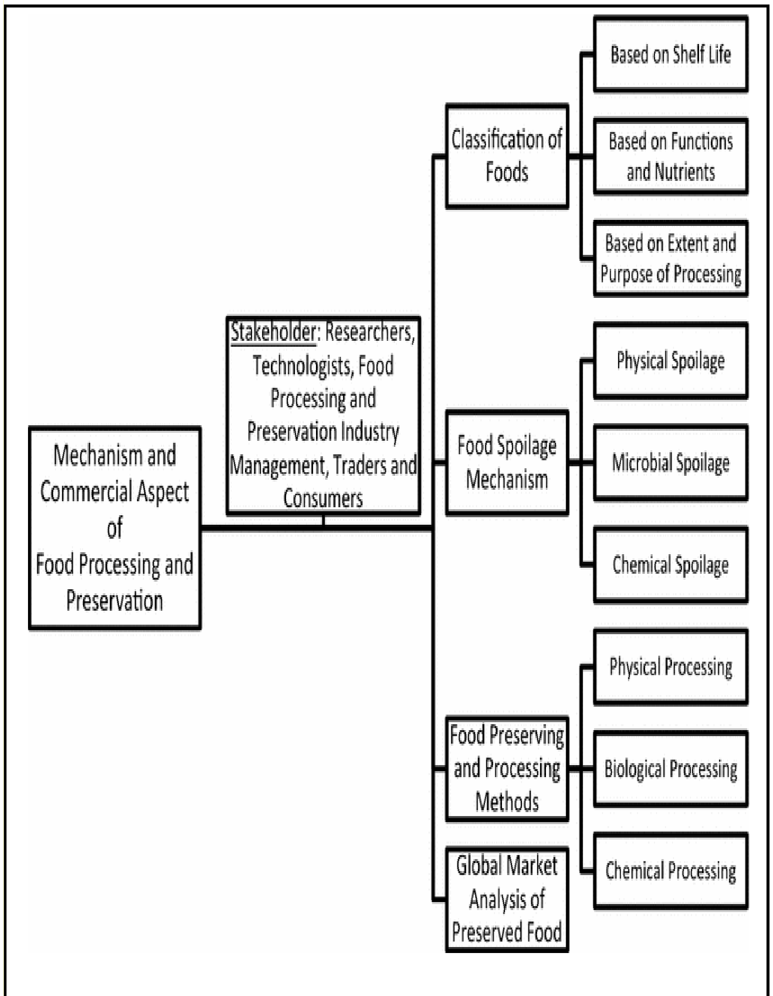


**Fig. 1 Mechanism of Food preservatives**

**Table. 1 Classification of Preservative**

| Preservative Classification [3-5] | |
|---|---|
| **On the basis of their class** | **Class I:** Food preservatives derived from nature, such as salt, sugar, a vinegar-based products, herbs, honey, edible oils, etc., were included in this class.<br>**Class II:** Benzoates, sorbates, potassium nitrites and nitrates, sulphites, glutamates, glycerides, and other chemical, semi-synthetic, or synthetic food preservatives were included in this class. |
| **On the basis of Source** | **Natural Preservatives:** Plants, minerals, animals, and other natural resources are the sources of these medications. For instance, Lemon Honey, Vinegar with Neem extract Salt (NaCl).<br>**Synthetic Preservatives:** These preservatives are made from chemicals that, in little amounts, are effective against a variety of pathogens. For instance, nitrites, propionates, sorbates, sodium benzoate, and benzoates |
| **On the basis of mechanism of action** | **Antioxidants**: The substance that stops the oxidation of active pharmacological ingredients, which normally degrade because of oxidation since they are oxygen-sensitive. Vitamin C, for instance.<br>**Antimicrobial**: The substance that works against both gram-positive and gram-negative microorganisms that break down medicinal preparations. which operate at a low degree of inclusiveness. For instance, benzoates, Benzoate of sodium.<br>**Chelating Agent:** The substance that combines with medicinal ingredients to create a complex and stop the formulation from degrading. For instance, EDTA (disodium ethylene diamine tetra acetic acid). |

**Table 2. Food goods where preservatives can be utilized and their uppermost limitations [6-7]**

| Preservatives | Class | Utilization |
|---|---|---|
| Sodium and potassium benzoate, benzoic acid | Antimicrobial | Fruit Juices, Jams, Cheese, Baked Goods, Snacks etc. |
| Sulphates and sulphur dioxide | Antimicrobial | Dry fruit, fruits, Molasses, fried or frozen potatoes etc. |
| Methyl and propyl paraben | Antimicrobial | Baked goods, Beverages, relishes etc. |
| Sorbic acid, Sodium, potassium and calcium sorbates | Antimicrobial | Dairy products, sweets, syrups, jams, jellies etc. |
| Propionates | Antimicrobial | Cheese foods, fruits, bakery products etc. |
| Nitrites and nitrates | Antimicrobial | Meat products. |
| Propyl gallate | Antioxidants | Baked foods |
| Butylated hydroxy-anisole | Antioxidants | Potato products, cereals etc. |
| Tert-butyl hydroquinone | Anti-enzymatic | Foods and snacks etc. |

**Table 3. Codes assign for preservatives [8-10]**

| E Number | Name of preservative | Purpose |
|---|---|---|
| E 200 | Sorbic acid | Preservative |
| E 202 | Potassium sorbate | Preservative |
| E 203 | Calcium sorbate | Preservative |
| E 210 | Benzoic Acid | Preservative |
| E 211 | Sodium benzoate | Preservative |
| E 212 | Potassium Benzoate | Preservative |
| E 213 | Calcium Benzoate | Preservative |
| E 214 | Ethyl p-hydroxybenzoate | Preservative |
| E 215 | Sodium ethyl p- hydroxybenzoate | Preservative |
| E 216 | Propyl p-hydroxybenzoate | Preservative |
| E 217 | Sodium propyl p-hydroxybenzoate | Preservative |
| E 218 | Methyl p-hydroxybenzoate | Preservative |
| E 219 | Sodium methyl p-hydroxybenzoate | Preservative |
| E 220 | Sulphur dioxide | Preservative |
| E 221 | Sodium sulphite | Preservative |
| E 222 | Sodium hydrogen sulphite | Preservative |
| E 223 | Sodium metabisulphite | Preservative |
| E 224 | Potassium metabisulphite | Preservative |

**Table 4. Preservatives used in Pharmaceutical Formulations [11-12]**

| Category | Products | Preservatives |
|---|---|---|
| Oral | Tablets, capsules, suspensions and syrups | Methyl, ethyl, propyl parabens and their combinations, sodium benzoate, benzoic acid, calcium. |
| Parenteral (including Vaccine) | Small and large volume parenterals including vaccines | Methyl, ethyl, propyl, butyl parabens and their combinations, benzyl alcohol, chlorbutanol, chlorhexidine, thiomersal, formaldehyde. |
| Nasal | Nasal drops, sprays and aerosols | Benzalkonium chloride, phenylcarbinol, potassium sorbate, chlorobutanol, chlorocresol, EDTA |
| Ophthalmic | Eye drops, ointments and contact lens solutions | Benzalkonium chloride, EDTA, benzoic acid, thiomersal, imidurea, chlorhexidine, polyamino propylbiguanide, sodium perborate, boric acid |
| Dental | Toothpastes, mouthwashes and gargles | Sodium benzoate, benzoic acid, potassium sorbate, sodium phosphate, triclosan, cetylpyridinium chloride, methyl and ethyl parabens |
| Dermal | Cream, lotion, ointment, soap, bath gel, hair spray, shampoo and conditioner | Benzalkonium chloride, cetrimide, EDTA, benzoic acid, thiomersal, imidurea, chlorhexidine, chlorocresol, phenyl salicylate |
| Rectal | Suppositories and enema | Benzyl alcohol, benzoic acid, sodium benzoate, methyl hydroxybenzoate, chlorhexidine gluconate |

**Artificial Preservatives**

By chemical processes, humans create these preservatives, which are effective towards a variety of pathogens at low concentrations. For example, sodium benzoates, Propionates, the nitrite and benzoate sorbates etc. After receiving approval from the Scientific Committee on Food (SCF), which is in charge of assessing the health hazards of food substances, the European Commission gives an addition of E-number.

Substances that have been certified for consumption within Switzerland and the European Union are denoted by E numbers, which are used by the dietary supplement sector globally [13].

**Table 5. Methods of Preserving Food**

| **Methods of Preserving Food [14]** | |
|---|---|
| **Drying** | Drying is one of the first techniques for preserving food since it lowers water's activity enough to stop or slow the proliferation of germs. Additionally, drying lowers heaviness. |
| **Canning** | When done correctly, canning is a significant and secure food preservation technique. To sterilize food, canning entails heating it, enclosing it in sterilized bottles or jars, and then steaming the vessels to destroy or lessen any germs that may still be present. |
| **Pickling** | Pickling is an anaerobe fermentation method of food preservation. The final product is known as a pickle. This process imparts an acidic or salty flavour to the dish. Vinegar, alcohol, vegetable oil, and brine are common pickling ingredients. Its pH of below 4.6, which is adequate to eradicate the majority of microorganisms, is another distinctive feature. Perishable items can be pickled for months at a time. |
| **Freezing** | The two methods of food preservation that are most commonly used nowadays are most likely thawing and refrigerated. The goal of cooling is to slow down bacterial activity to a standstill so that food takes a lot longer to spoil—perhaps up to fourteen days as opposed to a few hours. |
| **Vacuum Packaging** | Food is often vacuum-packed in a sealed jar or bag. The vacuum atmosphere slows deterioration by depriving microorganisms of oxygen, which is necessary for their life. Food can be harmed by air, which can lead to rust, bacterial development, or property loss. Products that travel great distances can be preserved using this approach for several weeks or months if they are kept in a refrigerator. |
| **Water Bath** | Using this method, food is kept in a securely sealed glass container filled with water. Next, a saucepan filled with sufficient fluids to fully cover the jar is set over the container. After 50 minutes of boiling, turn off. Before causing a fast heat shift that may lead the bottle to burst, let the vessel cool fully within the container. |

**Risks to health from artificial preservatives-**Although majority of artificial preservatives are thought to be harmless, others have harmful, carcinogenic, and lethal negative consequences. Popular preservatives found in many fruits, sulphites can cause migraines, heartburn, allergies, breathing problems, cancer, and other adverse reactions [15].

**Fig 3 Hazards of Artificial Food Preservatives.**

**Table 6. Artificial preservatives and their problems associated [16]**

| Artificial Preservatives | Problems Associated |
|---|---|
| Nitrites and Nitrites | In order to avoid food illness, sodium nitrite is used as a preservative in animal products, hamsters, smoked meat, hot dogs, and salami. Although sodium nitrite can stop the development of germs that might cause botulism, it may interact with peptides and produce cancerous effects. N-nitrosamines whenever heated to high temperatures. When nitrate attaches to haemoglobin, the substance that transports oxygen from bloodstreams to the body's tissues, it produces chemically changed haemoglobin (methaemoglobin), which hinders the delivery of oxygen to the tissues and gives the skin its blue hue. |
| Benzoates | Benzoate is thought to be triggering harm to the brain and can cause allergies like breakouts on the skin and bronchitis. As microbiological food preservatives, benzoates have been linked to inflammation, respiratory conditions, and sensitivities. |
| Caffeine | Caffeine is a flavouring and colouring agent with diuretic and stimulating qualities. It may result in anxiety, heartburn, and in rare cases, cardiac abnormalities. |
| Sorbic Acid | Foods are treated with sorbates or sorbic acid as antibacterial preservatives. Although sorbate problems are uncommon, dermatitis from contact and urticaria have been reported |

**Natural preservatives: Better alternatives**

Natural preservatives are likely a topic of greater scholarly interest than commercial or practical benefit. It does, however, offer a fantastic marketing aspect that might help to offset the greater cost of raw materials. The most popular preservation techniques that the formulator already has access to are reviewed first in the paper. Many of these instances may be found in the industry of food and drinks. The study then examines

how to browse through the available material and the issues with frequently employed substitutes for the procedure of preservation. This Review concludes by examining a few particular species that are frequently found in the toiletryFig 3: Natural preservatives and cosmetics industries and providing samples of a few of the botanical sources as shown in Table 7 [17].

Fig 3: Natural preservatives.

**Table 7. Natural Preservatives and its properties [18]**

| Preservatives | Properties |
|---|---|
| **Sugar** | High amounts of sugar can protect foods against spoiling microbes; this is evident in jams, conserves, certain sweetness pickled veggies, and marmalades. This plays a significant role in ensuring the longevity of candy, boiled desserts, and other foods. As a result of the substitution of artificial sweeteners, which are less expensive and healthier to consume, for sugar, many items must now be stored in the refrigerator or freezer once they are opened, compromising the product's ability to preserve itself. |
| **Honey** | Undiluted honey is also an all-natural preservative; in fact, several scholarly articles mention honey's ability to operate as a viscoelastic shield against germs and illness. |
| **Alcohol** | Yeast's ability to convert sugar into alcohol is a separate business. Once the fermentation process is over, a wine that has been meticulously made using sterile supplies and brewed to 13% by capacity will barely be able to withstand additional infection from outside microbes. The moment of fermentation is when the fermented must is most susceptible to infection. Distillation may concentrate the naturally occurring fermentation-grade alcohol, which can then be utilized as a natural preservative in colognes, aftershaves, and toners. |
| **Heat** | Other alternative preservation methods that will sterilize items include heating, cooking, and pasteurization. This is particularly important for products that are intended for single-use, such phials or sachets. To stop microbiological deterioration, the product can also be kept in the refrigerator or freezer once it has been opened. |
| **Anhydrous** | Similarly, one may intentionally create and construct a completely anhydrous product by using ingredients that don't contain any water at all. The identical limitations that apply to desiccated goods also apply to gels that the user can complete by adding liquid to the mixture of oils, fats, and lubricants. |
| **Cold** | As long as the goods was pure before it was put in a freezer and/or had enough preservation "mass" to combat any newly acquired organisms, putting it in the cold just "stops the clock" on microbiological development, which is entirely OK. |
| **Acidic pH** | By keeping the pH as low as feasible, the preservation action can be increased. One of the several alpha hydroxy acids (AHAs) derived from citrus varieties, of which citric and malic acids are the main constituents, may provide natural acidity. In addition, it is astonishing that costly organic alpha hydroxy acid sources are being artificially produced while baobab oil makers discard significant amounts of tartaric acid as a byproduct. |
| **Vinegar** | Vinegar is utilized as in food industry and household preservation due to its low pH and acetic acid concentration. In actuality, it is employed to pickle a broad range of meals, including meat, vegetables, seafood goods, and spicy fruits. |

| | |
|---|---|
| **Onion** | It serves as one of the most commonly consumed veggies and offers a number nutritional advantage. Culinary quercetin is abundant in onions. The flavanols quercetin and kaempferol, which are frequently found in glycosylated forms, are their principal representatives. Onions have therefore been suggested as an excellent source of plant-based preservatives, which improve food stability and preservation while also raising its nutritional content. Onions have antibacterial properties because they contain thiosulfates and other volatile chemical substances. They are primarily in charge of the onion's distinct flavour, scent, and lachrymatory action, but their antimicrobial, anti-fungal and antimicrobial properties also make them highly desirable. |
| **Oil** | Food oxidizes and begins to spoil when it comes into touch with air. Oil prevents microbes from getting into touch with the food and reduces down the oxidation process. |
| **Grapes fruit Extract** | The fluid made from the seed mixture, pulp, and white membranes of the tangerine Citrus Paradise is sometimes referred to as citrus seed extract. Bacteria, viruses, fungus, and other microorganisms can be killed or their development inhibited by this endogenous broad range preservative. For best results, it should be used with other wide-ranging preservatives. It can be added to the composition in amounts as high as 1%. |
| **Acid** | In addition to adding taste, food acids serve as antioxidants and preservatives. Typical food acids include lactic acid sorbic acid, vinegar, citric acid, tartaric acid, malic acid, fumaric acid, and tartaric acid. These compounds prevent bacterial and fungal cells from growing, and sorbic acid prevents bacterial spores from germinating and proliferating. |
| **Cloves** | In addition to being utilized as natural food preservatives, medicinal herbs are used to season and taste meat, fish, bread, and cakes. They belong to the Myrtaceous family and are naturally occurring herbal remedies that are extracted from evergreen trees. They have emmenagogue, antibacterial, expectorant, aesthetic, and antihistamine qualities. By eliminating microorganisms, they can function as antibacterial agents. |
| **Cinnamon** | An antimicrobial and antibacterial essential oil is found in cinnamon, a medicinal plant. The bark, leaves, stems, flowers, and volatile oil are the primary components utilized in herbal therapy. You will feel warm and comfortable because to the powerful scent. This age-old spice has antispasmodic, digestive, astringent, carminative, anti-clotting, fragrant, germicide, and stomachic effects. It is also used as a sex stimulator and to treat uterine bleeding. |

**Identifying food preservatives using various analytical techniques:**

Numerous analytical techniques for identifying preservatives have been documented. Numerous analytical techniques, including UV-visible, calorimetry, HPLC, GC, LCMS, and electrophoresis, were employed to identify different preservatives in a variety of food items using the suggested procedures [19].

**Table 9. Methods of determining Preservative [20]**

| Preservatives | Methods |
|---|---|
| Benzoic Acid and Sorbic Acid | Overlapped HPLC –PDA |
| Sodium Benzoate and Potassium Benzoate | HPLC |
| Benzoic Acid | UV Spectrophotometry |
| Sorbic Acid | UV Spectrophotometry |
| Sodium, Potassium Salts of Nitrates and Nitrites | Colorimetry BHT And BHA HPLC |
| Methgyl Paraben Propyl Paraben | Methgyl Paraben Propyl Paraben |

**Conclusion and Discussion:**

Due to growing consumer knowledge and concern about the negative consequences of synthetic chemical additions, foods preserved using natural ingredients have gained popularity. As a result, scientists and food producers are increasingly focusing on natural. preservatives. Natural food additives with minimal adverse reactions and those that are widely accepted as safe should be used if the utilization of nutritional additives is required due to their benefits. We have observed that natural preservatives have less adverse effects than synthetic ones, which are used to preserve foods, cosmetics, etc. accessible and reasonably priced. so that we can utilize it with ease. When applied to food goods, medicines, and cosmetics, organic preservatives not only prolong their shelf life but also inhibit the growth of microorganisms. Additionally, it keeps things fresh or consistent for a long period without having any harmful effects. Chemicals used as artificial preservatives have the potential to be harmful to one's health. These days, people are becoming more conscious of the negative consequences of chemical substances found in food, cosmetics, and medications. Because of their numerous health benefits and non-toxic nature, natural preservatives have more advantages than their artificial equivalents

## References:

1.Alam, M. W., Saravanan, P., Al-Sowayan, N. S., Almutairi, H. H., Rosaiah, P., Prakash, N. G., & Ko, T. J. (2025). Polysaccharides and proteins based edible coatings for food protection: classification, properties, & public demands (2020–2024). *Journal of Food Measurement and Characterization*, 1-24.
2.Silva, M. M., & Lidon, F. C. (2016). Food preservatives-An overview on applications and side effects. *Emirates Journal of Food and Agriculture*, *28*(6), 366.
3.Russell, N. J., & Gould, G. W. (Eds.). (2003). *Food preservatives*. Springer Science & Business Media.
4.Parke, D. V., & Lewis, D. F. V. (1992). Safety aspects of food preservatives. *Food Additives & Contaminants*, *9*(5), 561-577.
5.Rasooli, I. (2007). Food preservation–a biopreservative approach. *Food*, *1*(2), 111-136.
6.Bhattacharya, S., & Salama, H. H. A. E. A. (2023). *Natural Food Preservatives*. CRC Press.
7.Talib, A., Samad, A., Hossain, M. J., Muazzam, A., Anwar, B., Atique, R., ... & Joo, S. T. (2024). Modern trends and techniques for food preservation. *Food and life*, *2024*(1), 19-32.
8.Hernández-Lozada, G., Pérez-Flores, J. G., García-Curiel, L., González-Olivares, L. G., Contreras-López, E., Escobar-Ramírez, M. C., & Pérez-Escalante, E. (2025). Application of bacteriocins in food preservation and safety: A bibliometric analysis approach. *Food Science Today*, *4*(1), 12-22.
9.Mwale, M. M. (2023). Food additives: Recent trends in the food sector. *Health Risks of Food Additives-Recent Developments and Trends in Food Sector*.
10.Owusu-Apenten, R., & Vieira, E. (2022). Food Additives. In *Elementary Food Science* (pp. 355-376). Cham: Springer International Publishing.
11.Li, Q., Hou, J., Stevenson, J. S., & Liu, C. (2025). An integrated approach can improve China's food additives security. *Trends in Food Science & Technology*, 104904.
12.Said, N. S., & Lee, W. Y. (2025). Pectin-Based Active and Smart Film Packaging: A Comprehensive Review of Recent Advancements in Antimicrobial, Antioxidant, and Smart Colorimetric Systems for Enhanced Food Preservation. *Molecules*, *30*(5), 1144.
13.Demirgül, F., Kaya, H. İ., Ucar, R. A., Mitaf, N. A., & Şimşek, Ö. (2025). Expanding Layers of Bacteriocin Applications: From Food Preservation to Human Health Interventions. *Fermentation*, *11*(3), 142.
14.Reddy, N. B. P., Indumathi, C., Deotale, S., Nath, P. C., Ashoksuraj, B. S. R., Rajam, R., & Thivya, P. (2025). Recent developments and innovative application of propolis in the food industry: a natural preservative from honeybee waste. *Food Science and Biotechnology*, 1-21.
15.Maddaloni, L., Gobbi, L., Vinci, G., & Prencipe, S. A. (2025). Natural Compounds from Food By-Products in Preservation Processes: An Overview. *Processes*, *13*(1), 93.
16.Ratnasekhar, C. H., Khan, S., Rai, A. K., Mishra, H., Verma, A. K., Lal, R. K., ... & Elliott, C. T. (2025). Rapid metabolic fingerprinting meets machine learning models to identify authenticity and detect adulteration of essential oils with vegetable oils: Mentha and Ocimum study. *Food chemistry*, *471*, 142709.
17.Oliveira, T. S., Almeida, R. C. D. C., Silva, V. D. L., Ribeiro, C. V. D. M., Bezerra, L. R., & Ferreira Ribeiro, C. D. (2025). Enhancing Beef Hamburger Quality: A Comprehensive Review of Quality Parameters, Preservatives, and Nanoencapsulation Technologies of Essential and Edible Oils. *Foods*, *14*(2), 147.
18.El Hassani, N. E. A., Baraket, A., & Alem, C. (2025). Recent advances in natural food preservatives: a sustainable solution for food safety and shelf-life extension. *Journal of Food Measurement and Characterization*, *19*, 293-315.
19.Alam, M. W., Saravanan, P., Al-Sowayan, N. S., Almutairi, H. H., Rosaiah, P., Prakash, N. G., & Ko, T. J. (2025). Polysaccharides and proteins based edible coatings for food protection: classification, properties, & public demands (2020–2024). *Journal of Food Measurement and Characterization*, 1-24.
20.Nie, X., Zuo, Z., Zhang, R., Luo, S., Chi, Y., Yuan, X., ... & Wu, Y. (2025). New advances in biological preservation technology for aquatic products. *npj Science of Food*, *9*(1), 15.

# जनवरी - मार्च -2025

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh (RESEARCH ARETE JOURNAL)

त्रैमासिक ऑनलाइन पत्रिका - 'शोध उत्कर्ष'